

उजाले उनकी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में जिन्दगी की शाम हो जाये



मौलाना नज्मुद्दीन क़िदवाई मरहूम



मौलाना अब्दुसलाम नदवी क़िदवाई मरहूम

साहब नुमा

मदरसा के असातजा व तलबा की जानिब से अहले वतन को एक अनमोल तोहफा

Madrasa Salam Oriental College

Thulendi, Bachharawan, Raebareli

2014-15

साह गुमा

मदरसा के असातजा व तलबा की जानिब से अहले वतन को एक अनमोल तोहफा

सरपरस्त

डॉ० बिलाल अहमद

सदर सोसाइटी

मुदीर—ए—आला
डॉ० मौ० मुस्लिम किदवई
मैनेजर मदरसा

नायब मुदीर

अहमद मुजीब प्रिंसिपल मदरसा

अहमद फेजी सीनियर उस्ताद

हैदर अली सीनियर उस्ताद

फ़िहरिस्त

क्र०	मजमून	पेज न०
1	तराना मदरसा	4
2	सदर के कलम से	सदर 5
3	संदेश	डी०एम०ओ० 6
4	संदेश	प्रधानाचार्य 7
5	संदेश	मैनेजर 11
6	हजरत मौलाना अलाउद्दीन का इंतेकाल	अहदम फैजी - अध्यापक 12
7	हमारा सालाना जलसा	सैयद सुहैल हसनी - अध्यापक 13
8	दुनिया का अजीम तोहफा: वालिदैन	हैदर अली नदवी - अध्यापक 14
9	जैसा सोचोगे वैसे बनोगे	अहमद मुजीब - प्रधानाचार्य 15
10	दुनिया का मिसाली कायद व मिसाली रहनुमा	सबीहा परवीन - अध्यापक 18
11	फैशन और की फितरी जरूरत है	मो० सईम - अध्यापक 20
12	इल्म इंसान को संवारता है	नसीम अकरम - अध्यापक 21
13	बड़ों का अदब व बात चीत का तरीका	रैहाना बेगम - अध्यापक 22
14	बानिये मदरसा	शमशाद अली - अध्यापक 23
15	विद्यार्थियों के लिये	मो० रेहान - अध्यापक 23
16	न हंसो तो जानें	24
17	पसंदीदा अशआर	28
18	ईमान की जड़ एक खुदा पर यकीन	मो० गुफरान 29
19	ऐ खुदा ऐ खुदा	29
21	हमारा स्कूल	रुशदा फात्मा अंसारी 30
22	जब कोई किसी की नकल उतार कर.....	31
23	मेरा मदरसा	सुहैला बानों 31
24	कविता-मेरे मम्मी पापा	कुमारी संजना 31

25 बिल्ली खाला की शादी	शगुफता बानो	31
26 मेवे का गोदाम		31
27 पसंदीदा शाइरी	अकरम रजा	32
28 बद नियती का नतीजा—सच्ची कहानी कुरआन की जुबानी	सादिया बानो	32
30 पांच चीजों को भूल कर.....		33
31 दुआ भी सोच समझ कर मांगनी चाहिये	सुरय्या बानो	33
32 डॉक्टर साहब से मेरी पहली मुलाकात	दरखशां हयात	34
33 जीनव के रंग त्योहारों के संग	कल्पना मौर्या	37
34 मौजा थुलेण्डी की उभरती शख्सियत	सना परवीन	38
35 तास्सुरात	हिना परवीन	39
36 तास्सुरात	राफिया परवीन	40
37 मुहरमुल हराम की फजीलत	राफिया परवीन	41
38 इल्म एक रौशनी और जिहालत तारीकी है	सालिहा परवीन	42
39 चुगलखोर जन्नत में दाखिल न होगा	शाफिआ खातून	43
40 गुफा का राज	खुशनुमा	44
41 हमारे देश पर प्रकृति क वरदान	मो0 कलीम	45
42 ईमानदार चोर	सना परवीन	46
43 फकीरी नुस्खा		47
44 बीरबल की चतुराई		48
45 जकात का समाजी पहलू	शमा बानो	49
46 मेहनत का फल	आयशा अजीज	49
47 ज्ञान की बातें	पूजा कुमारी	50
48 जादूगर ईमान ले आये	परवीन बानो	50
49 गीबत	मैमूना खातून स0अ0	51
50 कंजूल बुढ़िया और सैनिक		52
51 क्या आप जानते हैं फलों का बादशाह कौन है	वाफिया	53

52 रीछ (भालू)		53
53 समझदार किसान ने समझाया.....	शबीना बानो	53
55 आलूराम जैसे मत बनो		54
56 ऊंचे लोगों की ऊंची बात	रुमा परवीन	54
57 तौहीद पर ईमान ही सच्चा ईमान है	अफसाना बानो	55
58 शौतान की चाल	हिना बानो	56
60 सदविचार	शगुफता अजीज	58
61 कम्प्यूटर		59
62 जैसी मेहनत वैसा फल	शहनाज	59
63 विज्ञान की पहेलियां	मो0 आसिफ	59
64 अल्लाह की किताबें	सौबिया खातून	60
65 नबी करीम की प्यारी बातें	मंतशा	61
67 मक्खीचूस गीदड़	पिंकी	62
68 मिसवाक के अहमियत		63
69 क्या आप जानते हैं बिजली क्यों गिरती है		64
70 ढोंगी बिल्ला	सलोनी रावत	64
71 नहीं चींटी	कल्पन मोर्या	65
72 कसम का गलत इस्तेमाल.....	उजमा	66
73 दशम न्याय	अब्दुल वहाब	66
74 उस्ताद का अदब	नाजिया बानो	67
75 बच्चो चलो मदरसे	अफरोज बानो	67

तराना मदरसा

ऐ मदरसा सलाम, ऐ मदरसा सलाम
इल्म की रौशनी है मदरसा सलाम
है दिलों में हमारे तेरा एहताराम
इल्मी दुनिया में हो तेरा आला मकाम
ऐ मदरसा सलाम ऐ मदरसा सलाम

इल्म की रौशनी का तू मरकज बने
कौम का तू सदा यूँ ही रहबर रने
कारवां इल्म का यूँ ही चलता रहे
फैज हासिल करें तुझ से हर खास व आम
ऐ मदरसा सलाम ऐ मदरसा सलाम

है दिलों में हमारे तेरा एहताराम
मशअलें इल्म की अब यहाँ से जलें
जुल्मतें जिनके दम न बाकी रहें
तेरे दामन में हम सब को खुशियां मिलें
होए रौशन थुलेण्डी का दुनिया में नाम
ऐ मदरसा सलाम ऐ मदरसा सलाम

है दिलों में हमारे तेरा एहताराम
तूने इल्म व अदब से सजाया हमें
और तारीकियों से बचाया हमें
प्यार से तू ने रहना सिखाया हमें
ताकयामत रहे यूँ ही तेरा कयाम
ऐ मदरसा सलाम ऐ मदरसा सलाम

है दिलों में हमारे तेरा एहताराम
हिन्दू मुस्लिम की आंखों का तारा है तू

इल्म का एक रौशन मनारा है तू
इल्म की रौशनी का सहारा है तू
सब कुछ हाजिर है तेरे लिए ए सलाम
ऐ मदरसा सलाम ऐ मदरसा सलाम

है दिलों में हमारे तेरा एहताराम
ऐ खुदा तू मदरसे को खुशहाल कर
इसकी कलियों को इल्म व हुनर से तू भर
हर बशर को यहाँ के जी किरदार कर
कह रही है यही रूह अब्दुस्सलाम
ऐ मदरसा सलाम ऐ मदरसा सलाम

है दिलों में हमारे तेरा एहताराम
दिल की धड़कन कहे ऐ मदरसा सलाम
मुल्क को हो जरूरत तेरी ऐ सलाम
आज हैदर के दिल से यह निकला कलाम
जामिया अब बने यह मदरसा सलाम

ऐ मदरसा सलाम ऐ मदरसा सलाम
है दिलों में हमारे तेरा एहताराम

हैदर अली नदवी

सदर के कलम से

पै ग़ा म

मोहतरम मैनेजर साहब अजीज असातिजा व तलबा तालिबात! अस्सलामुअलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

ये जान कर बड़ी खुशी हुई कि "राहनुमा" का दूसरा शुमारा मंजरे आम पर आ रहा है। इस की इशाअत पर मैं तहेदिल से मैनेजर साहब डॉ० मुस्लिम किदवई असातिजा और तलबा को मुबारकबाद पेश करता हूँ। यह स्कूल हमारे बुजुर्गों मौलाना अबदुस्सलाम किदवई नदवी साहब, मौलाना अबुलहसन नदवी साहब, मौलाना नजमुद्दीन साहब, मोलवी एहतिशाम अली साहब, कल्लू हाफिज जी, मौलवी पीर अली साहब और अहमद अली साहब की आरजुओं का मरकज है जिसे उन्होंने अपनी काविशों से एक छोटे से चबूतरे पर कायम करके इसके रौशन मुस्तकबिल की तमन्ना की थी। यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी की बात है जिसे पूरा करना अब हमारा और आपका फर्ज है। हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह हमें ताकत दे और हिम्मद व हौसला अता फरमाये कि हम उनकी ख्वाहिशात को अमली जामा पहना सकें।

अल्लाह का फज्जल है कि यह नन्हा सा पौधा जिसे हमारे बुजुर्गों ने लगाया था अब दरख्त बन चुका है और फल देने लगा है। मुझे कवी उम्मीद है कि इन्शाअल्लाह जल्द ही यह तनावर व समरदार दरख्त बन

जायेगा। और इससे फैज पाकर हमारे बच्चे दुनिया के कोने-2 में पहुंच कर अपने स्कूल का नाम रौशन करेंगे।

स्कूल का मैगजीन स्कूल की अमली अदबी सकाफती सरगर्मियों का आइना होती है। बच्चो आपको इसमें ज्यादा से ज्यादा हिस्सा लेना चाहिये ताकि कहानियों, मजामीन, लतीफों और नज्मों वगैरह के जरिये आपकी छुपी हुई सलाहियतें उभर कर सामने आयें। और आपके लिखने की सलाहियत में मजीद इजाफा हो सके। यकीनन मुस्तकबिल के राहनुमा आप ही होंगे और आप ही मुल्क के मेमार होंगे। कोई शायर कोई डाक्टर कोई इंजीनियर होगा। मेरी अल्लाह से दुआ है कि आप आइन्दा जिंदगी में एक अच्छे इंसान जिम्मेदार शहरी और बा अमल मुसलमान बन कर एक मिसाली किरदार के हामिल हों और अपने बुजुर्गों, वालिदैन और असातिजा के ख्वाबों की ताबीर बन जायें। और इल्म की रोशनी से दुनिया को मुनव्वर कर दें।

करिया करिया रोशनी फैले अनीस
मिस्ले शमा कू ब कू जलते रहो
एक बार फिर मुबारकबाद

बिलाल अहमद





सन्देश

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हो रही है कि मदरसा सलाम ओरियण्टल कालेज थुलेण्डी रायबरेली की द्वितीय वार्षिक पत्रिका राहनुमा प्रकाशित हो रही है। मैं पत्रिका में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों को बधाई देती हूँ कि आप लोगों ने एक रचनात्मक कार्य का शुभारंभ करके समाज को विशेषकर शिक्षित वर्ग को एक नई दिशा दी है। मैं मदरसा सलाम ओरियण्टल कालेज थुलेण्डी के इस रचनात्मक कार्य की सराहना करती हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि उक्त पत्रिका छात्रों तथा पाठकों का मार्गदर्शन करने में सहायक एवं लाभप्रद सिद्ध होगी। पत्रिका में सम्मिलित लेख, कवितायें, चुटकुले तथा महापुरुषों के कथन छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होंगे।

मैं मदरसे के प्रबंधक प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों को शुभकामनायें प्रस्तुत करती हूँ कि आपने पत्रिका 'राहनुमा' के माध्यम से समाज में एक रचनात्मक कार्य किया है।

भवदीय

(Handwritten signature)

(सुनीता देवी)

जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी
राय बरेली।

अंधेरे को उजाले में बदलना काम है मेरा
जिस दिन से चला हूँ मेरी मजिल पे नजर है

जिहालत दूर हो जाये यही पैगाम है मेरा
मुड कर मेरी आँखों ने मील का पत्थर नहीं देखा

संदेश

प्रबंधक

मदरसा सलाम ओरिएण्टल कॉलेज क़तीत वर्तमान और भविष्य के झाँके में

हजरात कारईन किराम! आज जिस मदरसा सलाम ओरिएण्टल कॉलेज की इल्मी, अदबी, मैगजीन आपके हाथों में है, ये मदरसा कई उतार चढ़ाव से गुजर कर यहां तक पहुंचा है। इसमें अल्लाह की खुसूसी मदद शामिले हाल रही है। मिल्लत के हमददों का तआवुन, खान्दान और गांव के बाशुऊर, इल्म दोस्त हज़रात की ना काबिले फरामोश खिदमात, उनकी फिक्रें, उनकी कोशिशें और अथक प्रयास कदम कदम पर मादरे इल्मी का साथ देती रहीं जिसका नतीजा है कि आज मदरसा इलाके का एक आला मेयारी इदारा बन कर उभर रहा है और बिला तफरीक मजहब व मिल्लत सभी की इल्मी तशनगी दूर कर रहा है।

मौलाना अब्दुस्सलाम नदवी व मौलाना नज्मुद्दीन और उनके रूफका ने जिस इल्मी शमा को एक निहायत पसमांदा इलाके में रौशन किया था आज वह महरें मुनव्वर बनकर इल्मी दुनिया में अपना एक मुकाम बना चुकी है।

इब्तेदा में इस की बुनियाद मदरसा जियाउल ऊलूम की शकल में मोहम्मद इस्माइल अल्वी के घर के बाहर एक



चबूतरे पर हुई जो लम्बे समय तक इल्मी खिदमात अंजाम देता रहा। वालिद साहब खामोशी से उसकी सरपरसती फरमाते रहे और उसे बराबर तरक्की के रास्ते पर गामजन करने की फिक्रें करते रहे। वालिद साहब के इंतेकाल के बाद मौलाना के रूफका, दोस्तों और गांव के लोगों की यह राय हुई कि मौलाना जिस मकतब को चालीस साल से बाकायदा चलाते रहे और जिस चिराग को रौशन किया है उसे बुझने न दिया जाए बल्कि उसे एक जिन्दा मिशनरी बना दिया जाए जो मौलाना के काम के तसलसुल को आगे बढ़ा सके। हजरात मौलाना सैयद अबुल हसन अली मियां की भी यही राय थी। चुनांचे इसी उद्देश्य को सामने रख कर कस्बा के मुसलमानों और मौलाना मरहूम के दोस्तों, शागिदों ने मौलाना के मिशन को जिन्दा जावेद करने के लिए मौलाना अब्दुस्सलाम किदवई नदवी मेमोरियल सोसाइटी यूपी थुलेण्डी के नाम से पंजीकृत कराई और धीरे धीरे मकतब दर्जा आठ तक पहुंच गया और नदवतुल उलेमा मअहद का निसाब आंशिक

संशोधन के साथ प्रचलित किया गया।

मौलाना अब्दुस्सलाम किदवई नदवी मेमोरियल सोसाइटी की जिम्मेदारी मौलाना नज्मुद्दीन साहब जो काबिल लेक्चरर थे और अब रिटायर हो चुके थे ने संभाल ली। मौलाना नज्मुद्दीन साहब के प्रयासों से मदरसा का इलहाक अरबी फारसी बोर्ड से दर्जा आठ तक हो गया। मैं एक सदस्य के रूप में मौलाना के साथ काम करता रहा। लेकिन मौलाना का साया आतिफत भी तादेर कायम न रहा। तनप्फुस के मर्ज ने आप को ज्यादा अवसर न दिया और आपने दाई-ए-अजल को लब्बैक कह दिया। उनके निधन के बाद सोसाइटी की मजलिसे आम ने सोसाइटी और स्कूल की जिम्मेदारी का बोझ मेरे कंधों पर डाल दिया। छात्रों की बहुतात के आधार पर शिक्षकों की संख्या में इजाफा होता गया जिसके लिए संसाधनों की कमी बाधा बन जाती थी इसलिए सरकारी अनुदान के लिए जिम्मेदारान संघर्ष करते रहे। अब तक हम अपने चमन को अवामी सहयोग से चला रहे थे लेकिन रोज अफजू बढ़ती संख्या और शिक्षकों की संख्या से वित्तीय संकट पैदा होने लगा। अब चिंता थी कि असातिजा की तंख्याह का मसला सरकारी अनुदान से हल हो जाए तो जिम्मेदारान को काफी सुविधा हो लेकिन सरकार से अनुदान लेना कोई आसान काम नहीं था। आखिर बड़ी जद्दोजहद के बाद अल्लाह तआला ने यह मसला भी 2006 में हल फरमा दिया। अब मदरसा शिक्षकों को सरकारी अनुदान प्राप्त है।

मौलाना अब्दुस्सलाम किदवई मरहूम हिन्दू मुस्लिम में समान लोकप्रिय थे पयामे इंसानियत के अमली नमूना थे। हमारी सोसाइटी उनके इस मिशन को आगे बढ़ा रही है और यह हमारे मंसूबों में शामिल

है। हम अपने तालीमी व तर्बियती कार्यक्रम में ऐसे काम भी शामिल करते हैं जो अवामी मफाद के हों तथा जिससे भाई चारगी और सिक्कूलरिज्म को फरोग मिले। और बच्चों के दिलों में बिला तफरीक मजहब व मिल्लत मानव सेवा का जज्बा पैदा हो। हमारे इदारे में बड़ी संख्या में गैर मुस्लिम तलबा भी जेरे तालीम हैं। पेशेवर शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मिनी आई.टी.आई. और कम्प्यूटर का शोबा भी बखूबी अपना काम अंजाम दे रहा है। इसके अलावा उर्दू और अरबी ज़बान व अदब की तरक्की के लिए कौमी कौंसिल बराये फरोग उर्दू ज़बान (NCPUL) उर्दू डिप्लोमा कोर्स भी चलाए जाते हैं जिससे काफी तलबा फायदा उठा रहे हैं।

कौमी कौंसिल बराये फरोग उर्दू ज़बान- भारत सरकार के ज़रिये उर्दू ज़बान की तरवीज व तरक्की के लिये चलाये जा रहे इस प्रोग्राम को भी हम अपने मदरसा में चला रहे हैं। जिस में वह छात्र-छात्राएं जो शुरू में उर्दू नहीं पढ़ सकते या वह हज़रात जो उर्दू से नावाकिफ़ हैं इसी तरह अरबी ज़बान से नावाकिफ़ हैं उनको इन ज़बानों से वाकिफ़ कराने के लिये यह कोर्स हम चला रहे हैं और बाकायदा अलग से इस की क्लास होती है। कामयाब तलबा को डिप्लोमा सर्टिफिकेट दिया जाता है जो कि भारत सरकार से मंजूर शुदा है। इस कोर्स के ज़रिये सैकड़ों मुस्लिम और गैर मुस्लिम तलबा फायदा उठा रहे हैं। इस से जहां एक तरफ़ उर्दू ज़बान का दायरा वसीअ हो रहा है वहीं इस डिप्लोमा के ज़रिये सरकारी नौकरी के भी मौके फ़राहम होते हैं। इसी तरह अरबी डिप्लोमा के ज़रिये अरब मुमालिक में नौकरी करने वाले हज़रात को काफ़ी सहूलत होती है। पेशावराना और औद्योगिक तरक्की के लिये हम मिनी आई.टी.आई.

और कम्प्यूटर की तालीम भी दे रहे हैं ताकि हमारे तलबा विभिन्न औद्योगिक संस्थानों में काम करके अपनी जिन्दगी के मेयार को बलन्द करने के लायक बन सकें। इस के लिये हमने अपने मदरसा में शोबा मिनी आई.टी.आई. और शोबा कम्प्यूटर खोला है जहां मुलत्तका कोर्स के काबिल असातिजा बाकायदा बच्चों को थ्योरी और प्रेक्टिकल तालीम देते हैं। अल्लाह का फज़ल है काफी बच्चे इस कोर्स से फायदा उठा रहे हैं। कुछ नौकरी भी पा चुके हैं। इस तरह हमारा यह शोबा पेशावराना तालीम को आगे बढ़ा रहा है।

मुस्लिम अल्पसंख्यकों की धार्मिक, दुनियावी, औद्योगिक व पेशावराना शिक्षा के लिए हम फिक्रमंद हैं।

छात्रों के लिए ऐसे दारुल इकामा का कयाम जहां मजहबी व तहजीबी माहौल में तलबा रह सकें।

राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करने के लिए संसाधनों की खोज, स्टडी सर्किल का गठन, दारुल मुताला का कयाम, तालीमे निसवां और पिछड़े बच्चों के शिक्षण-शिक्षण की चिंता हमारे मंसूबों में शामिल है। अल्लाह से दुआ है कि हमारे इन फलाही मंसूबों को पायए तकमील तक पहुँचाए।

बच्चों के तर्बियती प्रोग्राम

बच्चों की सर्वांगीण विकास के लिए मदरसा में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम समय समय पर आयोजित किए जाते हैं जो निम्न हैं—

जलसाए सीरतुन्नबी — दुनिया की वह महान हस्ती जिसने अपने तेइस वर्षीय दावती दौर में एक इंकलाब बरपा कर दिया और रूश्द व हिदायत, इस्लाहे मुआशरा, अखुव्वत व भाई चारगी इंसान दोस्ती, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सामाजिक जीवन का वह आला नमूना

पेश किया जिसकी तर्बियत से इंसानी समाज की तमाम बुराइयां खत्म हो गईं। बुराइयों, कत्ल व गारत गरी के खूगार प्यार और नेकी का पैकर बन गए। गोया— “खुद न थे जो राह पर औरों के हादी बन गए” का अमली नमूना बन गए। इस हस्ती के हालाते जिन्दगी से वाकिफ कराने के लिए सीरतुन्नबी का जलसा करते हैं। जिसमें बच्चों के अंदर खिताबत की सहालियत और अपनी बात रखने का जज्बा पैदा करने के लिए तकरीरी मुकाबला और नात व मंकबत के मुकाबले कराए जाते हैं। जहां बच्चे हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, अरबी भाषाओं में तकारीर में हिस्सा लेते हैं।

वार्षिक सम्मेलन— यह भी हमारा एक कार्यक्रम होता है जिसमें बच्चे विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं जिस में हम अपने विभाग के डीएमओ या और किसी विशेष अतिथि को बुलाते हैं। इस में बच्चे इस्लाही और सबक आमोज नाटक, ड्रमा, गीत, देश भक्ती के तराने, इस्लाही भाई चारगी की तकारीर, चुटकुले, बैत बाजी आदि पेश करते हैं।

बाल मेला— पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के जन्मदिन पर 14 नवम्बर के इस कार्यक्रम के जरिए हम बच्चों में आपसी सहयोग से काम करने और व्यापार के तरीके सिखाते हैं। बच्चे विभिन्न स्टाल कैसे लगायें और मेले में साफ सफाई पर कैसे काबू पाया जाए, खरीद-फरोख्त करने में किस तरह बातचीत की जाए, लाभ मिले तो उसे कैसे वितरित करें ऐसे सभी तर्बियती बातें बाल मेले द्वारा बच्चों को सिखाई जाती हैं।

शैक्षिक यात्रा— हम गांव के बच्चों को शहरी माहौल में ले जाते हैं। जहाँ

मुख्तलिफ ऐतिहासिक स्थान दिखाते हैं और उसके बारे में बताते हैं। चिड़ियाघर या कोई पार्क ले जाते हैं। बहुत से बच्चों ने जीवित शेर या बहुत प्रकार के पशु पक्षी नहीं देखे हैं, वहाँ उनको वह चीजें दिखाई जाती हैं। जो स्कूलों में केवल पढ़ी या फोटो में देखा है। उसे वास्तव में देखते हैं।

विदाई समारोह— जूनियर सीनयर के आदाब क्या हैं, फारिग होकर जाने वाले तलबा को जूनियर तलबा किस तरह अलविदा कहें, यह अदाब विदाई पार्टी द्वारा सिखाए जाते हैं।

ईद होली मिलन समारोह— विभिन्न धर्मों के मानने वाले कैसे एक दूसरे की सभाओं में शरीक हों इस समारोह के जरिए हम बच्चों में आपसी तालमेल और भाई चारगी एक दूसरे के साथ सुख दुख में शरीक होकर भारत के महत्वपूर्ण गुण 'अनेकता में एकता' का जज्बा पैदा करते हैं।

इसी प्रकार हम जकात के पैसों से पिछड़े तलबा में स्वैटर आदि भी वितरित करते हैं। इसी तरह हमारा मदरसा हमारा जहती तरक्की के लिये और तलबा के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रतिबद्ध है। हमारी यह साहित्यिक पत्रिका राहनुमा उसी की एक कड़ी है जिसमें हमारे शिक्षकों छात्र-छात्राओं के लेख व फिक्री कोशिशें सामने आती हैं। और छात्रों के अंदर तहरीरी व फिक्री सलाहियत के जौहर उभरते हैं।

जो पत्थर पे पानी पड़े मुत्तसिल तो बे शुब्हा घिस जाए पत्थर की सिल जैसा कि बुजुर्गों ने फरमाया है कि किसी चीज को हासिल करने और किसी

मंजिल पर पहुँचने के लिए लगातार प्रयास किया जाए तो उसमें सफलता जरूर मिलती है। यही मसला हमारी पत्रिका के साथ पेश आया। पहले प्रकाशन के बाद तकरीबन एक साल के अथक प्रयासों के बाद आपकी सेवा में हाजिर है। पत्रिका पढ़ने के बाद आप हजरात अपनी राय जरूर लिखें। ताकि जो खामियाँ रह गई हैं अगले अंक में दूर की जा सकें।

हजरात! किसी संस्था की पत्रिका शिक्षा की ही एक कड़ी है। शिक्षा का शाब्दिक अर्थ सिखाना है, पत्रिका का उद्देश्य भी यही है इल्म को आगे बढ़ाने में किसी शैक्षणिक संस्थान की पत्रिका का उस की सफलता में अहम रोल होता है। और इससे संस्थान के इल्मी मेआर का भी अन्दाजा होता है क्योंकि पत्रिका के जरिए हम अपने विचार दूसरों तक पहुंचाते हैं। बहुत खुशी है कि मदरसा के तलबा व तालिबात ने बड़े जोश व खरोश के साथ इस में भाग लिया है। मैं अपने सदर साहब का बेहद ममनून हूँ जो समय समय पर मदरसा की गतिविधियों की जानकारी लेते रहते हैं। मैं हैदर अली साहब उस्ताद आलिया (कक्षा 10) का बेहद ममनून हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के तैयार करवाने में पहले दिन से ही मेरी मदद की है। श्री मो० अखलाक नदवी साहब का भी आभारी हूँ जिन्होंने उसकी नोक पलक दुरुस्त करके छपवाने में मदद की।

धन्यवाद

डॉ० मुस्लिम किदवई

सदेश



मदरसा सलाम ओरिएण्टल कॉलेज थुलेण्डी रायबरेली की दूसरी पत्रिका राहनुमा के प्रकाशन के अवसर पर मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि यह साहित्यिक पत्रिका अपनी मंजिल की ओर रवां दवां है। समय की कमी और संसाधनों की कमी प्रकाशन में बाधा डालती रही है। लेकिन जिम्मेदारों की मेहनतों और प्रबंधक महोदय की चिंताओं से यह काम आसान हुआ और अल्हमदुलिल्लाह पत्रिका का दूसरा संस्करण प्रकाशन के लिए तयार है। मुझे आशा है कि पत्रिका की महजबी, इल्मी, साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक मजाहिया रचनायें छात्रों के सर्वगीण विकास, आदर्शवाद, धैर्य, नज्म व जब्त देशभक्ति की भावना को बढ़वा देने में सहायक साबित होगी।

राहनुमा के प्रकाशन के अवसर पर एक बार सभी अहले इल्म खुसूसी तौर पर उर्दूदां लोगों के लिए लम्हये फिक्रिया है कि हम अपनी मीठी भाषा उर्दू के लिए क्या कर रहे हैं। समस्या केवल दावा करने से हल नहीं होगा। इसके लिए व्यावहारिक सबूत पेश करना होगा। इसी जरूरत के मद्देनजर हमारी संस्था ने यह व्यावहारिक कदम उठा कर भाषा व अदब की सेवा की यह अदना कोशिश अहले इल्म की खिदमत में पेश की है ताकि हमारे भविष्य की पीढ़ियां इल्म व अदब की इस विरासत

को आगे बढ़ा सकें।

किसी भी संस्था का रिसालह एक कागज की किताब न होकर इस संस्था का मुकम्मल आईना हुआ करती है। जिसमें हर तरह की इल्मी अदबी फिक्री, तरबियती सरगर्मियां नजर आती हैं। इदारे का खादिम होने के नाते मुझे अपने तलबा व तालिबात से यही कहना है कि आला से आला दर्जे के हुसूल इल्म को अपनी जिन्दगी का मकसद बनाएँ और अपने खानदान कौम व मुल्क के लिए मुफीद व्यक्ति साबित हों।

आज जरूरत है कि तलबा रस्मी तालीम के साथ साथ तकनीकी शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दें। ताकि वह स्वावलम्बी बनकर समाज में अपना स्थान बना सकें। हम शिक्षकों का कर्तव्य है कि हमेशा अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहें और पूरी ईमानदारी से उसका निर्वाहन करें।

राहनुमा के दूसरे प्रकाशन के अवसर पर सभी शिक्षकों, कर्मचारियों, तलबा तालिबात को बधाई देता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और बारगाहे इलाही में दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला हम सब को अपने जायज मकासिद में कामियाब फरमाये और इदारा को तरक्की की राह पर गामजन फरमाये।

अहमद मुजीब

प्रधानाचार्य

हजरत मौलाना अलाउद्दीन नदवी का इत्तेकाल

हजरत मौलाना अलाउद्दीन साहब नदवी मौजा थुलेण्डी के एक मारुफ शख्स और हरदल अजीज इंसान थे। आप हमारे बेहद मुशफिक दोस्त थे। मेरा उनसे व्यक्तिगत लगाव था। इसलिए उनके शब व रोज से अच्छी तरह परिचित था।

मौलाना बड़े फराख दिल, साहबे अखलाक और हमदर्दी का पैकर थे। हर एक के काम आना हर एक की परेशानी को अपनी जाती परेशानी मानते थे और यहां तक संभव हो उसे दूर करने की कोशिश करते। आपकी निःस्वार्थ खिदमत की बिना पर थुलेण्डी वालों ने आप को अपने गांव का प्रधान चुना। प्रारंभिक शिक्षा मदरसा जियाउल इस्लाम जो अब मदरसा सलाम ओरिएंटल कॉलेज के नाम से जाना जाता है अध्ययन और बाद में आला शिक्षा के लिए नदवतुल उलेमा गये और वहाँ से भी तालीम हासिल। शिक्षा प्राप्ति के बाद आप इल्म व अमल की इशाअत के लिए

अपना जीवन समर्पित कर दिया था। मौजा थुलेण्डी और आस पास में कोई इल्मी माहौल नहीं था। जिहालत आम थी। आप कहीं बाहर जाने बजाय गांव में रहकर ही चुपचाप इल्म व अदब और मजहब की खिदमत करना मुनासिब और समय की जरूरत समझी और अपने आप को गांव के हवाले कर दिया। आज मौलाना हालांकि हमारे बीच जिस्मानी रूप से मौजूद नहीं हैं मगर आप की दुआएं अपकी हिदायात, आपकी फिकरें हमारी रहनुमाई करती रहेंगी। हम मदरसा वालों को अफसोस है कि एक मुशफिक व मोहसिन से महरूम हो गया। अल्लाह से दुआ है कि हम सब को इस का बदल अता फरमाये और हजरत वाला को जन्नतुल फिरदौस में आला मकाम अता फरमाये। आमीन।

अहमद फैजी

सहायक अध्यापक
मदरसा सलाम ओरिएंटल कॉलेज, थुलेण्डी।

हमारा सालाना जल्सा एक जायेजा

6 अप्रैल 2013 ई0 बरोज इतवार मदरसा सलाम ओरिएंटल कॉलेज का वार्षिकोत्सव समारोह बड़े धूम धाम के साथ जेरे सदरत आली जानाब बिलाल अहमद साहब आयोजित हुआ। जल्से का आगाज हाफिज सुहैब साहब की तिलावते कलाम पाक से हुआ। इसके बाद बच्चों ने मुख्तलिफ किस्म के रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

सलिहा परवीन कक्षा मुंशी प्रथम ने नात पाक का नजराना पेश किया और नात पाक प्रतियोगिता में अव्वल स्थान प्राप्त किया।

मदरसा सलाम का दिलकश् तराना खुशनुमा और उनकी टीम ने पेश किया।

खुतबा-ए-इस्तिकबालिया मदरसा के सिनियर उस्ताद सैयद सुहैल हसनी नदवी ने पेश किया। इस्तिकबालिया गीत उन्जला, सबा, शीबा महविश, जीनत आसिफा उजमा साबरीन की टीम ने पेश किया (जिसके बोल थे मरहबा मरहबा इस्तिकबाल आपका)

दर्जा अतफाल के बच्चों ने एक गीत अपने दिलकश अंदाज में पेश किया। कक्षा मुंशी अव्वल की छात्रा दरखशाँ हयात ने उर्दू में तकरीर पेश की जिसका उनवान था 'तालीमे निसवां वक्त की अहम जरूरत है'। कक्षा 8 के छात्र सचिन कुमार साहू ने हिंदी में तकरीर पेश किया जिसका उनवान था 'भाई चारगी और समाज' और तकरीरी मुकाबले में प्रथम नम्बर पर रहे। अंग्रेजी तकरीर दर्जा मुंशी अव्वल की अरीबा अजीज ने अपने मखसूस लब व लहजै में पेश किया जिसका उनवान था Education Is Light.

और यह मुकाबले में दूसरे नम्बर पर रहीं। अरबी तकरीर कक्षा 7 की नाजिया ने अरबी लब

व लहजे में पेश किया जिसका उनवान था- 'समय सोने और चाँदी से ज्यादा कीमती है'। एक दिन की सुल्ताना नाटक पेश किया अरीबा और उनके साथियों ने। दूसरा नाटक पेश किया शगुफता वहाब, सालिहा जैनब ने जिसका उनवान था-बहू की विदा।

तीसरा नाटक लालची कुली जिसको पेश किया ओसामा और उनके साथियों ने। फन कव्वाली को ओसामा और उनकी टीम ने पेश किया। जावेद और मुदस्सिर ने चुटकुले पेश किए। कक्षा 7 की नाजिया और साथी ने फलों का मुशायरा पेश कर साइंसी जानकारी दी। माँ के ऊपर एक दिल को छू लेने वाली कविता प्रस्तुत की मोहम्मद लुकमान ने। एक गीत ओसामा और उनके साथियों ने पेश किया जिसका उनवान था 'शिक्षा की ज्योति जलाकर हम आगे बढ़ते जाएंगे।

इसी तरह दर्जा 7 के तल्बा ने तकरीर पेश की। आखिर में सदरे जल्सा ने अपने कीमती ख्यालात पेश किए और अगले साल के कार्यक्रम के लिए दस हजार रुपये जेबे खास से देने का ऐलान फरमाया।

मैनेजर साहब ने अपने मुफीद मशवरों से नवाजा। मदरसा के प्रिंसिपल साहब ने कल्मात तशक्कुर पेश किए। कार्यक्रम का समापन मदरसा के शिक्षक हैदर अली नदवी की दुआ पर हुआ। सभी शुरका ने इफादियत को सराहा और पेश किए जाने वाले कार्यक्रमों की तारीफ की। बच्चों की मेहनत और शिक्षकों की तारीफ की जिनकी रहनुमाई से इतना अच्छा अदबी व सकाफती कार्यक्रम कराना मुमकिन हो सका।

(सुहैल हसनी नदवी, स0अ0 आलिया)

दुनिया का अजीम तोहफा वालिदैन

यह एक हकीकत है कि माता पिता औलाद के हक में खुदा का अनमोल तोहफा और अजीम नेमत हैं। माता पिता बच्चों के लिए प्यार का खजाना हैं जिसका बदल दुनिया में कोई हो नहीं सकता। बच्चों को माँ बाप से बढ़ कर कोई प्यार नहीं दे सकता। माता पिता अपने बच्चों के भविष्य को सजाने संवारने और बेहतर से बेहतर बनाने में हमेशा चिंतित रहते हैं इस के लिये हर तरह की कुर्बानी देने के लिए तैयार रहते हैं। खुद रूखा सूखा खाना, फटे पुराने कपड़े पहनना गवारा लेते हैं लेकिन बच्चों की तालीम व तर्बियत और रौशन मुस्तकबिल पर आंच नहीं आने देते। माँ बाप का हर कदम उनकी हर फिकर बच्चों की बेहतरी, अच्छाई और भले के लिए ही होती है। अगर वह बच्चों पर किसी चीज की पाबंदी भी लगाते हैं तो उसके अंदर भी उनके रौशन मुस्तकबिल और उनकी भलाई का ही राज छिपा होता है। बच्चों के हक में माता पिता की मोहब्बत व शफकत सबसे ज्यादा होती है और वह अपनी पूरी जिन्दगी को औलाद के लिए वक्फ कर देते हैं। हर परेशानी झेल लेते हैं, हर गम को सह लेते हैं। हर मुसीबत को बर्दाशत कर लेते हैं इस उम्मीद और तवक्को पर कि मेराबेटा, बेटी कुछ बन जाये, वह औलाद को नेक और कामयाब देखना चाहते हैं।

औलाद को भी चाहिए कि वह अपने माता पिता के इस सपने को पूरा करें, उनके अरमानों को ना तोड़ें।

लेकिन अफसोस की बात यह है कि आज के तेजी से बदलते हुए हालात ने हमारी नई पीढ़ी की सोच को बदल दिया।

पश्चिमी संस्कृति, तहजीब व सकाफत और टीवी कलचर ने उनके सोचने समझने की सलाहियत पर मनफी असर डाल कर उनके शीराजे को मुनतशिर कर दिया। आजकल के बच्चों को वालिदैन की बात बुरी लगती है। अगर वालिदैन अपने लंबे तजुर्बे के आधार पर रोक टोक या किसी बात की पाबंदी लगाते हैं तो औलाद उसको अपनी तौहीन और बेजा पाबंदी व हक सलबी समझ कर बगावत और नाफरमानी पर उतर आती है।

सितम बालाये, सितम यह कि जिस औलाद के लिए माँ ने रातों की नींद कुर्बान की, खुद गीले में सोई और बच्चे को सूखे में सुलाया, जिस औलाद के रौशन मुस्तकबिल के लिए बाप ने कितने पापड बेले अपने कितने अरमानों को दबाया, अपनी कितनी इच्छाओं को कुरबान किया वही औलाद माता पिता के साथ बुरा सुलूक करती है, बात बात पर उनको झिड़कती है, कितने ही बदबखत हैं जो वालिदेन को मारते पीटते और घर से निकालने का जुर्म करते हुये खुदा के गजब से नहीं डरते।

माता पिता की नाफरमानी, नाकद्री और हक तलफी करने वाले अपनी इस हरकत से बाज आजायें। वह याद रखें कि अल्लाह के हुक्क के बाद सबसे बड़ा हक माँ बाप का है। माँ की नाकद्री और नाफरमानी करने वाला मरने से पहले पहले उसकी सजा भुगत कर ही मरेगा। औलाद अगर पूरी जिन्दगी माँ बाप की सेवा करती रहे तब भी वह उन का थोड़ा सा भी हक अदा नहीं कर सकती।

हमारी जिम्मेदारी है कि हम बड़े होकर अपने पैरों पर खड़े होकर अपने माता पिता

के लिए कुछ करें। उन को राजी व खुश करने की पूरी कोशिश करें। उनके काम आएँ, अपनी कमाई का कुछ हिस्सा उनके लिए खास करें। किसी बुजुर्ग का कोल है माँ बाप को सताने वाला न तो दुनिया में चैन व सकून पाता है और न आखिरत में उसकी माफी होगी।

जिसके माता पिता उससे नाराज हैं उसका खात्मा ईमान पर होना मुश्किल है।

अल्लाह पाक ने जहां अपनी इबादत का हुक्म दिया वहीं वालिदेन के साथ अच्छा बरताव करने का भी आदेश दिया। इसलिए इरशादे खुदावन्दी है 'व बिलवालिदेनि इहसाना', ऐ लोगो अपने माता पिता के साथ अच्छा सुलूक करो।

माता पिता जब बूढ़े हो जाएँ तो खास तौर से उनकी इताअत करना उनकी सेवा करना जरूरी हो जाता है। यहां तक कि उनकी बेतुकी बातों को बरदाशत करना चाहिए। अल्लाह ने कहा है कि अगर वह बुढ़ापे को पहुँच जाएं (और इस उम्र में अकल में फुतूर हो ही जाता है) और कोई नागवार बात कह दें तो तुम अपनी पेशानी पर बल न लाओ और उन्हें कुछ न कहो तब तुम अपना बचपन याद कर लिया करो कि इस उम्र में क्या क्या हरकतें करते थे। बिस्तर पर पेशाब कर दिया कपड़े खराब कर दिए लेकिन माँ सब बरदाशत कर लेती थी। साफ करके फिर गले लगा लेती थी। बाप प्यार करता था। प्यारे नबी ने कहा अल्लाह की रजामंदी बाप की रजामंदी में है। जन्नत माँ के कदमों में है। हर धर्म में माँ बाप का मरतबा बड़ा बताया गया है। इस लिए हर औलाद को इस का लिहाज रखना चाहिए। ताकि दुनिया व आखिरत खराब न हो।

सारांश यह है कि माता पिता अल्लाह की नेमतों में सबसे बड़ी नेमत हैं। हमें हर हाल में उनकी कद्र करनी चाहिए। अगर

वालिदेन दुनिया से जा चुके हैं तो उनके हक में ईसाले सवाब और मगफिरत की दुआ करते रहना चाहिए।

वालिदेन की नाकद्री से लोगों बचा करो हर आन उनकी शौक से खिदमत किया करो अल्लाह होगा राजी और रसूल होंगे खुश खूब अपने माँ बाप की इताअत किया करो।

हैदर अली नदवी

स० अ० आलिया

मुफीद और कारआमद बातें

खैरात माल में इजाफा करती है।

एहसान दुश्मन को भी जैर कर लेता है।

हकीकत यकीन की माँ है।

मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन नफ्स है।

खामोशी फुजूलगोई से बेहतर है।

दिल की सफाई सबसे बड़ी खूबसूरती है।

दुनिया एक बैंक है। तुम को इस में से वही चीज मिलेगी जो तम ने जमा की होगी।

शांति चाहते हो तो अपने कान और आंख का इस्तेमाल करो लेकिन जबान बंद रखो।

बीमारी घोड़े की गति से आती है और चींटी की गति से जाती है।

सच बोलने वाला दुश्मन झूठ बोलने वाले दोस्त से अच्छा है।

दूसरों की गलतियों को भूल जाओ और अपनी एक न भूलना।

जबान हालांकि तलवार नहीं है लेकिन तलवार से अधिक तेज है।

जो शख्स यह चाहता कि उसका जीवन आराम से गुजरे उसे चाहिए वह अपने दिल से लालच निकाल दे।

खुदा के बन्दों में वही व्यक्ति पसंदीदा है जो दूसरों को मुहब्बत की नजर से देखता है।

सकारात्मक सोच मनुष्य के विकास में सहायक होती है

जैसा सोचोगे वैसे बनोगे

इंसानी जिन्दगी की तखलीक का सबसे बड़ा मकसद हुसूले मारिफत है। मारिफत में मारिफत इलाही मारिफत का आला मुकाम है। मारिफत अशिया मारिफत नपस, आदि के मदारिज तय करते करते इंसान बुलन्दी की चोटी पर पहुँच जाता है। लेकिन इन सब खुबियों को हासिल करने में इंसान के की फिक्र का पहलू उसकी सोच का अन्दाज बड़ी अहमियत रखता है। वही उसके जीवन के रहबर और नियम बन जाते हैं। फिर ये उसूल या तो उसे तरक्की की ओर ले जाते हैं या फिर गिरावट की तरफ। सकारात्मक सोच Positive thinking यानी हर एक के बारे अच्छा नजरिया रखना, उसको नफा फायदा, सुख पहुंचाने की फिक्र करना, प्रत्येक की भलाई सोचना, दूसरी की तरक्की से खुश होना, दूसरे को सहारा देना, जरूरत के समय काम आना, खतरों से उसे आगाह करना, किसी की जान माल, इज्जत आबरू की रक्षा करना, एक सकारात्मक सोच वाले शरीफ और नेक इंसान की अलामतें हैं। ऐसे इंसान के दोस्त ज्यादा दुश्मन कम होते हैं। हर एक के मुंह से उसके लिए

दुआइया कलिमात निकलते हैं। ऐसा बंदा अल्लाह का भी महबूब होता है, प्यारे नबी (सल्ल०) का फरमान है सारी मखलूक हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, पारसी जैन सहित अल्लाह का कुन्बा हैं। अल्लाह को वह बंदा अधिक महबूब है जो अल्लाह के कुन्बे के लोगों के साथ अच्छा बतराव करे। सकारात्मक सोच रखने वाला इंसान अल्लाह का और उसके बन्दों का भी प्यारा होता है। कम सामाने जिन्दगी में भी वह सुकून से रहता है। उसके हमदर्द अधिक होते हैं, जो हर हाल में उसका साथ देते हैं।

इसके विपरीत जो लोग नकारात्मक सोच Negative thinking के होते हैं वह नकारात्मक सोच की वजह से अपने प्रति खुद परेशान, बेचैन, चिंतित रहते हैं और अपनी गंदी सोच के कारण दूसरों को भी नुकसान पहुंचाने की फिक्र में रहते हैं। ऐसे कम जरफ इंसान सकारात्मक कार्यों में अपनी तवानाई सर्फ करने के बजाय गम में डुबे रहते हैं कि फलां इस ऊंचे मकाम तक कैसे पहुंच गया। उस को कैसे गिराया जाए। फलां ने इतनी तरक्की क्यों ली? कौन

सी तरकीब अपनाई जाए कि उसकी तरक्की रुक जाए। गरज कि वह हसद और जलन के मोहलिक मर्ज में गिरतार होता है। उसकी सलाहियतें इस का फिकरी असासा सब कुछ नकारात्मक कार्यों में इस्तेमाल होता है। मुल्क व मिल्लत समाज और कौम की फलाह व बहबूद तो दूर की बात है। ऐसा इंसान मानवता के नाम पर बदनूमा दाग साबित होता है। इसलिए अल्लाह ने कुरआन में इसकी शनाअत का जिक्र करते हुए फरमाया —आपस में एक दूसरे से हसद मत रखो और एक दूसरे से बुग्ज न करो, गीबत मत करो।

कुरआन ने एक सालेह और साफ सुथरा समाज बनाने और आपसी भाई चारगी को मजबूत करने तथा अमन व सुकून की जिन्दगी जीने के कीमती उसूल इस आयत करीमा के जरिये हम को बताए हैं। पढ़े लिखे और शिक्षित वर्ग से यही उम्मीद की जाती है कि वे खूबियों का मजहर बने और अपनी अमली और साथ सुथरी जिन्दगी के साथ समाज के सुधार का काम करे। इंसान अपनी नकारात्मक सोच से किसी का बिगाड़ कुछ नहीं सकता, खालिके कयनात ने जिसके बारे जो फैसला कर दिया है वह कोई बदल नहीं सकता तो हमारे जलने या चाहने से हमारा ही नुकसान होगा। हासिद खुद हसद की

आग में जलता है और यह सब परिणाम होता इंसान की नकारात्मक सोच का। ऐसे इंसान से सब नफरत करने लगते हैं। कोई भी अपना साथी और दोस्त बनाना पसंद नहीं करता। कोई मुसीबत में उसका साथ नहीं देता। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी सोच को सकारात्मक बनाए ताकि अल्लाह के बंदे की नजर में महबूब व महमूद बना रहे। खुद भी पुरसकून रहे और लोगों को भी सकून पहुंचाए। आमीन॥

फिकर मुस्बत होगी जिसकी उसको मिलेगा आराम
फिकर मन्फी छीन लेगी दोस्तो अमन व सुकून

अहमद मुजीब

प्रिसिपल मदरसा सलाम

☆☆☆☆

जो कुछ भी तुम्हें नुकसान हो उस पर तुम दिल शिकस्ता न हो और जो कुछ अल्लाह तुम्हें अता फरमाए उसपर फूल न जाओ। अल्लाह ऐसे लोगों को पसंद नहीं करता जो अपने आपको बड़ी चीज समझते हैं और फख्र जताते हैं। (सूर: हदीद— 23)

दुनिया का

मिशाली कायद और मिशाली रहनुमा

मित्रों और मेरे बुजुर्गों! आज हम जिस घुटन भरे, आतंकित और जंगी माहौल में सांस ले रहे हैं, ऐसे माहौल में पुरसुकून जिन्दगी बसर कर सकना बहुत मुश्किल है। कई बार मन में यह सवाल बार बार उठता है कि कब वह समय आएगा जब पृथ्वी पर हर इन्सान चैन से जी सकेगा, साथ ही हम अपने आप से यह सवाल करते हैं कि कौन ऐसा माहिरे फन शख्स था जिस ने समाज की बदहाली को बेहतरी में तबदील कर दिया, लेकिन अस्ल सवाल यह है कि क्या हम उस शख्स के दिए हुए तोहफे को महफूज रख पाए।

खातिमुल अम्बिया

अगर हम खातिमुल अम्बिया, सभी नबियों में अब्वल, हजरत अब्दुल्ला के नूरे नजर, हजरत आमना के जिगर के टुकड़े, हजरत मुहम्मद (सल्ल0) के जीवन के कुछ हिस्सों पर नजर डालें तो हमें कुछ सबक जरूर मिलेगा। हमारे नबी हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ही मेरी नजर में दुनिया की वह अजीम तरीन हस्ती हैं जिन्होंने समाज की बुराइयों को खत्म करने और समाज की बेहतरी के लिए वह नायाब नमूने और कारगुजारियाँ पेश कीं जिन्हें पहले कोई अंजाम नहीं दे सका और मेरा पुख्ता

यकीन है कि ऐसा क्यामत तक भी कोई नहीं कर सकेगा।

हजरत मोहम्मद (सल्ल0) मक्का में 571 हिजरी में पैदा हुए। आपके वालिद हजरत अब्दुल्ला की आपके जन्म से पहले ही मृत्यु हो गई थी और आपके जन्म के बाद आपकी वालिदा का भी इंतकाल हो गया। तब आपके दादा हजरत अब्दुल मुत्तलिब ने आपकी जिम्मेदारी संभाली लेकिन कुछ समय बाद उन्होंने भी आपका साथ छोड़ दिया। उसके बाद आप अपने चचाजान हजरत अबू तालिब के जेरेतर्बियत चले गए। उन्होंने आपकी निहायत शफकत से परवरिश की।

जब आप (सल्ल0) कुछ बड़े हुए तो आप पर आपके घर की जिम्मेदारी आप को घर से बाहर ले गई। तब आप अरबी समाज में फैली बे इन्तेहा बुराइयाँ देखीं। उस समय अरब में यह आलम था कि अरबी अपनी ही बेटियों को सख्त नापसंद करते थे और अपने ही हाथों से उन नन्ही सी जान को मार कर जमीन में दफन कर दिया करते। यह एक नाकाबिले बरदाशत अपराध था। इसके अलावा और भी अपराध आपके सामने आये। लेकिन आप के लिए उन्हें बर्दाशत कर पाना बहुत

मुश्किल था। इसलिए आप लोगों को ऐसे अपराध करने से रोकते। उन्हें मानवता और मानवाधिकार की शिक्षा देने लगे और सच्चे खुदा के पसंदीदा इस्लाम धर्म स्वीकार करने की दावत देने लगे। उस समय अरबी लोग मूर्तियों और आग को पूजा करते थे लेकिन आपकी तालीम हासिल करने के बाद उनमें से अधिकांश लोग मुसलमान हो गए और उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। इस तरह आप ने Superstition का खात्मा किया। इस दौरान गुलामों का यह हाल था कि अगर एक गुलाम को उसका मालिक आवाज देता तो मालिक के गुस्से से भयभीत होकर सारे गुलाम उसके सामने आ खड़े हो जाते। लेकिन आप ने गुलामों की हालत सुधारने के साथ गुलाम और मालिक के बीच इंसानियत का एक नायाब रिश्ता बनाया।

आप ने औलाद की तरफ उनके वालिदैन की जिम्मेदारियां और हुकूक बयान किया और कहा कि बच्चे और बीवी एक आदमी के लिए आजमाइश है जो उनके साथ अच्छा व्यवहार करेगा उसे अल्लाह अजर देगा। आप ने साथ ही साथ बच्चों के अधिकार और जिम्मेदारियां बयान कीं और कहा कि माँ के पैरों के नीचे जन्नत है जो मां की सेवा करेगा उसे जन्नत नसीब होगी और यह भी कहा कि अपने माता पिता के साथ इतनी जोर से न चीखो कि गले रंगें फूल जाएं। आप ने एक इन्सान की दूसरे इन्सान पर

जिम्मेदारियां और अधिकार भी बयान किये और हर इंसान को प्यार और भाईचारे के एक मजबूत रिश्ते में बांध दिया।

आप ने शिक्षा और हुनर को प्राथमिकता दी और फितना व फसाद का खात्मा किया। आप ने Joint Trade को बढ़ावा दिया और कहा कि इस प्रकार के व्यापार में कोई इंसान दूसरे इंसान को नुकसान नहीं पहुँचा सकता। क्योंकि ऐसे व्यापार में खुद उसका फायदा शामिल है। आप ने साइंसी और नए विचार लोगों को पहुँचाए।

आप ने बेशुमार बेमिस्ल और कभी न भुला देने के काबिल इंसानियत के लिए वह कारनामे अंजाम दिए कि एक ही बार में बयान नहीं किया जा सकता। आपके जैसा ना कोई काम कर सका है और न ही कोई कर सकेगा। आपके कारनामों और अजीम शख्सियत ने आपको दुनिया का सबसे बड़ा अजीम समाजी मुसलेह और सबसे बढ़कर रईस दो आलम के तख्त पर आसीन कर दिया और इस बात की पुष्टि अमेरिकन एसोसिएशन द्वारा भी की जा चुकी है जिसने 100 ऐसे मनुष्य को चुना और उनकी सूची बनाई जिन्होंने दुनिया में मानवता के लिए अच्छा काम किया लेकिन हमारे रसूल पाक हजरत मुहम्मद का नाम इस मामले में अब्बल था।

सबीहा

अध्यापिका फौकानिया

फैशन एक औरत की फितरी जरूरत है इस्लाम में इसकी इजाजत है

आज की खातून फैशन की जिस राह पर चल रही है वह मुसलमान खातून के लिये जेबा नहीं देता। मुसलमान खातून को चाहिये जेब व जीनत के वह तरीके अपनाये जो इस्लामी तालीमात के मुताबिक हों, और अल्लाह तआला और उसके रसूल हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को राजी करने वाला हो। हदीस में आया है 'इन्ल्लाह जमीलुन युहिब्बुल जमाल' अल्लाह खुद खूबसूरती का मजहर है और जमाल (खूबसूरती) को पसंद करता है।

इस लिये खातून के लिये यह जानना जरूरी है कि जेब व जीनत के कौन से तरीके शरीअत के खिलाफ हैं और कौन से तरीके शरीअत के मुताबिक हैं, ताकि वह खिलाफे शरा कामों से बचे और शरई हदों में रहते हुये अपने बनाव श्रृंगार कर सके।

नीचे इन्हीं तरीकों को जरा तफसील के साथ जिक्र किया जाता है। हमारी खातीन इन को गौर से पढ़ें और उसके मुताबित अमल करने की कोशिश करें। उसी में आपकी दीन व दुनया दोनों जहान की बेहतरी और कामयाबी है।

फैशन की हद (सीमा)

खातून को जेब व जीनत से संबंधित तीन बातें बुनियादी तौर पर जहन में रखना चाहिये—

जिन कामों को शरीअत में कतई तौर पर मनाही है उसे करना किसी सूरत में भी औरत के लिये जाइज नहीं चाहे शौहर हो या कोई ओर उनको करने के लिये कहे या न करने की सूरत में वह उससे नाराज हो जाये। क्योंकि हदीस शरीफ में आया है कि मख्लूक की इताअत खालिक का नाराजगी में जायज नहीं।

जो काम शरई हदों में है और जायज दर्जे में है उसमें हस्बे वुस्अत शौहर की मुकम्मल इताअत करना औरत के जिम्मे है।

हदीस में आया है कि "अगर मैं किसी को किसी के लिये सज्दा करने का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर के लिये सज्दा करे।"

दूसरी हदीस में आया है कि "अगर कोई आदमी अपनी बीवी को हुक्म दे कि सुर्ख (लाल) पहाड़ से पत्थर उठाकर काले पहाड़ और काले पहाड़ से पत्थर उठाकर सुर्ख पहाड़ पर ले जाये तो उसे यही करना चाहिये।

औरत शरई सीमाओं में रहकर जो कुछ बनाव श्रृंगार करे उस का मकसद शौहर को खुश करना हो न कि दूसरी औरतों और नामहरम मर्दों को दिखाना या इतराना हो। अगर शौहर को खुश करने के लिये बनाव श्रृंगार करेंगी तो इन्शाअल्लाह उस पर उसको सवाब मिलेगा, चाहे दूसरी औरतें उसे देख कर खुश हों या नाराज।

अधिक बनाव—श्रृंगार शरअन पसन्दीदा नहीं—

याद रखें! ज्यादा बन ठन कर रहना शरीअत में पसन्द नहीं है। शौहर वाली औरत जरूर श्रृंगार करले यह ठीक है लेकिन बनाव श्रृंगार को एक आदत बना लेना और तरह-तरह के तरीके उसके लिये सोचना और उसके लिये भिन्न भिन्न प्रकार की चीजें खरीदना और जहन को हर वक्त उस में उलझाये रखना मोमिन के मिजाज के खिलाफ है। जिसको नेक आमाल और उच्छे व्यवहार के साथ रहना है उनके पास इतनी फुर्सत नहीं कि बनाव श्रृंगार और गैर जरूरी सजावट में वक्त और पैसा बरबाद करें।

मो० सईम

अध्यापक तहतानिया (प्राइमरी)

इल्म इंसान को संवारता है

इल्म कुदरत का अनमोल तोहफा है जो इंसान को फिक्री तौर पर सजा संवार कर उसे समाज व कौम व पूरी इंसानियत के लिये मुफीद बनाता है। इंसानी जिंदगी की फितरत में खैर व शर (अच्छाई और बुराई) दोनों का माददा रखा गया है। और इंसान को वक्ती अख्तियार दिया गया है कि वह चाहे तो इल्म की रोशनी में अपने आप को बहीमियत और जानवरपन से निकाल कर मलकूती सिफात में अपने को ढाल कर अच्छा इंसान बने और चाहे तो इल्म से दूर रह कर अपने अंदर हैवानियत गंवारपन का ऐब बढाकर खुद अपना और समाज का दुश्मन बन जाये।

इल्म ही वह खजाना है जो इंसान के अन्दर की फिक्र व सोच को सही रूख पर डाल कर कुदसी सिफात का पैकर बना कर उसे आला सेआला मुकाम तक पहुंचा देता है। इंसानी ढांचा तो केवल आग, पानी, मिट्टी वगैरा की एक मशीन है इसकी रूह अस्ल है। इसकी सोच और फिक्र उसके जिस्मानी हिस्सों हाथ पैर कान आंख वगैरह से काम लेती है। इस लिये इंसान की सोच का अच्छा होना बहुत जरूरी है। और यह बात सिर्फ और सिर्फ इल्म और अच्छे लोगों की सोहबत और तर्बियत से हासिल हो सकती है। इसलिये जब इंसान अन्दर से अच्छा बनता है तो समाज भी अच्छा बनता है जहाँ सबको अमन चैन सुख सुकून मिलता है। लेकिन अगर इंसान ने इल्म से दूरी बनाई या तर्बियत और अच्छे लोगों की सोहबत से अपने इल्म से फायदा नहीं

उठाया तो इंसान बिगडेगा उसकी सोच गलत होगी समाज पर उसका गलत असर पडेगा फिर सि समाजमें ऐसे लोगों की ज्यादाती होगी वह समाज उतना ही बिगड़ता चला जायेगा। इसलिये सभी मजाहिब में तालीम व तरबियत की खास अहमियत है और आज दुनिया के सभी मुल्कों में तालीम की तरफ अहमियत दी जा रही है। इल्म इंसान को जोडता है। इल्म के लिये अमल जरूरी है। इल्म हम कन्ट्रोल करें न कि हम इल्म को अपने हिसाब से चलायें। अगर ऐसा हुआ तो यह बात इंसानियत के लिये नुकसानदेह होगी।

इस्लाम में इल्म पर बहुत जोर दिया गया है। प्यारे आका (सल्ल०) का इर्शाद है कि इल्म हासिल करो चाहे उसके लिये तुम्हें चीन जाना पडे। इस लिये हमारी सबसे अपील है कि इल्म को ज्यादा से ज्यादा सीखें या हासिल करें। इल्म को बढावा दें। अच्छे लोगों की सोहबत में रहकर अपने इल्म से खुद को और मुल्क व कौम को फायदा पहुंचायें।

अल्लाह हम सबको इल्म हासिल करने की तौफीक अता फरमाये।

आमीन

मो० नसीम अकरम
(स०अ० तहतानिया)

बड़ों का अदब और बातचीत का तरीका

तालीम मनुष्य ऐसा जौहर है जो इंसान के तौर-तरीके, रहन-सहन, बात चीत के ढंग को बदल देती है। और शिक्षित आदमी से यह उम्मीद की जाती है कि इस का बात चीत का तरीका चाल ढाल ऐसा हो कि पता चले कि यह पढ़ा लिखा आदमी है। जबान दिल और फिक्र की तर्जुमान होती है। अल्लाह ने कुरआन में फरमाया है "और लोगों से अच्छे ढंग से बात करो"। इस आयत में अल्लाह ने अच्छी समाजी जिन्दगी जीने की पहली बात यह बताई है कि आपस में जब बात की जाए तो अच्छे अन्दाज और अच्छे लहजे में की जाए। लहजा नरम हो बातचीत में सख्ती न आए, अपनी बड़ाई, या माल व दौलत का घमंड बिल्कुल जाहिर न किया जाए जिससे बात की जाए उसके मर्तबे का ख्याल रखा जाए। बड़ों से अदब के साथ छोटों से स्नेह के साथ बात की जाए। ऐसी बात न की जाए जिससे किसी पर ताना जनी हो या उसका अपमान हो। हम सब के हकीकी मुरब्बी आलम के उस्ताद प्यारे आका ने फरमाया— मुसलमान की शान है कि वह न तो ताना देता और न किसी पर लानत भेजता है न बदजुबानी करता है। आपने फरमाया जो अल्लाह तआला और क्यामत के दिन पर यकीन रखता हो वह बोले तो भली बात कहे वरना चुप रहे। अपनी जुबान से किसी का दिल तोड़ना, ठेस पहुंचाना भले लोगों का काम नहीं है। भली बात कहना भी सदका करने की तरह सवाब रखती है। बेहयाई और बेशर्मी की बातों से चुगली गीबत की बातों से बचना चाहिए

इससे और नेकियाँ भी चली जाती हैं।

बात ठहर ठहर की जाए। सभ की तरफ मुतवज्जो हुआ जाए। हंसी मजाक और दिल्लगी की बातों में हद से न बढ़ा जाए। बात बात में चीखना अपनी बड़ाई जाहिर करना, दूसरे को हकीर समझना किसी के मर्तबे को गिराना अच्छे लोगों का सलीका नहीं है। इसलिए पढ़े लिखे लोगों को इस का खास ध्यान रखना चाहिए वरना एक अनपढ़ जाहिल देहाती और पढ़े लिखे में कोई अंतर नहीं रहेगा। इसलिए आदमी कुछ मिनट की बातचीत से ही उसकी बुद्धिमानी या बेवकूफी का अन्दाजा विद्वान लगा लेते हैं। यह बात अच्छी शिक्षा अच्छे लोगों की सोहबत तर्बियत से आती है वरना आदमी शिक्षित होने के बावजूद मूर्ख समझा जाता है। गंदे और बाजारी लोगों की आदतें छूटती नहीं हैं। इसलिए हम सभी को बातचीत के तरीके पर भी ध्यान देना चाहिए। हमारी बातचीत से समाज को फायदा पहुंचे किसी का कलेजा न फटे, किसी की आह व जारी का सबब न बने। अल्लाह ये दुआ है कि हम सब को ऐसा बना दे। आमीन

रेहाना बेगम

नायब मुअल्लिमा

मदरसा सलाम

छात्रों के लिए

1- प्रत्येक विद्यार्थी को विद्यालय के निश्चित समय पर पहुँचना चाहिए।

2- विद्यालय द्वारा निर्धारित ड्रेस (वर्दी) में आना चाहिए।

3- अध्यापक के कक्षा-कक्ष में प्रवेश कर सभी छात्रों को खड़े होकर उसका अभिवादन (सम्मान) करना चाहिए।

4- प्रत्येक छात्र को शिक्षक, माता-पिता तथा बड़ों का सम्मान करना चाहिए।

5- जो विषय-वस्तु विद्यालय में पढ़ाई जाय उसका दोहराव (रीवीज़न) अवश्य करना चाहिए अन्यथा वह विषय-वस्तु याद नहीं रहेगी।

6- कोई विषय-वस्तु समझ में न आ रही हो तो शिक्षक से निःसंकोच खड़े हो कर पूछना चाहिए।

7- विद्यालय में लिखायी गई विषय-वस्तु को जहाँ तक हो सके एक कॉपी पर नहीं करना चाहिए, उसी समय फेयर कॉपी पर कर लेना चाहिए। ऐसा करने से बचे हुये समय को अन्य विषय में लगाना चाहिए।

8- प्रत्येक विषय की कॉपी अलग अलग होनी चाहिए एक ही कॉपी पर सभी विषय नहीं होनी चाहिए।

9- प्रत्येक विषय की अलग अलग कापी होने से परीक्षा के समय विषय वस्तु को याद/अध्ययन करने में आसानी होती है।

10- सभी विषयों को प्रत्येक दिन पढ़ना चाहिए जिससे परीक्षा के नज़दीक आने पर अधिक कठिनाई न हो।

11- परीक्षा के 2-3 घण्टे पहले विषय की पढ़ाई नहीं करनी चाहिए नहीं तो छात्रों को उत्तरों में दुविधा का सामना करना

पड़ेगा इससे बचना चाहिए।

12- जो विषय कठिन लग रहा है उस विषय को 1-2 घण्टे रोज़ 5-6 दिन पढ़ने पर वही विषय आप का सबसे प्रिय विषय बन जायेगा।

13- विद्यालय में कक्षा-कक्ष के अन्दर पढ़ाई के समय किसी प्रकार चुड़ंगम, टाफी, नमकीन, बिस्कुट आदि वस्तुएँ नहीं खानी चाहिए।

14- विद्यालय नहा धो कर तथा साफ कपड़े पहन कर आना चाहिए।

मो० रेहान

शिक्षक, मदरसा सलाम

बानिए मदरसा

जिसने मदरसा की नीव है डाली।

उसकी है हर बात निराली ॥

कौम की है आँखो का तारा।

आप ने कौम को खूब सँवारा ॥

दुनिया का हर काम निराला।

कोई तो है समझाने वाला ॥

देखो थुलेण्डी मदरसा है कैसा।

अहले इल्म चाहते जैसा ॥

मदरसा भी क्या खूब बनाया।

जिसने देखा उसी को है भाया ॥

इल्म की ऐसी हवा चलाई।

पूरी थुलेण्डी पर है छाई ॥

आपने इल्म की प्यास बुझाई।

सब की मेहनत है रंग लाई ॥

मो० शमशाद

अ० आधुनिकीकरण

ब हंशो तो जावे

रामू - यार आज मेरा वजन दो किलो कम हो गया।

देवेन्द्र - जरूर आज तुम नहाए होगे।

☆☆☆☆

दादा जी पोते को कहानी सुनाते हैं: एक धोबी के पास दो गधे थे एक गधे का नाम ढेचू था और दूसरे गधे का नाम 'फिर से बताओ' था।

ढेचू खो गया तो पीछे कौन बचा ?

पोता - फिर से बताओ।

दादा जी - एक धोबी के पास दो गधे थे एक गधे का नाम ढेचू था और दूसरे गधे का नाम फिर से बताओ था ढेचू खो गया तो पीछे कौन बचा ?

पोता - फिर से बताओ।

दादा जी - एक धोबी के पास दो गधे।।।।।।।।

☆☆☆☆

मम्मी मैं आज स्कूल नहीं जाऊंगी क्यों बेटी

मम्मी मास्टर जी को कुछ भी नहीं आता है और वह हर प्रश्न का उत्तर मुझसे ही पूछते हैं।

☆☆☆

माँ एक चवन्नी दे दो क्यों

स्कूल में लेट गया था इसलिए अध्यापक ने चवन्नी दण्ड लगाया है। तुम स्कूल में पढ़ने जाते हो या

लेटने।

☆☆☆☆

टीचर - दिल्ली में कुतुबमिनार है।

(एक छात्र - जो बेंच पर आँख बंद करके लेटा था।)

टीचर: छात्र से। राजू तुम क्या कर रहे हो ?

छात्र - सर। मैं आप की बातें सुन रहा हूँ।

टीचर - अच्छा बताओ मैंने क्या कहा है?

छात्र - यही कि दिल्ली में कुत्ता बीमार है।

आयशा अजीज

कक्षा - 5

☆☆☆☆

आइये आइये कैसे आये ?

बस से।

☆☆☆☆

एक थे मोहन एक थे सोहन।

मोहन ने कहा रामपूर का मेला देखने चलें

सोहन ने कहा- पर वहाँ जाकर क्या खायेंगे?

वही जो रोज़ खाते हैं, धक्के।

☆☆☆☆

एक तोता सड़क पर जा रहा था।

सामने कार आ रही थी। अचानक टक्कर हो गयी। तोते को अस्पताल ले गये और पिंजरे में लेटा दिया तभी उसे होश आया तो बोला आईला मैं जेल में, कार वाला मर गया क्या।

☆☆☆

रामू और श्यामू दोस्त थे।

रामू ने श्यामू से पूछा: यार अकल बड़ी या भैंस।

श्यामू: पहले डेट ऑफ बर्थ तो बता बे।

☆☆☆☆

बाल मनोवैज्ञानिक टेस्ट हो रहे थे

प्रोफेसर ने चूहे के सामने,
एक तरफ केक दूरी तरफ चुहिया रखी
चूहा केक की तरफ लपका
प्रोफेसर ने केक बदल कर रोटी रखी
फिर वह रोटी की तरफ लपका
प्रोफेसर बोले अब समझ गये कि
फूड से बड़ी कोई चीज़ नहीं
तब पीछे सीट पर बैठा लड़का बोला
सर चुहिया बदल कर देखो
शायद ये उसकी बहन हो।

सचिन निर्मल

कक्षा - 5

☆☆☆☆

डॉक्टर संता से— आप की किडनी
फेल हो गयी है।

संता पहले तो बहुत रोया फिर, ऑसू
पोंछते हुए बोला

कितने नंबर से।

☆☆☆☆

शिव जी— मैं तुम्हारी तपस्या से खुश
हुआ भक्त बताओ तुम्हें क्या चाहिए

भक्त— डी०जे० सिस्टम दे दो प्रभु

शिव जी— अगर डी०जे० सिस्टम
होता तो मैं डमरू क्यों बजाता।

☆☆☆☆

टीचर ने बच्चे की कापी में नोट
लिखकर भेजा—

कृपया बच्चे को नहलाकर भेजा करें।

बच्चे की माँ ने लिखकर भेजा—

कृपया बच्चे को पढ़ाया करें सूँघा न करें।

☆☆☆☆

डॉक्टर— गोलू आप का दाँत
निकालना पड़ेगा।

गोलू— पैसे लेंगे क्या?

डॉक्टर— 200 रुपये लेंगे।

गोलू— ये लो 50 रूपय थोड़ा सा
ढीला कर दो। निकाल तो मैं खुद लूंगा।

☆☆☆☆

5— मास्टर जी— सौ के बाद हजार,
हजार के बाद लाख, फिर करोड़ फिर अरब
आता है। अरब के बाद क्या आता है?
विद्यार्थी— अरब के बाद ईरान आता है।

☆☆☆☆

टीचर छात्र से— हमें पेड़ों से होने वाला
कोई एक फायदा बताओ।

छात्र— (खड़ा होकर) पेड़ों से हमें यह
फायदा होता है कि जब हमें चोरी करने की
सज़ा देने के लिए मम्मी डंडी ले कर दौड़ाती
हैं तो हम पेड़ पर चढ़ कर बच जाते हैं।

☆☆☆☆

टीचर छात्र से— बताओ हमें ऑक्सीजन
गैस कहा से मिलती है?

छात्र— टीचर हमें ऑक्सीजन गैस वहाँ
से मिलती है जहाँ से एल. पी. जी. गैस
मिलती है।

☆☆☆☆

बाप बेटे से— बेटे तेरे इक्जाम में कितने
नम्बर आए।

बेटा— सौ में से सौ।

बाप— खुश होकर, अरे वाह सौ में से सौ
नम्बर।

बेटा— हां पापा लेकिन टीचर ने सौ में
दो जीरो तो लगा दिया लेकिन एक लिखना
भूल गयी।

सना परवीन

कक्षा - मुंशी 1

☆☆☆☆

एक साहब को गाना गाने का बड़ा शौक
था। एक दिन वे नदी के किनारे घूम रहे थे
और गा रहे थे महबूबा महबूबा। इतने में वे नदी
में गिर गये और जोर जोर से चिल्लाने लगे— मैं
डूबा मैं डूबा।

☆☆☆☆

पिता जी—संजय क्यों रो रहा है?

संजय— गुरुजी ने मारा है।

पिता— तुमने क्लास में गड़बड़ की होगी।

संजय— नहीं मैं तो क्लास में सो रहा था।

☆☆☆☆

तीन व्यक्ति अपनी तारीफ के पुल बांध रहे थे।

पहला— मैं लखपति हूँ।

दूसरा— मैं करोड़पति हूँ।

तीसरा— मैं अपनी पत्नी का पति हूँ।

☆☆☆☆

एक शराबी सड़क पर जा रहा था अचानक फिसल कर वह कीचड़ में गिर गया। उसी वक्त बिजली चमकी तो शराबी बोला हे भगवान! एक तो पहले ही कीचड़ में गिर गया और अब फोटो भी खींच रहे हो।

☆ मरीज— मैं हर बात जल्दी भूल जाता हूँ, कोई दवाई दीजिये।

डॉ०— एक काम करो पहले तुम मेरी फीस दे दो, कहीं तुम दवाई लेने के बाद पैसे देना भूल जाओ तो।

खुशनुमा, मुंशी ॥

☆☆☆☆

पति सारी रात गायब रहने के बाद जब घर पहुंचे तो पत्नी ने गुस्से से कहा— अब सुबह के सात बजे तुम किस लिये आये हो?

पति ने जवाब दिया— नाश्ता करने के लिये।

☆☆☆☆

ग्राहक: क्या होटल का बावर्ची बदल गया?

मालिक: हां मगर आप को कैसे पता चला?

ग्राहक: पहले खाने में सफेद बाल निकलते थे अब काले निकलते हैं।

☆☆☆☆

एक बच्चा स्कूल से घर आकर एक कोने में जा कर मुर्गा बन जाता है।

मं: बेटा यह क्या कर रहे हो?

बच्चा: अम्मी आप ही ने तो कहा था कि जो काम स्कूल में किया करो वह घर आकर दोहराया करो।

☆☆☆☆

मालिक: (देर से आने पर नाराजगी से नौकर से बोला) उल्लू कहाँ थे?

नौकर: हुजूर घोंसले में।

मालिक: (बिगड़ कर) गधा।

नौकर: हुजूर धोबी के यहाँ।

मालिक: (चिल्लाते हुए) मूर्ख

नौकर: मुझे इस जानवर के घर का पता नहीं मालूम।

☆☆☆☆

विनोद ने पंकज से पूछा— तुम यह कैसे साबित कर सकते हो कि जानवरों की आंखें मनुष्यों से ज्यादा तेज होती हैं?

पंकज ने जवाब दिया— क्या तुम ने कभी किसी जानवर को चश्मा लगाते देखा है?

न्यायाधीश— तुम ने कुछ दिन पहले भी 100 रु चुराये थे।

चार— साहब महंगाई के जमाने में 100 रु कितने दिन चलते हैं।

अलकमा

कक्षा 7

☆☆☆☆

इम्तिहान के पर्चे में आया, साबित करो कि दुनिया गोला है।

लड़के ने लिखा: मौसमी गोल है, सेब भी गोल है, इससे साबित होता है कि दुनिया गोल है।

पर्चा जांचने वाले ने लिखा चश्मा

लगाकर देखो बेटा नम्बर भी गोल है।

बेटा: नहीं मम्मी आज ही ईद है।

मम्मी: नहीं बेटा आज ईद नहीं है।

अच्छे बच्चे ऐसी जिद नहीं करते।

बेटा: नहीं मम्मी आज ही ईद है, ईद आज ही है क्योंकि पिताजी बाजू वाली आन्टी से गले मिल रहे थे।

हिना बानो

कक्षा 7

☆☆☆☆

बुढ़िया (डॉक्टर से)— दांत निकाल दीजिये।

डॉक्टर— मुंह खोलो।

बुढ़िया— लो खोल दिया।

डॉक्टर— और खोलो।

बुढ़िया ने थोड़ा मुंह और खोला।

डॉक्टर— थोड़ा और खोलो।

बुढ़िया ने सारा मुंह उपर कर दिया।

डॉक्टर— थोड़ा और खोलो।

बुढ़िया (क्रोध में)— क्या मुंह में बैठ कर ही दांत निकालने का विचार है।

☆☆☆☆

पप्पू ने कमाल कर दिया। वह बैंक में जाकर सो गया जब उससे पूछा गया तो बोला— मैं ने अख्बार में पढ़ा था कि इस बैंक में सोने पर लोन मिलता है।

☆☆☆☆

टीचर लड़के से— अगर चोर पीछे के दरवाजे से आगया तो तुम क्या करोगे।

लड़का— आई विल डायल 100। वह पुलिस भी पीछे के दरवाजे से आयेगी।

☆☆☆☆

लड़का लड़की से — विदाई के समय लड़कियां रोती क्यों हैं?

लड़की लड़के से— अगर तुझे पता चले

कि शहर से दूर ले जाकर कोई तुझ से बर्तन मंझवायेगा तो क्या तू न रोयेगा।

☆☆☆☆

गुरु— बेटा तुम ने अपने जेब में नीबू क्यों रखा है?

चेला— दुश्मनों के दांत खट्टे करने के लिये।

हाजरा बानो

कक्षा 8

याद रखें

मत मिलो, उनसे जो सिर्फ गरज के लिए मिलते हैं।

मत चलो, उनके साथ जो राहे वफा में धोखा देते हैं।

मत जाओ, ऐसी जगह जहां बुराईयां जन्म लेती हैं।

मत सुनो, ऐसी बात जो जिन्दगी को वीरान करदे।

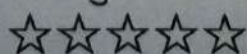
मत खेलो, ऐसे खेल जो रूसवाइयों के सिवा कुछ न हो।

☆☆☆☆

ऐ नबी! नर्मी और दरगुज़र का तरीका एखितयार करो। भलाई की तलकीन किये जाओ और जाहिलों से न उलझो। अगर कभी शैतान तुम्हें उकसाये तो अल्लाह की पनाह मांगो। वह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है। (सूर: आराफ़: 199-200)

पसंदीदा अशआर

अल्लाह मेरे रिज्क की बरकत न चली जाए
दो रोज से घर में कोई मेहमान नहीं है
इंसान जिन्दगी के मेयार बेचकर
दुनिया रईस हो गई ईमान बेचकर
आहट सी कोई आई तो लगता है कि तुम हो
साया कोई लहराये तो लगता है कि तुम हो
अल्लाह अगर तौफीक न दे इंसान के बस का काम नहीं
फैजाने मोहब्बत आम सही इरफाने मोहब्बत आम नहीं
अपने मन में डूब कर पाजा सुरागे जिन्दगी
तू अगर मेरा नहीं बनता ना बन अपना तो बन
बागे जन्नत में मोहम्मद मुसकुराते आएंगे
फूल रहमत के गिरेंगे हम उठाते जाएंगे
पानी पानी कर गयी मुझको कलंदर की ये बात
तू झुका जब गैर के आगे न तन तेरा न मन
तदबीर के दस्ते जरीं से तकदीर दरखशाँ होती है
कुदरत भी मदद फरमाती है जब कोशिशे इंसाँ होती है
जिस खेत से दहकां को मयस्सर न हो रोजी
उस खेत के हर खोशये गंदुम को जलादो
हरम पाक भी अल्लाह भी कुरआन भी एक
क्या बड़ी बात थी होते जो मुसलमान भी एक
खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है?
फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर
मरदे नादां पर कलामे नरम व नाजुक बेअसर
गुलों में रंग भरे बादे नौ बहार चले
चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले



ईमान की जड़ एक खुदा का यकीन है

अगर दो खुदा होते संसार में
तो दोनों बला होते संसार में
खतरनाक होता जमाने का रंग
हुआ करती हर रोज दोनों में जंग
इधर एक कहता कि मेरी सुनो
उधर एक कहता मियाँ चुप रहो
इधर एक कहता कि भाई मरे
रहे आज दुनिया में बारिश रहे
बिगड कर उधर दूसरा बोलता
नहीं आज है धूप का फैसला
खुदा दोनों लड़ते लड़ाते यूँही
शब व रोज फितने उठाते यूँही
जमीं कांपती आसमाँ कांपता
लड़ाई से सारा जहां कांपता
तो दुनिया के ये बहर व बर, खुशक व तर
बहुत जल्द हो जाते जेरो जबर
यह तारे यह तारों के झुरमट में चाँद
बुरी तरह गिर पड़ते हो हो के माँद
न हम होते बच्चों जहां में न तुम
बल्कि सिरे से खुद होता गुम
हकीकत में सब का खुदा एक है
खुदा को जो माने वही नेक है

ऐ खुदा ऐ खुदा

ऐ खुदा ऐ खुदा शुक्र व एहसाँ तेरा
हम को पैदा किया और खाना दिया
ऐ खुदा ऐ खुदा शुक्र व एहसाँ तेरा
और भी तो बहुत हम पे एहसाँ किए
प्यारे प्यारे हमें अब्बा अम्मा दिए
ऐ खुदा ऐ खुदा शुक्र व एहसाँ तेरा
सारा आलम बनाया हमारे लिए
और उसको सजाया हमारे लिए
ऐ खुदा ऐ खुदा शुक्र व एहसाँ तेरा
तूने भेजा नबी जिससे कुरआँ मिला
अच्छी बातें मिलीं दीन ईमाँ मिला
ऐ खुदा ऐ खुदा शुक्र व एहसाँ तेरा
सब बुराई भलाई बता दी हमें
दीन की राह सीधी दिखा दी हमें
है यह मेरी दुआ मेरे अल्लाह मियाँ
रास्ता सीधी चला ऐ मेरे मेहरबाँ

मोहम्मद गुफरान
कक्षा 7

हमारा विद्यालय

शिक्षा जगत का वरदान
मदरसा सलाम महान।
हमको है इस पर अभिमान
हमें बढ़ानी है इसकी शान।

☆☆☆

जिससे मिलता हमको ज्ञान
सदा करना इसका सम्मान
बीता इसमें मेरा बचपन
हुई कभी न किसी से अनबन

☆☆☆☆

पाया यहीं भाषा का ज्ञान
ज्ञान मान और सम्मान
शिक्षा जगत का है वरदान
सभी धर्म हैं एक समान।

☆☆☆☆

यह विद्यालय है बड़ा महान
नहीं है कोई ऐसा संस्थान
मदरसा सलाम है महान।

रुशदा फात्मा
साबिक तालिबा

जब कोई किसी की नकल उतार
कर अपनी असलियत छुपाता है तो
उसका अंजाम क्या होता है— पढ़िए

गघा एक था मोटा ताजा।
बन बैठा जंगल का राजा।।
कही सिंह का चमड़ा पाया।
चट वैसा ही रूप बनाया।।
सबको खूब डराता वन में।
फिरता आप मगन हो मन में।।
वन पशुओं को आँख दिखाता।
सब पर जमकर रौब जमाता।।
चले कपट की कब तक माया।
गघा शेर कब बन पाया।।
कोई गघा कहीं चिल्लाया।
सुन इसने भी कान उठाया।।
लगा रेंकने मुख ऊपर कर।
भेद खुल गया उसका सब पर।।
झट फिर सबने उसको पकड़ा।
बांध के रस्सी उसको जकड़ा।।
देता गघा धोका न भाई।
तो उसकी होती न पिटाई।।

मो० अफज़ल

मेरा मदरसा

मदरसा मेरा जान से प्यारा है।
हम सब की आँखों का तारा है।।
हम सब इसके गुण गाते हैं।
टीचर मन लगाकर पढ़ाते हैं।।
हिन्दी अरबी गणित अंग्रेजी।
हर भाषा की होती है पढ़ाई।।
हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई।
सबको शिक्षा मिले मेरे भाई।।
आओ हम सब इसके गुण गाए।
हम सब मदरसा पढ़ने जाएं।।

सुहैला बानों

कक्षा - 3

कविता

- 1- ऊपर मेवें का गोदाम
नीचे रहते चूहे राम
चोरी करना उनका काम
खाते काजू और बादाम
जब आती है बिल्ली रानी
मर जाती है इनकी नानी।
- 2- सूरज आकर झांक रहा है
बच्चों के मुँह ताक रहा है
बच्चों उठो फ्रेश हो जाओ
बिस्तर छोड़ो और नहाओ
बच्चो अब स्कूल को जाओ
पढ़ने में मन खूब लगाओ।
- 3- काली कोयल बोल रही है
डाल डाल पर डोल रही है
कू-कू कर के गीत सुनाती
कभी कभी मेरे घर आती।
- 4- चूं। चूं। करती चिड़िया आयी
दाना मुँह में भर कर लायी
डाल डाल पर करे बसेरा
खूब चहकती हुआ सवेरा
- 5- एक छोटी सी मोटर के अन्दर
आ बैठे ये भालू बन्दर
कहते हैं मोटर तेज चलाओ
हमको भी ठण्डी हवा खिलाओ।
- 6- बिल्ली मौसी की शादी में
गीत सुनायें बन्दर मामा
रच कर आये खूब ड्रामा
चुनमुन तू क्यों रोता है
तेरा भी तो नेवता है।

शगुफ्ता बानों
कक्षा - मुंशी

एक सच्ची कहानी कुरान की ज़बानी बद नियती का नतीजा

किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसके पास ज़मीन तो ज़्यादा न थी पर उसकी नियत अच्छी थी। उसका नियम था कि जब वह अपने खेत की फसल काटता, बाग़ में से मेवे तोड़ता वह उसमें से आधा भाग खुदा की राह में बाँट देता। उस किसान की यह भी आदत थी कि जब घर में खाना तैयार होता तो उस पके हुए खाने में से आधा खाना गरीबों, भिखारियों, विधवाओं, अनाथों को खिलाकर तब स्वयं खाता उसने कभी अपने दस्तरख्वान पर अकेले खाना नहीं खाया। उसने अपने पूरे जीवन काल में इस नियम का कठोरता से पालन किया। उसके मरने के बाद उसके तीनों पुत्र उसके धन सम्पत्ति के स्वामी हुए। लड़के अपने पिता की भाँति कूँछ समय तक चलते रहे। परन्तु पिता का अनुसरण करना उनके लिए टेढ़ी खीर हो गया। जब फसल तैयार हो गई तो फसल की उपज देख कर मुँह में पानी भर आया। मन में खिचड़ियाँ पकने लगीं। अन्त में उनसे रहा न गया। और एक दूसरे ने अपने अपने विचार प्रकट किये और बाग़ से फल तोड़ने और खेत की फसल काटने का आपस में परामर्श किया। अन्तः यह तय किया कि खेत दिन में काटना ठीक नहीं है। क्योंकि अगर हम ऐसा करेंगे तो निर्धन तथा भिखारी घर लेंगे और आधा या कुछ कम उनको देना पड़ेगा। इसलिए उचित यही है की रातों-रात हमें सारा कार्य कर लेना चाहिए। अपना अन्न और अपने मेवे सबके सब अपने घर भी ले आयेंगे। मांगने वालों को टका सा जवाब भी देना पड़ेगा। साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। इस परामर्श के बाद वह अपने अपने बिस्तरों पर

कुछ देर आराम करने के लिए चले गये। उस रात्रि को इतने ओले गिरे कि उनके खेत और बागात सब बरबाद हो गये। ऐसा मालूम होता था जैसे इस जगह पर कोई वस्तु बोई ही नहीं थी। अब केवल मैदान के सिवा वहां कुछ न था। जब वे किसान अपने खेत और बाग़ की फसल काटने और फल तोड़ने गये तो वहाँ कुछ न पाया। वे बहुत चकित और दुःखित हुए और हाथ मल कर रह गये। आपस में तू-तू मैं-मैं करने लगे। उन्हे खाली हाथ घर लौटना पड़ा। अपने किये हुए पर अधिक लज्जित हुए और तीनों भाईयों ने प्रतिज्ञा की कि अब सदा अपने पिता के पथ पर चलेंगे और जिनका जो अधिकार हमारे पिता के समय में था उसको अवश्य देंगे।

बच्चों:- देखा तुमने नियत का फल मनुष्य को कैसे मिलता है। इस लिए हमको हमेशा अच्छी नियत रखनी चाहिए।

सादिया बानों
कक्षा- मौलवी ॥

पसन्दीदा शायरी

आप की जिन्दगी में कभी ग़म न हो
आप की आँखें कभी नम न हो
आपको मिले जिन्दगी की हर खुशी
भले ही उस खुशी में हम हो न हो।
मिलना था इत्तेफाक़ बिछुड़ना नसीब था
वह आज इतनी दूर हैं कल जितना करीब था।
पाते हैं कुछ गुलाब चट्टानों में परवरिश
आती है पत्थरों से खुशबू कभी- कभी।

अकरम रज़ा

कक्षा - 6

दुआ भी सोच समझ कर मांगनी चाहिये

बहुत दिनों पहले की बात है कि एक मकान में माँ बाप और बेटे रहते थे ये लोग बहुत गरीब थे। ये तीनों कहीं जा रहे थे तभी इन तीनों की मुलाकात मूसा अलैहिस्सलाम से हुई। बाप ने कहा अल्लाह पाक से कह देना कि हम तीनों की एक एक मुराद पूरी हो जाए। जब मूसा अलैहिस्सलाम वहां से वापस आए तो कहा कि तुम तीनों की एक एक मुराद पूरी होगी। ये तीनों अपने घर वापस चले आए। जब सुबह हुई तो बाप ने कहा कि हम नदी से नहा कर हम तीनों दुआ मांगेंगे। बाप नदी में नहाने चला गया तब उसकी बीवी ने नहा धोकर दुआ मांगी कि या खुदा मुझे खूबसूरत शहजादी बना दे उसी वक्त वह खूबसूरत शहजादी बन गयी उधर से एक शहजादा जा रहा था उसकी नजर शहजादी पर पड़ी तब शहजादा ने कहा इतनी खूबसूरत शहजादी इस जंगल में क्या कर रही है शहजादे ने उसको अपने घोड़े पर बैठाया और अपने महल की ओर चल दिया। जब नहा कर बाप वापस आया तो पूछने लगा बेटा तुमहारी माँ कहाँ गयी तो बेटे ने कहा माँ को एक शहजादा ले गया तब बाप ने दुआ मांगी कि मेरी बीवी की सूरत बिल्ली की तरह हो जाए उसकी दुआ कुबूल हुई। जब शहजादा अपने गाँव पहुँचा तो गाँव के लोगों ने कहा देखो शहजादा बिल्ली को बैठा कर लाया है जब शहजादे ने पीछे मुड़कर देखा तो सच में वह बिल्ली बन चुकी थी। शहजादे ने उसको अपने घोड़े से ढकेल दिया वह रोती हुई अपने घर को वापस चल दी। तभी उसके लड़के ने दुआ माँगी या खुदा हम लोग जैसे थे वैसे हो जाएँ। उसकी दुआ कुबूल हुई वो लोग जैसे

थे वैसे हो गए उन तीनों की एक एक मुराद पूरी हो गयी।

दोस्तों ऐसी दुआ न माँगो कि आप का नुकसान हो जाए। ऐसी दुआ माँगो जो दूसरों के काम आ सके।

सुरेय्या बानों
मौलवी-1

पांच चीजों को भूल कर पांच चीजों से प्यार

एक जमाना ऐसा आने वाला है जिसमें लोगों को पांच चीजों से प्यार होगा और पांच चीजों को भुला देंगे।

1- दुनिया से प्यार करेंगे और आखिरत को भुलादेंगे।

2- माल से प्यार करेंगे और हिसाब किताब को भुलादेंगे।

3- मखलूक से प्यार करेंगे और खालिक (पैदा करने वाला) को भुलादेंगे।

4- गुनाह के काम से प्यार करेंगे और तौबा को भुलादेंगे।

5- बड़े महल और कोठियों से प्यार करेंगे और कब्र को भुलादेंगे।

अल्लाह तआला हम सभी मुसलमानों को अपनी और अपने हबीब हजरत मोहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल0) की सच्ची मुहब्बत नसीब करे। आमीन

शहनाज बानो शैख
कक्षा मुंशी ॥

डॉक्टर साहब से मेरी पहली मुलाकात

जीवन में कुछ ऐसे अवसर पेश आते हैं जो इंसान को जिन्दगी से करीबतर कर देते हैं और हमेशा यादगार बन जाते हैं। और जीवन में तबदीली का जरिया बन जाते हैं। मेरी नजरों से 'मदरसा सलाम ओरिएण्टल कालेज थुलेण्डी का रिसाला राह नुमा गुजरा जिस में मौलाना अब्दुस्सलाम साहब नदवी और डाक्टर मुस्लिम किदवई जैसी महत्वपूर्ण हस्तियों का जिक्र था। वैसे तो तमाम हस्तियां जिनके नाम पत्रिका में नुमायाँ हैं महत्वपूर्ण हैं लेकिन डाक्टर साहब चूंकि मदरसा के संरक्षक जिम्मेदार हैं और हर समय मदरसा में ही व्यस्त रहते हैं उनसे मिलने का मौका मिला। जब पहली बार मदरसा में प्रवेश के संबंध में गई तो सौभाग्य से डॉक्टर साहब से मुलाकात हो गई। मैंने मौका गनीमत समझ कर डाक्टर साहब से कुछ गुफ्तगू की जिसे आपके सामने पेश करने का शर्फ हासिल कर रही हूं। हमारे इस साक्षात्कार को राह नुमा के अंक में जगह दी गई है, यह बड़ी प्रसन्नता की बात है।

दरखशां हयात

मौलवी-1

प्रश्न- डाक्टर साहब! मदरसा में माशा अल्लाह काफी छात्र-छात्रायें और काफी शिक्षक हैं। शिक्षा क्षेत्र में आपने जो कदम उठाया है कई विभाग आपके यहां चल रहे हैं, जाहिर है तनहा आदमी के बस की बात नहीं। मैं जानना चाहती हूँ कि वे कौन लोग हैं, जो आपके हम कदम हैं?

उत्तर- मेरे साथ गांव के समझदार, इल्म दोस्त, कौम के हमदर्द लोगों के अलावा हमारे स्टाफ के असातिजा व मुलाजिमीन,

शिक्षकों मेरे बहुत पुराने सहयोगी व मददगार हैं। बसा औकात ऐसा भी होता है कि मैं किसी बात पर अपने स्टाफ के लोगों को डांट डपट देता हूँ तो इस का बुरा नहीं मानते हैं और मेरे सुझावों और बातों पर अमल करने की कोशिश करते हैं।

प्रश्न- डॉक्टर साहब, आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई, माशा अल्लाह आप तालीमी शोबा में गांव में रह कर बड़ा अहम कारनामा अंजाम दे रहे हैं। आप अपना मुख्तसर तआरुफ पेश फरमायें।

उत्तर- मेरा नाम मुस्लिम किदवई है। मेरे पिताजी मौलाना अब्दुस्सलाम किदवई मरहूम थे। मेरा जन्म 5 अगस्त 1947 को लखनऊ के शाह मीना अस्पताल (क्वीन मेरी) में हुआ था। मेरा आबाई वतन थुलेण्डी जिला रायबरेली है।

प्रश्न- डॉक्टर साहब अपने तालीमी सफर पर कुछ प्रकाश डालने का कष्ट करें।

उत्तर- मेरी प्रारंभिक शिक्षा मदरसा जियाउल इस्लाम (जो इस समय मदरसा सलाम ओरिएण्टल कॉलेज के नाम से मौसूम है) में हुई। दर्जा पांच के बाद गांव के ही परिषद स्कूल में जूनियर दर्जात पढ़े। उच्च शिक्षा के लिए जामिया मिलिया दिल्ली गया जहां मेरे पिताजी दीनियात के शिक्षक थे। कक्षा नौ से बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की।

प्रश्न- डॉक्टर साहब, डाक्टरी शिक्षा कहां प्राप्त की?

उत्तर- मैंने सहारनपुर भारतीय तिब्बिया कॉलेज से यूनानी का डिप्लोमा कोर्स में भी तालीम हासिल की है।

प्रश्न- डॉक्टर साहब शिक्षा प्राप्ति के

बाद आप ने नौकरी या अपनी निजी प्रैक्टिस या तिजारत की कोशिश नहीं की?

उत्तर— शिक्षा प्राप्ति के बाद गांव आ गया जहां मेरी कुछ संपत्ति है उसकी देखभाल में लगा गया और चूंकि शुरू से ही मुझे समाजी फलाह व बहबूद के काम करने का शौक था इसलिए मैंने गांव ही में मुस्तकिल रिहाइश एख्तियार कर ली।

प्रश्न— डाक्टर साहब, जैसा कि राह नुमा में मजकूर है कि मौलान अब्दुस्सलाम के इत्तेकाल के बाद आपके कंधे पर काफी जिम्मेदारी आ गई, खासकर यह समस्या कि आपके गांव में काफी तादाद में देशबंधु रहते हैं और मुख्तलिफ मकातिबे फिक्र के लोग रहते हैं जो तालीम से बहुत दूर हैं। जिनके बच्चों को आपने शिक्षा के प्रकाश में खड़ा करने का बीड़ा उठाया है, यह आप के लिए बहुत बड़ा चैलेंज था, इस चुनौती को आपने कैसे पूरा किया और मदरसा को किस तरह आप इस मुकाम तक पहुंचाया?

उत्तर— हमारे गांव में विभिन्न धर्मों और मुसलमानों में विभिन्न विचारधाराओं के लोग रहते हैं। इसलिए हम बगैर किसी मसलकी या कौमी व धार्मिक भेदभाव के सभी को साथ ले कर इल्म की शमा रौशन करने का अहद किया और अपनी सोसाइटी में सभी विचारधाराओं के लोगों को स्थान दिया। इसलिए मदरसा के नाम को मदरसा सलाम ओरिएण्टल कॉलेज रखा जिससे लोगों को यकीन हो कि हम धार्मिक होने के साथ धर्मनिरपेक्ष हैं और सभी लोगों को साथ लेकर चलने वाले हैं।

प्रश्न— डॉक्टर साहब आप के मदरसे में काफी तादाद में गैर मुस्लिम छात्र भी हैं, आप उन्हें किया पैगाम देना चाहते हैं?

उत्तर— दरअसल देश में मदरसों के बारे में कुछ लोगों ने यह प्रोपगण्डा फैला रखा है

कि मदरसों में आतंकवाद की शिक्षा दी जाती है। यहाँ मासूम बच्चों को बुनियाद परस्त दहशतगर्द बनाया जाता है। इन में शिद्दत और गैररवादारी का उंसुर भरा जाता है। इसलिए मैंने कोशिश करके गैर मुस्लिम बच्चों और उनके अभिभावकों को यह दावत दी कि आप अपने बच्चों को हमारे यहाँ तालीम दिलवायें और मदारिस के निजाम तालीम और प्रदर्शन से परिचित हों और अल्लाह के करम से हम अपने इस उद्देश्य में सफल हुए और एक बड़ी संख्या गैर मुस्लिम छात्रों की जिस में पिछड़े और हरिजन और अन्य जनरल समुदाय के बच्चे हमारे मदरसे में जेरे तालीम हैं।

हम इस प्रोपेगण्डे को गलत साबित करने के लिए कि मदरसों में दहशत आतंकवाद की शिक्षा दी जाती है ये लोग रवादार नहीं हैं यह कदम उठाया और सब को दावत दी कि आप आएं और देखें कि मदरसों में क्या पढ़ाया जाता है। आप देखिए यहां हिन्दू मुस्लिम सब बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, इसके अलावा जब बच्चे एक साथ बैठकर पढ़ेंगे तो वे एक दूसरे की संस्कृति और कल्चर से भी परिचित होंगे। आपसी दूरियां कम होंगी। भाई चारगी बढ़गे होगी जिसकी आज हमारे समाज में सख्त जरूरत है।

प्रश्न— डॉक्टर साहब! आप को मदरसा चलाने का ख्याल कैसे आया? आप ने कौमी खिदमत के लिए इस को क्यों तरजीह दी?

उत्तर— चूंकि मदरसा जियाउल इस्लाम वालिद साहब की जेर निगरानी कक्षा 1 सं 5 तक बखूबी तालीमी खिदमात दे रहा था वालिद साहब अपनी नौकरी के दौरान मदरसे की किफालत फरमाते रहे। वालिद साहब के निधन के बाद यह इच्छा हुई कि इसको आगे बढ़ाया जाए इस संबंध में मेरे चचा जान जो पिताजी के फुफीरे भाई थे मौलाना अब्दुस्सलाम किदवई मेमोरियल सोसाइटी का

गठन किया और मुझे एक सदस्य के रूप में नामित किया इस तरह मुझे मदरसा की सेवा का मौका मिला। मौलवी नज्मुद्दीन साहब के निधन के बाद मदरसे की पूरी जिम्मेदारी सोसाइटी मुझे सौंप दी।

प्रश्न— डाक्टर साहब! यहाँ आकर मदरसे की तामीरी व तरक्कियाती के दीगर सरगर्मियाँ (जैसे मिनी आई.आई.टी., कम्प्यूटर, डिप्लोमा पाठ्यक्रम का आगाज के कारण लोगों की काफी उम्मीदें) इस बात का सुबूत हैं कि आपने अपनी नौकरी की फिक्र और जाती रोजगार की फिक्र को ज्यादा महत्व न देकर दीवानगी की हद तक अपने आप को मदरसा के लिए समर्पित कर दिया है। डाक्टर साहब यह बताएं कि मदरसा का खर्च कैसे पूरा होता है।

उत्तर— हमारे शिक्षकों का वेतन सरकारी अनुदान द्वारा मिल जाती है और तामीरी एखराजात के लिए पिताजी के शागिर्दों और परिवार के लोगों के सहयोग से निर्माण लागत पूरे किए जाते हैं।

प्रश्न— डाक्टर साहब, मदरसा की इब्तेदा कब से हुई?

उत्तर— यूँ तो उसकी इब्तेदा 1932 में की गई। इस समय शिक्षा के हालात ऐसे नहीं थे न तो लोगों में तालीमी बेदारी व शैक था इसलिए शुरुआत में मदरसा का चलाना इतना आसान न था। चचा नज्मुद्दीन साहब ने एक ख्वाब देखा था कि इस्लाम की तरक्की के लिए जो भी संभव हो किया जाए। बच्चों को इस्लाम के बुनियादी अकायद, तौर-तरीके, जीने का सलीका बताया जाए और कौम को तारीकी से निकाल कर उस स्थान तक पहुंचाया जाए जहाँ मौलाना अबुल कलाम आजाद, सर सैय्यद अहमद खान ने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी कायम करके पहुंचाया। जिस की आज देश में महत्वपूर्ण पहचान है।

सबसे पहले इसकी बुनियाद 1932 को

आमिना बीबी के घर में रखी गई फिर अब्दुस्सलाम के यहां फिर चंद साल बाद मुशर्रफ अली फिर इस्माईल अल्वी के यहां चलता रहा। जहां चंद दिन बीते होंगे कि उम्मीद की किरण नजर आई वह यह कि कई गैर मुस्लिम लोगों ने भी शिक्षा की इच्छा व्यक्त की। मौलवी नज्मुद्दीन भी सब को साथ लेकर चलना चाहते थे धीरे-धीरे मदरसा ने अपनी गति पकड़ी और हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते गए। आज हम यह कहने पर हक बजानिब हैं—

कदम चूम लेगी खुद ही बढ़ के मंजिल
मुसाफिर अगर अपनी हिम्मत न हारे
डाक्टर साहब बहुत बहुत धन्यवाद।

आप सभी को राह नुमा द्वारा बताना चाहती हूँ कि शिक्षा के मामले में डाक्टर साहब जितने जिम्मेदार शख्स हैं उतने ही अच्छे और खैर ख्वाह भी हैं। लोगों से प्यार व मुहब्बत शफकत से मिलने की आदत है। आप जब भी उनसे मुलाकात करेंगे बहुत खुश होंगे। एक अच्छे इंसान की यही पहचान है। अल्लाह से दुआ है कि मदरसा को हर शर से सुरक्षित रखे और तरक्की अता फरमाये। मदरसा के बानियान खैरख्वाहों, हमदरदों मुआवनीन की मेहनतों को कुबूल फरमाकर जखीरये आखिरत बनाए। आमीन

दरख्शाँ हयात
मौलवी।

जीवन के रंग त्योहारों के संग

दीवाली का त्योहार आया सफाई कर दी गई दीवारों पर सफेदी हो गई। दरवाजे-खिड़कियों की रंगाई हो गई। दुकानें मिट्टी के खिलौनों, फुलझड़ी, पटाखों से भर गई। हलवाई तरह-2 की मिठाइयां बनाने लगे। बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। कोई खिलौना खरीद रहा था तो कोई मिठाइयां, पूजा के लिये लक्ष्मी-गणेश की मुर्तियाँ सभी के हाथों में थी। रात होते ही सभी के घर दीपों के प्रकाश से जगमगा उठे। राजू सरिता, अमर और उनके मित्र अनवर सलमा और जोसेफ के साथ दीप जला रहे थे। कहीं फुलझड़िया छूट रही थीं तो कहीं पटाखे। सभी बच्चे खूब प्रसन्न थे। अनवर बोला, ईद को मत भूलना। मैं अभी से सबको सिवइयाँ खाने की दावत देता हूँ। समला चहक कर बोली— भैया, ईद भी खुशियों का त्यौहार है। इस पर हम सबके लिये नये कपड़े बनते हैं नये कपड़ों को पहन कर हम ईदगाह में जाते हैं। वहाँ हम सब एक दूसरे से गले मिलते हैं। हमेशा की तरह इस बार भी तुम लोगों को मीठी-2 सिवइयां खिलायेंगे। सरिता ने हंसकर कहा— मैं तो पेट भर कर खाऊंगी। यह सुनते ही सारे बच्चे खिलखिलाकर हंस पड़े। ईद के दिन सबने अनवर और

सलमा के घर दावत उड़ाई। सब एक दूसरे से गले मिले। जोसेफ बोला— दिसम्बर में क्रिसमस का त्योहार है। उस दिन सबको दावत मेरे यहाँ होगी। क्रिसमस के दिन जोसेफ के घर में एक पेड़ बना था इसका नाम का क्रिसमस ट्री यानि क्रिसमस का पेड़, पेड़ों को मोमबत्तियों, झाड़ियों और गुब्बारे से सजाया था। सभी मित्रों ने मिलकर भोजन किया। चलते समय जोसेफ के पिता ने बच्चों को उपहार भी दिये। जाड़ा बीतते ही फाल्गुन का सुहाना मौसम आ जाता है। इन्हीं दिनों में होली का त्योहार पड़ता है। होली आते ही अमर सरिता राजू अनवर जोसेफ सभी ने पिचकारियां निकाल लीं रंग खेलने लगे। रंग और गुलाल की धूम मच गई। जिसे देखो वही रंग में सराबोर हो गया। हमारे सारे त्यौहार भाईचारे के त्योहार हैं। इसमें सभी प्रकार का भेदभाव भूल कर हम सब एक दूसरे के गले मिलते हैं। इस लिये मैं मिल जुल कर रहना चाहिये।

कल्पना मौर्या

कक्षा 9

मौजा थुलैण्डी की उभरती शख्सियत

डॉ० अहमद अदील

परिचय— आप का इस्मे गिरामी अहमद अदील है, अपका जन्म मौजा थुलैण्डी के इल्मी घराने में 15 सितम्बर 1980 को हुआ। चार भाई बहनों में डाक्टर अदील अहमद सबसे छोटे हैं। आप बहुत नरम स्वभाव के हैं। अपने काम में मेहनती और चाक व चौबन्द रहते हैं।

पारिवारिक पृष्ठभूमि— आपके पिता श्री मौलवी एहतिशाम अली मरहूम एक इल्म दोस्त आदमी थे। मुहिब्बे कौम व वतन व्यक्ति थे। अपने बच्चों की शिक्षा पर खुसूसी ध्यान दिया। आप से बड़े दो भाई, एक जामिया मिलिया दिल्ली में कार्यरत हैं। दूसरे इसी मदरसा के सीनियर शिक्षक हैं। एक बहन हैं। आपकी वालिदा एक दीनदार सौम व सलात की पाबंद खातून हैं जो अभी बाहयात हैं।

आप का तालीमी सफर— डाक्टर अहमद अदील साहब की प्रारंभिक शिक्षा मदरसा हजा (इस्लामिया स्कूल) से हुई। जूनियर दरजात की शिक्षा गांव के ही जूनियर हाई स्कूल में हुई। 9 से 12 तक शिक्षा गांधी विद्यालय इन्टर कालेज बछरावां से 1997 में हुई। एम.ए. एवं बी.ए. फिरोज गांधी कॉलेज रायबरेली से 2003 में पूरा किया और पी.एचडी कानपुर विश्वविद्यालय से डॉक्टर बट्री दत्त मिश्र की देखरेख में पूरा किया जिस का उनवान था 'हिंदी के मुसलमान कथाकारों की कृतियों का साहित्यिक अध्ययन' 2014 में पूरी की। डाक्टर अहमद अदील साहब एक इल्म दोस्त शख्सियत के मालिक हैं। आप का कमरा एक लाइब्रेरी है। आपके लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। हम सभी के लिए बड़ी खुशी की बात है कि एम.ए. के बाद आप मदरसा सलाम ओरिएण्टल कॉलेज में तालीमी खिदमात बहुस्न खूबी अंजाम दे रहे हैं।

डॉ० अहमद अदील साहब ने अपनी इल्मी काविशों के द्वारा थुलेण्डी का नाम रौशन किया और हिंदी साहित्य को आपने इस किताब के जरिये जीनत बखशी। हम सब अल्लाह तआला से दुआगो हैं कि अल्लाह तआला आप को और तरक्की अता फरमाकर आप के इल्मी नफा को आम फरमाये।

सना परवीन

मुंशी 2

मदरसा सलाम ओरिएण्टल कॉलेज, रायबरेली

तास्सुबात

प्रिय पाठको!

मैं हिना परवीन इदरीसी अपने मदरसे में तालीम के दौरान जो सीखा इसके बाद यहां से निकल कर डिग्री कालेज गई वहां के माहौल को देखा कि मदरसा के वक्त में मुझे किस आला तहजीब से संवारा इसका अहसास उस वक्त हुआ जब मैंने डिग्री कालेज की लड़कियों को बेलाग घूमते हुये देखा हालांकि हर लड़की एक तरह की नहीं होती है लेकिन ज्यादा तर लड़किया वहां पर घूमती नजर आती हैं। इसी वजह से मां-बाप अपने बच्चों को कालेज भेजने से कतराते हैं और बच्चों की तालीम रूक जाती है क्योंकि ज्यादातर कालेजों का माहौल अच्छा नहीं होता है। मैं खुद भी एम.ए. (Edu) से कर रही हूं लेकिन जो तालीम और अदब मुझे यहां से सीखने को मिला वह माहौल मुझे कहीं नहीं मिल पाया। मैं अपने स्कूल को कभी नहीं भूल सकती। मदरसा सलाम ओरियण्टल कालेज बहुत ही अच्छा स्कूल है। यहां के उस्ताद बहुत अच्छे हैं और यहां पर तालीम भी बहुत अच्छी दी जाती है। इस स्कूल का रहन सहन और स्कूलों से अच्छा और अलग है। यहां पर तहजीब व अदब का भी ख्याल रखा जाता है। इस स्कूल में उस्ताद अपने तलबा को अपने बच्चों की तरह मानते हैं और वह अपने तलबा को प्यार से पढ़ाते हैं। हर मां-बाप की ख्वाहिश होती है कि अपने बच्चों को अच्छी तालीम मिले। अगर सही नजरिये से देखा जाये तो यहां पर बहुत अच्छी पढ़ाई होती है जो बच्चे

किसी मजबूरी की वजह से बाहर पढ़ने नहीं जा सकते उनके लिये यह स्कूल बहुत अच्छा है क्योंकि वह यहां पर रहकर तालीम हासिल कर सकते हैं। हम भी इसी स्कूल के पढ़े हुये हैं और आज हम एम.ए. कर रहे हैं। हमें यह स्कूल बहुत पसंद है। इस स्कूल के उस्तादों में अपने तालिबा के लिये जो लगाव है वह लगाव हमें बहुत कम स्कूलों में देखने को मिलते हैं। हम भी बाहर पढ़ने जाते हैं लेकिन जो तहजीब व अदब हमने यहां पर सीखा वह हमें कहीं भी नहीं मिली। इस स्कूल में सुबह के वक्त दुआ पढ़ाई जाती है और सारे कलमें पढ़ाये जाते हैं। यहां पर दिन की शुरुआत खुदा को याद करके की जाती है। हमें ऐसा बहुत कम स्कूलों में देखने को मिलता है। इस स्कूल में जलसे भी होते हैं जिससे बच्चों को हौसला मिलता है। जिससे वह अपनी बात बड़ों के सामने बोल सकें और उन्हें कोई झिझक न महसूस हो। हम अभी भी इस स्कूल को याद करते हैं। तो हमें हमारे पुराने दिन याद आ जाते हैं। बहुत खुशनसीब है वह बच्चे जो इस स्कूल में पढ़ते हैं और उन्हें ऐसे हौसला अफजाई वाले उस्ताद मिले। हम अपने आपको बहुत खुशनसीब मानते हैं कि हम ऐसे स्कूल में पढ़े हैं।

हिना परवीन इदरीसी

(साबिक तालिबा)

M.A. I, Educaion

दयानंद बछरावां पी.जी. कालेज

बछरावां, रायबरेली।

तास्सुबात

प्रिय पाठको!

मैं राफिया खातून ने मदरसा सलाम ओरिएण्टल कालेज थुलेण्डी से तालीम हासिल की है। मैंने जब मदरसे से पढ़ाई पूरी करने के बाद बाहर की दुनिया में कदम रखा तो मुझे एक ख्याल सा महसूस हुआ जो अदब सलीका इस्लामी दीनी माहौल वतन परस्ती, इंसानियत समाज में रहने का ढंग एक दूसरे से हमदर्दी, कौम की खिदमत का जज्बा जो हमारे असातिजा ने हम को दिया था वह बहुत कम स्कूलों में दिया जाता है। मैं और स्कूलों डिग्री कालेजों की बच्चियों से मिली उनके ख्यालात और उनकी तर्ज जिन्दगी को देखा तो मुझे बे साख्ता अपना मदरसा, वहां की तर्बियत याद आ गई। हालांकि सभी स्कूल कालेज छात्र-छात्राओं का भला चाहते हैं उनको किसी लायक बनाना सबका मकसद होता है। लेकिन फोकस की कमी के कारण कुछ बाहर के माहौल की खराबी के कारण छात्र-छात्राओं में वह चीज पैदा नहीं हो पाही। चूंकि बच्चों की यह उम्र ऐसी होती है कि उन्हें अच्छे बुरे की पहचान कम होती है। अगर उनको हमदर्दी से गाइड किया जाता रहे तो यही बच्चे संवर सकते हैं। वरना बाद में वह

पछताते हैं। मैंने इस सिलसिले में मदरसा सलाम ओरिएण्टल कालेज को इस बारे में बहुत अच्छा पाया। और इसकी कद्र यहां से जाने के बाद मालूम हुई इस मदरसे ने हमारे दिमाग व सोच पर जो छाप छोड़ी है वही आज हमारे लिये रहनुमा उसूल हैं। मह शुक्रगुजार हैं अपने मदरसे के असातिजा और मेनेजमेन्ट के जिन्होंने हमें संवारा सजाया समाज के लायक बनाया। लोग इस बात की सराहना करते हैं।

राफिया खातून

(साबिक तालिबा)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, न मर्द दूसरे मर्दों का मजाक उड़ाएं हो सकता है वह उनसे बेहतर हों और न औरतें दूसरी औरतों का मजाक उड़ाएं हो सकता है वह उनसे बेहतर हों। आपस में एक दूसरे पर तअन न करो और न एक दूसरे को बूरे अलकाब से याद करो। ईमान लाने के बाद फिस्क में नाम पैदा करना बहुत बुरी बात है। (सूर: हुजरात: 11)

इस्लाम का पहला महीना

मोहर्रमुल हराम और उसकी फज़ीलतें

मोहर्रम इस्लाम का पहला महीना है। इस्लामी साल की शुरूआत इसी माह से होती है। हदीस शरीफ में इस महीने की बड़ी फज़ीलत आई है। अरब वालों में चार महीनों का बड़ा एहताराम था उनमें से एक मोहर्रम भी था। इस महीने में अरब लोग लड़ाइयाँ बन्द कर देते थे।

अहादीस नबवी (सल्ल०) और इस्लामी तारीख के हवाले से ये बात साबित है कि मोहर्रम का महीना और खास कर यौमे आशूरा (10वी मोहर्रम) का दिन बड़ी फज़ीलत वाला दिन है। बहुत से अहम अहम वाकियात इसी दिन पेश आए—

चुनाँचे प्यारे आका (सल्ल०) जब मदीना तशरीफ लाए तो देखा कि यहूदी आशूरा के दिन रोज़े रखते हैं क्योंकि मूसा (अलैहिस्सलाम) को फिरऔन से इसी दिन निजात मिली थी। फिरऔन अपने लशकर के साथ नील में डूब गया मूसा (अलै०) और बनी इस्राईल सलामती के साथ उसी दरिया से पार हो गए थे।

प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया मुसलमान ज़्यादा हक़दार है कि इस दिन रोज़ा रखे। आपने मुसलमानों को हुक्म दिया कि एक दिन आगे या पीछे मिला कर आशूरा का रोज़ा रखें—

रमज़ान के रोज़े रखने से कबल आशूरा का रोज़ा फ़र्ज़ था लेकिन रमज़ान के रोज़े आने के बाद आशूरा का रोज़ा

फ़र्ज़ नहीं रहा। लेकिन सवाब के ऐतबार से बहुत बड़ा अज़्र है— प्यारे नबी ने फ़रमाया जिसने आशूरा का रोज़ा रखा उसके एक साल के गुनाह माफ़ हो जाते हैं। आशूरा के दिन के कुछ खास वाकियात—

- 1— आदम (अलै०) की दुआ इसी दिन कुबूल हुई।
- 2— नूह (अलै०) के वक्त तूफ़ान इसी दिन थमा। और कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी।
- 3— मूसा (अलै०) को निजात मिली।
- 4— यूनुस (अलै०) मछली के पेट से निकले।
- 5— इब्राहीम (अलै०) पर आग ठंडी हुई।
- 6— यूसुफ (अलै०) को जेल से रिहाई हुई।
- 7— अय्यूब (अलै०) को सेहत मिली।
- 8— याकूब (अलै०) की बीनाई लौटी।
- 9— नवास-ए-रसूल सय्यदना हुसैन (रजि०) को और 72 साथियों के साथ शहादत इसी दिन मिली।
- 10— कयामत इसी दिन आएगी।

इसी तरह और बहुत सी अहम बातें पेश आयीं। प्यारे आका ने फ़रमाया जो शख्स इस दिन अपने घर वालों पर रिज़क की कुशादगी करेगा (यानी अच्छे से अच्छा हैसियत के मुताबिक़ खाना खिलाएगा)

अल्लाह उसकी रोजी में साल भर बरकत फरमाएगा।

लेकिन इसके साथ एक अलमिया ये है कि आज उम्मत में इस दिन तमाम ऐसी रस्में चल पड़ी हैं जिसका ताल्लुक इस्लाम से कोई नहीं है। इस दिन गैर शरई और गलत रस्में गढ़ ली गयी हैं और मसनून व करने वाले कामों को भुला दिया गया है।

मोहर्रम में करने वाले काम—

1— 9 , 10 या 10 , 11 मोहर्रम का रोज़ा रखना।

2— जिक्र व अजकार, दुआए करना।

3— आशूरा के दिन घर वालों केलिये अच्छे खाने का इन्तिजाम करना।

4— शोहदाए कर्बला के हक में दुआ करना।

5— सहाबा व अहले बैअत की जिन्दगी के हालात पढ़ना और सहाबा व अहले बैअत के तरीके पर चलने की नियत करना।

6— सहाबा व अहले बैयत वाले आमाल करना, उनकी मोहब्बत दिलों में बसाना।

अल्लाह तआला हम सबको सच्चा हुसैनी बनाए गैर शरई रस्मों से बचाए, मोहर्रम की बरकतों से माला माल फरमाए आमीन।

राफिया खातून

कक्षा - मौलवी ॥

इल्म एक रोशनी है जिहालत अंधेरा है

अजीज साथियो और प्यारी बहनो! इल्म का हासिल करना फर्ज है ये वह दौलत है जो किसी भी हाल में इंसान से जुदा नहीं हो सकती न तो कोई चोर इसे चुरा सकता न कोई इसे छिन सकता है यह वह दौलत है जो खर्च करने से बढ़ती है। इसी लिये इसे लाजवाल दौलत कहा गया है। इल्म की रौशनी में इंसान अच्छा बुरा देख समझ सकता है। इसी लिये प्यारे आका (सल्ल०) ने फरमाया इल्म एक रौशनी है और इल्म न हासिल करने वाला अंधेरे में है। उसके दिल की आँख अच्छा बुरा नहीं देख सकती। इल्म का छुपाना जुर्म व गुनाह है। इल्म को दूसरों तक पहुंचाओ ये बहुत बडी नेकी है। दुनिया में अल्लाह ने दो रास्ते चुनने का अख्तियार इंसान को अता फरमाया है एक इल्म का रास्ता और दूसरा जिहालत का रास्ता। आप जो रास्ता अपनायेंगे उसके असरात आप पर पड़ेंगे। इल्म की राह अपनाओ इससे आप के अन्दर सच्चाई, तमीज अदब मअरिफत भले बुरे की पहचान आयेगी। दुनिया व उक्बा में इज्जत मिलेगी। इल्म तन्हाई में बेहतरीन साथी है। इसके बरअक्स जिहालत का रास्ता आपको बेहूदा बे सलीका बनायेगा। आपके अन्दर भला बुरा समझने की सलाहियत न के बराबर होगी। आप चाहते हुये भी किसी मुकाम पर नहीं पहुंच सकते। कदम कदम पर आप दूसरों के मोहताज होंगे। इस लिये मेरी सभी भाईयों और बहनों से अपील है कि इल्म हासिल करो, रौशनी में रहो इल्म वह रौशनी है जो जिहालत के अंधेरी को इंसान के दिल व दिमाग से निकाल कर इल्म की रौशनी भर देती है। इसी अपील के साथ अपनी बात खत्म करती हूं। और अल्लाह पाक से दुआ करती हूं कि हमारे सीनों को इल्म की रौशनी से मुनव्वर फरमाये। आमीन

सालिहा परवीन, मुन्शी अब्बल (9)

बड़ो की सलाह के बिना कोई कदम उठाना खतरे को दावत देना है

गुफा का राज

एक लड़का था जिसका नाम कादिर था जो बहुत शैतान था। पढ़ने लिखने में उसका मन नहीं लगता था बस दिन भर वह लोफर लड़कों के साथ घूमता रहता था। इस साल उसका इण्टर का इम्तिहान था। घर वालों को उसकी फिक्र होती थी कि वह अगर इसी तरह घूमता रहा और पढ़ाई नहीं की तो वह फेल हो जाएगा। उसके बाप जो पुलिस में दरोगा थे और वह उसपर हमेशा तम्बीह किया करते थे लेकिन वह अपने बाप की एक भी नहीं सुनता था। एक दिन उसके बाप किसी वजह से ड्युटी पर नहीं गए थे उन्होंने ने दोपहर का खाना घर पर खाया और आराम करने के लिए लेट गए और उनकी आँख लग गई। उधर कादिर को बाहर निकलने का मौका मिल गया बाहर जाते समय उसकी नज़र बाप की वर्दी पर पड़ी उसने उनकी रिवालवर निकाल ली और शिकार करने के लिए जंगल की तरफ चल पड़ा जो एक मील दूर था। वह जंगल बहुत खतरनाक माना जाता था लोग दिन में भी उस जंगल में गुज़रने से डरते थे उसमें एक गुफा थी जो 200 मी० लम्बी सुरंग नुमा बनी थी लोगों का मानना था कि उस गुफा से भयानक आवाज़े आती थी और कोई भी उधर से जाता तो बच कर नहीं आता था लेकिन कादिर अपने बाप की तरह निडर था उसने जंगल जाकर शिकार करने की ठान ली वह जंगल में घूमता हुआ उस गुफा के पास पहुँच गया उसने भी उस गुफा के बारे

में सुना था तभी उसे वहाँ कुछ जंगली खरगोश दिखे उसने उक खरगोश का निशाना बनाकर ट्रिगर दबा दिया। गोला सीधा खरगोश को जाकर लगी। कादिर उसको पकड़ने के लिए उसकी तरफ बढ़ा तभी खरगोश थोड़ा सा भागने लगा। कादिर उसके पीछे उसको पकड़ने की कोशिश कर रहा था कि अचानक खरगोश गुफा के मुँह पर पहुँच गया। कादिर उसे पकड़ने के लिए दौड़ा और उसका पैर एक पत्थर से टकराया और वह वहीं गिर पड़ा फिर उसने उठ कर उसे पकड़ने की कोशिश की। वह गुफा के थोड़ा अन्दर पहुँच गया। गुफा साफ सुथरी थी और रौशनी अन्दर जा रही थी। वह थोड़ा अन्दर पहुँचा कि किसी के बात करने की आवाज़ उसने सुनी और वह सतर्क हो गया फिर वह धीरे-धीरे कदमों से अन्दर की ओर बढ़ने लगा अब आवाज़ें साफ सुनाई देने लगीं। जैसे कोई कह रहा हो सर हम उस बैंक को नहीं लूट सकते हैं। वह बीच चौराहे पर है और उसमें सेक्योरिटी लगी रहती है। सर ने कहा नहीं हम उसे लूट लेंगे मेरे दिमाग में एक प्लान है। कादिर अब उन्हें देख सकता था ये वही चोर थे जिन्होंने मंदिर से सोने की मूर्ति चुरायी थी। पुलिस को उनकी तलाश थी कादिर ने सोचा मैं अभी जाकर इनका भाण्डा फोड़ता हूँ और जैसे मुड़ा उसका हाथ किसी चीज़ से टकराया और ज़ोरों की आवाज़ हुई। चोर ने उसे देख लिया। वे उसे पकड़ने के लिए

उसकी तरफ बढ़े और उन्होंने उसे घेर लिया उसने अपने जेब में हाथ डालकर बंदूक निकालना चाही तो क्या देखते हैं कि बंदूक उसकी जेब में नहीं है हुआ ये था कि जब वह गिरा था तो उसकी बंदूक वही पत्थर के पास गिर गयी थी चोरों ने उसे पकड़ लिया और उसे बांध दिया एक बोला सर इसने हमारा प्लान सुन लिया है इसे मार देना चाहिए सर ने कहा नहीं इसे हम अभी नहीं मारेंगे अभी इसे बांध कर रखो इधर जब शाम तक कादिर घर नहीं पहुँचा तो उसके घर वालों को उसकी फिकर होने लगी दूसरा दिन भी बीत गया कादिर घर नहीं पहुँचा उसके बाप ने पुलिस वालों के साथ पूरा जंगल छान मारा मगर कादिर नहीं मिला वह उसे खोजते हुए उसी गुफा के पास पहुँचे तभी एक सिपाही की नजर बन्दूक पर पड़ी उसने उसे उठाकर दरोगा जी को दी दरोगा ने बन्दूक को पहचान लिया। ये उन्हीं की बन्दूक थी अब उन्हे पूरा मामला समझने में देर नहीं लगी। वह पूरी सतर्कता से गुफा में सिपाहियों के साथ घुस गए और उन्होंने चोरों को पकड़ लिया और कादिर जो एक खम्बे से बंधा था उसको खुलवाया। कादिर रोने लगा और अपने बाप से माफी मांगने लगा कि अब वह कभी ऐसी गलती नहीं करेगा। उसने वादा किया कि वह मन लगा कर पढ़ेगा। इस तरह उन चोरों का पर्दा फाश हुआ।

शाफिया खातून
मौलवी ॥

चुगलखोर जन्नत में दाखिल नहीं होगा (हदीस)

प्रिय साथियो! चुगलखोरी एक समाजी बुराई है। चुगलखोर बड़ा जलील इंसान होता है, ऐसा इंसान समाज में लोगों की नजरों में गिर जाता है।

चुगलखोर का काम यह है कि दो आदमियों के बीच झूठी सच्ची बातें बयान कर आपस में लड़ा देता है। वह खुदा के नजदीक भी जलील होता है। प्यारे आका (सल्ल०) ने एक बार इर्शाद फरमाया कि मैं तुम को बताऊँ कि सबसे बुरे लोग कौन हैं? फिर आप ने खुद ही इर्शाद फरमाया कि जो चुगलियाँ खाते फिरते हैं, दोस्तों के बीच में ताल्लुकात खराब करते हैं।

एक बार आप का गुजर एक कब्रिस्तान से हुआ। इन में एक कब्र वाले पर अजाब इसलिए हो रहा था कि वह लोगों की चुगली करता फिरता था।

प्यारे आका का हुक्म था कि मेरे साथियों में से कोई मुझ तक किसी की बात न पहुँचाए क्योंकि मैं चाहता हूँ कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँ तो मेरा दिल सब की तरफ से साफ हो। कितनी प्यारी बात आका ने फरमाई। हम सभी को इस पर अमल करना चाहिए ताकि आपस में संबंध खराब न हों। और मुहब्बत का जज्बा मुतास्सिर न हो।

कुरआन ने इससे बचने का एक बहुत अच्छा नुस्खा बताया कि चुगलखोर की बात न मानी जाए। अल्लाह पाक से प्रार्थना है कि हम सब को चुगलखोरी के लानत से महफूज रखे। आमीन

चुगलखोरी की आदत बाइसे जिल्लत है मेरे दोस्तो
खुदा हम को बचाए इस बुरी लानत से मेरे दोस्तो

खुशनुमा
मौलवी ॥

हमारे देश पर प्रकृति के वरदान

हमारे देश का नाम भारत है। भारत बहुत विशाल देश है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत और दक्षिण में हिन्द महासागर है। अल्लाह तआला बड़े दयालू हैं। उन्होंने हमारे देश पर बड़े उपकार किये हैं। इसकी भूमि बड़ी उपजाऊ बनाई है। भारत में वर्षा की खेती होती है। इसके लिए नदी व तालाब भी बनाये गये हैं जिन से सिचाई करके हम अन्न उगाते हैं। भाँति भाँति के जीव जन्तु पशु पक्षी भी हमारे देश में पाये जाते हैं। इनके दूध, मांस, और खाल से हम लाभ उठाते हैं। इसके अतिरिक्त हमारे देश में तरह तरह के फूल पत्ती पेड़ पौधे हैं जिनको हम काम में लाते हैं। हमारे देश में बड़े बड़े मैदान, लम्बी चौड़ी नदियाँ ऊँचे ऊँचे पहाड़ व हरे भरे जंगल हैं। इनके कारण हमारा देश बहुत सुन्दर हो गया है। हमारे देश की धरती के नीचे भी ईश्वर ने बड़े खनिज पदार्थ भर दिये हैं। कहीं से लोहा निकलता है तो कहीं कोयला, कहीं मिट्टी का का तेल और कहीं सोना चाँदी निकलता है। भारत में पहले मुसलमान राज करते थे बहुत वर्षों तक इन्होंने देश को बनाया संवारा किन्तु जब शासक प्रजा के हित से दूर हो गये तो

ईश्वर ने इनसे शासन छीन लिया। हिन्दुस्तान को अंग्रेज नामक जाति के हवाले कर दिया। अंग्रेजों के जाने पर यहां भयानक लड़ाई दंगे हुये। लाखों लोग मारे गए भारत दो भागों में बट गया। एक भाग हिन्दुस्तान दूसरा भाग पाकिस्तान कहलाया। भारत में हिन्दू अधिक हैं और पाकिस्तान में मुस्लमान अधिक हैं। अब हम अपने देश को बटने नहीं देंगे हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब लोग मिल जुल कर प्रेम से रहेंगे ताकि हमारा और हमारे देश का नाम संसार में रौशन हो। यही भारत से सच्चा प्रेम और देश भक्ति है।

मो० कलीम
मुंशी ॥

यही इंसान जब ज़रा सी मुसीबत उसे छू जाती है तो हमें पुकारता है और जब हम अपनी तरफ से नेमत देकर उफार देते हैं तो कहता है कि यह तो मुझे मेरे इल्म की बुनियाद पर दिया गया है। नहीं बल्कि यह तो आजमाइश है। मगर उनमें से अक्सर लोग जानते नहीं हैं। (सूर: जुमुर: 49)

ईमानदार चोर

किसी गाँव में तीन चोर रहा करते थे। गाँव में एकता न होने की वजह से वह हमेशा लोगों को बेवकूफ बनाकर चोरी करते थे। जब कोई चोर की बातों में फंस जाता तो गाँव वाले उसका साथ भी न देते थे। इस लिए चोर की हमेशा जीत होती थी क्योंकि गाँव में एक न एक दिन लड़ाई जरूर होती थी।

इस तरह तीनों ने मिल कर ये प्लान बनाया कि किसी मालदार के घर चोरी की जाए। तीनों ने बराबर के काम बाँट लिए। एक ऐक्टिंग करेगा और मौका देखते ही दोनों चोर घर में घुस कर चोरी कर लेंगे और चोरी में जो भी दौलत मिलेगी उसमें तीनों का बराबर हिस्सा होगा। तीनों को यह बात सही लगी।

एक शाम तीनों चोरी के इरादे से सुनार के घर के पास गए और एक दूसरे के कान में सारा काम समझा दिया। एक चोर ने सुनार के घर के दरवाजे पर आवाज़ दी और दोनों चोर पेड़ की आड़ में छुप गए जैसे ही सुनार घर के बाहर आए तो पहला चोर उससे कुछ बातें करने लगा और बातें करते करते बेहोश होने की ऐक्टिंग करने लगा और ज़मीन पर गिर पड़ा। सुनार और सुनार के घर के लोग समझे कि वह बेहोश हो गया है। सब बाहर आ गए और मोहल्ले वाले भी इकट्ठे हो गए और उसे ठंडे स्थान पर

लिटा कर उसके होश में आने का इंतज़ार करने लगे। उधर दोनों चोर मौका देखते ही सुनार के घर में घुस गए और घर में कोई न होने की वजह से उन्होंने तिजोरी का ताला तोड़ कर चोरी कर ली। घर के सारे लोग बाहर गए थे इस लिए उन्हें कोई पकड़ न सका। उन्होंने अपनी प्लानिंग के हिसाब से काम किया। सारा पैसा और सोना चाँदी चुपके से अपने घर में जाकर छुपा दिया और वापस आकर बेहोश हुए चोर के पास आ कर ऐक्टिंग करते करते हुए बोले अरे यह तो मेरा दोस्त है इसे क्या हो गया। आप लोग इसे मेरे घर पहुँचा दीजिए। यह मेरा दोस्त है। लोगों ने मिल कर चोर को उसके घर पहुँचा दिया और जब सुनार घर के अन्दर गया तो घबरा कर चीख पड़ा कि उसके घर की तिजोरी का ताला टूटा हुआ था और तिजोरी खाली थी। मोहल्ले में कोहराम मच गया कि सुनार के घर में चोरी हो गयी। उधर तीनों चोर अपनी कामयाबी पर बहुत खुश थे उन्होंने माल का बराबर हिस्सा लगा कर बाँट लिया और उस सब माल को उस तिजोरी में रख दिया जिसमें पहले की चोरी का माल था। और जब वह तीनों सो गए तो उसी रात उनके घर में भी चोर आ गए और तिजोरी का ताला तोड़ कर सारा माल चुरा ले गए। उन तानों को पता भी नहीं

चला। जब सुबह हुई तो तीनों चोरों ने देखा कि उनके घर में भी चोरी हो गई है। वे तीनों चोरी की बात किसी को बता भी नहीं सकते थे क्योंकि वह माल चोरी का था। उन तीनों को अपनी ग़लती का एहसास हो गया। वह अपनी ग़लती पर इतना शर्मिन्दा हुए कि उन तीनों ने फैसला किया कि वह अब कभी भी चोरी नहीं करेंगे और अपने आप को पुलिस के हवाले कर देंगे और हमारे घर से जो चोरी हुयी है हम पुलिस थाने में इसकी रिपोर्ट दर्ज कराएंगे और चोर को पकड़वाने में पुलिस की मदद करेंगे क्योंकि पैसा चाहे जितना भी कम हो मेहनत का हो चोरी होने पर दुःख बहुत होता है। उन तीनों ने उसी दिन पुलिस थाने में जाकर सारी बात पुलिस को बताई। पुलिस ने उन चोरों की मदद से दूसरे चोरों को पकड़ लिया और कानून के मुताबिक उन चोरों को सज़ा दी गयी और सुनार का माल चोरों से लेकर सुनार को वापस कर दिया सुनार बहुत खुश हुआ।

तो देखा दोस्तों चोरी करना कितनी बुरी बात है। चोरी से ईमान खराब हो जाता है। चोरी इन्सान को लालची बना देती है। चोरी करके कोई भी इन्सान बच नहीं सकता। वह एक न एक दिन पकड़ा ज़रूर जाता है इसी लिए तो कहते हैं चोरी कभी नहीं करनी चाहिए हमेशा मेहनत से काम करना चाहिए।

☆☆☆☆

सना परवीन

फकीरी नुस्खा

मैंने एक फकीर से कहा कि मुझे गुनाह की बीमारी है, कोई इलाज बताइए, तब फीकर ने निम्नलिखित नुस्खा अता फरमाया:

तौबा की मिस्री, तौहीद के पते, सच के फूल, दियानतदारी के फल और पारसाई का अर्क।

तरीका—ए—अमल

इन सब चीजों को शरीअत की ओखली में डालकर तरीकत के डंडे से खूब बारीक कर लो। जब तैयार हो जाये तो हकीकत छन्नी में छान लो फिर मारिफत की हांडी में डाल कर मोहब्बत के चूल्हे पर रख इश्क इलाही की आग जलाएँ। जब पक कर तैयार हो तो सादगी की बोतलों में भर लें और एक तोला बिलानागा रहमदिली और इंसाफ के चमचे से नोश फरमायें।

निम्नलिखित बातों से बचें

तकब्बुर की मूली, शिर्क की प्याज, क्रोध की मिर्च, हसद की आग और लालच की मिठास के पास न जाएं, इंशाअल्लाह बीमारी दूर होगी।

☆☆☆☆☆

बीरबल की चतुराई

एक दिन सायं काल भ्रमण में बादशाह और बीरबल धर्म ग्रन्थों के बारे में बातचीत कर रहे थे। बातों ही बातों में अकबर बादशाह ने पूछा — बीरबल तुम्हारे धर्म ग्रन्थों में लिखा है कि भक्त कसल भगवान श्री कृष्ण हाथी की करुणा पूर्ण पुकार सुन कर पैदल ही बिना किसी नौकर चाकर को साथ लिए उसकी रक्षा के लिए दौड़ पड़े। आखिर इतनी सवारियाँ और नौकर चाकर कब काम आते हैं? अपने साथ वे कुछ भी न ले गये।

बीरबल उसी समय उत्तर तो न दे सके पर बोले— “महाराज समय आने पर आप को मैं इसका उचित उत्तर दूँगा।” बादशाह ने शर्त को सहर्ष स्वीकार कर लिया। बादशाह का अपना सबसे छोटा पोता बहुत प्यारा था। बादशाह नित्य उसे गोदी में खेलाना पसन्द करते थे। सदा की भाँति एक दिन नौकर महाराज के प्यारे पोते को महाराज के पास ले जा रहा था। यह देख बीरबल को सायं काल भ्रमण वाले किए प्रश्न का यथोचित उत्तर देने की सूझी। दूसरे दिन नौकर को बुलाकर कहा कि जब तुम शाम को पोते को लेकर बादशाह की ओर जाओ तो पोते को न ले जाकर इस मोम के पुतले को ले जाना जो देखने में हूबहू उसी के जैसे कपड़े पहने हुए थे। बीरबल ने बात आगे बढ़ाई कि जब तुम इसको लेकर आना तो झूठ-मूठ तालाब कुण्ड के पास फिसलने का बहाना करना किन्तु ध्यान

रखना कि यह पुतला पानी में ही गिरे अगर तुमने ऐसा कर दिया तो बहुत-सा ईनाम दूँगा अगर आनाकानी की तो महाराज से कहकर नौकरी छुड़वा दूँगा।

नौकर ने बीरबल की बात मान ली। सायं काल जब वह इस मोम के पुतले को ला रहा था तो जान-बूझ कर उसे थपकी देकर सुलाने का अभिनय कर रहा था। बादशाह दूर से इस कार्यवाही को देखकर मन-ही-मन हर्षा रहे थे कि अचानक तालाब में पोते का गिरता देखकर दौड़े बिना किसी को साथ लिए तालाब में शहजादे पोते को बचाने की खातिर कूद पड़े। किन्तु जब हाथ में केवल मोम का पुतला आया तो नौकर के ऊपर खूब बरसने लगे। बीरबल पास ही खड़े थे। उनको देख कर बादशाह समझ गए कि जरूर कुछ दाल में काला है। बीरबल ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया— महाराज! आखिर आप इतनी दूर से पैदल दौड़ते हुए क्यों आये? क्या आप के पास कोई सवारी नहीं है? और इतने नौकर-चाकर भी कब काम आयेंगे, आप साथ में किसी को भी नहीं लाए।

बादशाह व्यंग्य को समझ रहे थे। बीरबल ने कहा — महाराज! इसी प्रकार भगवान श्री कृष्ण को अपने भक्तों से अत्यंत प्यार था। उस प्यार के सम्मुख उन्होंने अपना सुख ऐश्वर्य सब कुछ त्याग दिया।

बादशाह यह सुन नौकर को माफ कर बीरबल पर अत्यन्त प्रसन्न हुए। ☆ ☆

ज़कात का सामाजिक पहलू

भाइयो बहनो हम सब इन्सानी समाज में रहते हैं। समाज के बाहर हमारी जिन्दगी मुश्किल ही नहीं अजीरन हो जाएगी हमारे समाज में हर तरह के लोग रहते हैं। सबके काम आना सब की मुसीबत में खड़े होना हमारा सामाजिक फर्ज है। सुखी समाज में हम भी खुश रहेंगे हमारे समाज में अगर कुछ लोग भुखमरी, गरीबी में मुब्तिला हैं तो उनकी तरक्की रूक जाएगी। हमारा समाज पिछड़ जाएगा। इस परेशानी के हल के लिए इस्लाम ने ज़कात के निज़ाम को लागू किया है। माल व दौलत तो अल्लाह की देन है, जिसको जितना चाहे दे। इस से घमण्ड नहीं करना चाहिए। मालदारों पर अल्लाह ने ये कानून फर्ज कर दिया है कि वह अपनी दौलत का 2.5 फीसद निकाल कर समाज के परेशान हाल लोगों की मदद करें ताकि समाज में खुशहाली बाकी रहे। अगर कोई मालदार गरीबों, यतीमों का यह हक नहीं दे रहा है तो वह ज़ालिम और गरीबों का हक मारने वाला है।

शमा बानो 1

कक्षा - मुंशी ॥

मेहनत का फल

एक समय का बात है कि एक जगह एक मछुवारा रोज़ मछली पकड़ने जाता था। एक भिखारी रोज़ मछुवारे से भीख मांगने आता। मछुवारा उसे रोज़ एक मछली दे देता। इस तरह मुफ्त का माल मिलने से भिखारी और काहिल हो गया। अभी तक भीख माँगने के लिए मेहनत करता था अब उसने सोचा अब हमें मेहनत करने की क्या ज़रूरत। भीख में मछुवारे से मछली मिल जाती है जिस से मेरा पेट भर जाता है चुनाँचे एक दिन मछुवारे ने मछली देने से इन्कार कर दिया मछली की जगह इसे एक जाल दे कर कहा जाओ अब मेहनत कर के मछली पकड़ो खुद खाओ और पैसे कमाओ भिखारी ने मछुवारे की बात मान ली और ऐसा ही करने लगा खुदा ने बरकत दी उसकी मेहनत रंग लायी कुछ ही दिनों की मेहनत के बाद वह भिखारी बहुत अमीर आदमी बन गया और भीख माँगने की जिल्लत से भी बच गया।

प्यारे साथियों— मेहनत का फल अच्छा होता है अल्लाह भी उसकी मदद करता है। इस किस्से से हमको यह सबक मिलता है कि हम सबको मेहनत करनी चाहिए ताकि हम भी कामयाब हों।

आयशा अजीज़

कक्षा - 5

जादूगर ईमान ले आये

जब मूसा (अलै0) का फिरऔन के जादूगरों से मुकाबला हुआ तो जादूगरों ने जादू से रस्सियों को साँप बना दिया, मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने असा को मेदान में डाला जो हुक्मे खुदावंदी से जादूगरों के सारे साँप निगल गया।

जादूगरों को यकीन आ गया कि वास्तव में हजरत मूसा अल्लाह के रसूल हैं और वास्तव में यह अल्लाह का अताकर्दा मोजिजा है। तभी तो हमारा तमाम सहर बातिल हो गया। यकीन का आना था कि जादूगर चिल्ला उठे: आमना बिरब्बे हारून व मूसा। (अनुवाद) हम मूसा और हारून के खुदा पर ईमान लाये। फिर सज्दा में गिर पड़े और कहा हम मूसा और हारून के रब पर ईमान लाये। हम दोनों जहां के परवरदिगार पर ईमान लाए। अल्लाह की शान:

बलअम बाउरा को दोजख मिले
जन्नती साहिर बनें फिरऔन के

तेरे महफूज को कोई जरर पहुंचा नहीं सकता
अनासिर छू नहीं सकते फलक धमका नहीं सकते

मतलब यह है कि जिसके अच्छे कामों से खुदा पाक प्रसन्न होकर उसे अपनी सुरक्षा में ले ले तो उसे दुनिया की कोई बाकत नुकसान नहीं पहुँचा सकती। कोई उन्सुर उसको छू नहीं सकता, मिटाना तो दूर की बात है। न ही फलक धमका सकता है। बस जरूरत है कि आदमी खुद

को इस योग्य बना ले कि उसका पैदा करने वाला उसे अपनी सुरक्षा में ले ले। मूसा (अलै0) के वाकिये से हमें यही सबक मिलता है कि एक तरफ फिरऔन अपनी पूरी आब व ताब, शान व शौकत के बल पर मूसा और आपके मानने वालों को मिटाना चाह रहा है, दूसरी ओर अल्लाह ने मूसा को अपनी सुरक्षा में लेने की घोषणा कर दी, फिर दुनिया ने देख लिया कि फिरऔन का क्या हशर हुआ और मूसा की किस तरह हिफाजत हुई।

परवीन बानो
मुंशी ॥

ज्ञान की बातें

- 1— भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?
डॉ० राजेद्र प्रसाद।
- 2— भारत का सर्वोच्च न्यायालय कहाँ है?
नई दिल्ली।
- 3— भारतीय संविधान में गाँधी जी के कौन से सिद्धान्त का समावेश हो पाया है?
समाज के दुर्बल या पिछड़े वर्गों के उत्थान का प्रयत्न।
- 4— गंगा नदी कहाँ से निकलती है?
गंगोत्तरी ग्लेशियर से।
- 5— भारत में सबसे बड़ा तेल शोधक कारखाना किस नगर में है?
मथुरा {उ० प्र०}।

पूजा कुमारी
कक्षा - 8

गीबत

मैमूना खातून
उस्तानी फौकानिया

हमारे समाज में कई बुराईयां जन्म ले चुकी हैं और रोज बरोज परवान चढ़ती जा रही हैं। इससे पहले कि इतिहा तक पहुंच जाएं, उनकी रोक थाम जरूरी है। इन बुराईयों में एक बुराई गीबत है। अखलाकी बीमारियों में गीबत जितनी बड़ी बीमारी है दुर्भाग्य से हमारे समाज में इसी कद्र आम है। बहुत कम लोग होंगे जो इस बीमारी से सुरक्षित होंगे। शरीयत के लिहाज से आदमी का किसी व्यक्ति की पीठ पीछे उसके बारे ऐसी बात कहना कि अगर उसे मालूम हो तो उसको नागवार लगे गीबत कहलाता है। गीबत के बारे में नबी करीम (सल्ल०) ने कहा कि गीबत यह है कि तू अपने भाई का जिक्र इस तरह करे जो उसे नागवार गुजरे। कहा गया कि अगर मेरे भाई में वह बात पाई जाती है तो उस सूरत में आपका क्या खयाल है? कहा अगर इस में बात मौजूद हो तो तूने उसकी गीबत की और अगर वह नहीं है तो फिर उस पर बोहतान लगाया।

नबी करीम (सल्ल०) ने फरमाया: मैं शबे मेराज कुछ ऐसे लोगों पर गुजरा जो आप नाखूनों से अपने चेहरे नोच रहे थे। मैंने कहा: ऐ जिब्राईल, यह कौन लोग हैं? उन्होंने कहा: यह वह लोग हैं जो दूसरों की गीबत करते थे। नबी करीम (सल्ल०) ने फरमाया कि मरे हुये लोगों की गीबत करना मरे हुए गधे का गोशत खाने के बराबर है। यानी कि मुर्दों की गीबत से मना फरमाया।

कुरान में गीबत की बहुत मजम्मत आई है। अल्लाह तआला ने गीबत को मरे हुए

भाई का गोशत खाने से तशबीह देकर इस बुराई के इतिहाई घिनौने होने का तसव्वुर वाजेह किया।

इसलिए इरशाद बारी तआला है: और तुम में से कोई किसी की गीबत न करे, क्या तुम्हारे अंदर कोई ऐसा है जो अपने मरे हुए भाई का गोशत खाना पसन्द करेगा? देखो तुम खुद इस से घिन खाते हो। (अल हुजरात 14)

गीबत के परिणाम बहुत बुरे होते हैं:

1। गीबत करने वाले का मकाम गिर जाता है और उसकी बात का एतमाद और सम्मान भी खत्म हो जाता है।

2। गीबत लोगों में नफरत पैदा हो जाती है। अद्ल व इन्साफ और रहमदिली समाप्त हो जाती है।

3। गीबत से मनुष्य कायर हो जाता है।

4। गीबत करने वाला अल्लाह का मुजरिम होता है और जिस शख्स की वह गीबत करता उसका भी।

5। गीबत से एहसान, मसावात और अखलाके हसना तबाह व बरबाद हो जाते हैं।

6। गीबत का कफारा यह है कि जो शख्स गीबत करता है उसे चाहिए कि वह उस शख्स से माफी मांग ले जिसकी उसने गीबत की थी अगर वह शख्स मर जाये या किसी वजह से दूसरी जगह जा बसे और उस से मिलना नामुमकिन हो तो उसके लिए दुआ करे ऐ अल्लाह हमारी और उसकी बखशिश फरमा। ☆☆☆☆

कंजूस बुढ़िया और सैनिक

एक सैनिक था। युद्ध के बाद वह अपने घर लौट रहा था चलते-चलते वह एक ग्राम में पहुँचा। वह बहुत थक गया था। एक बुढ़िया के घर पहुँच कर उसने बुढ़िया से कहा, मैं थका हुआ हूँ मैं अन्दर आकर विश्राम करना चाहता हूँ।

बुढ़िया को दया आ गई। वह सैनिक को घर के अन्दर ले गयी। थोड़ी देर आराम के बाद सैनिक ने बुढ़िया से कुछ खाने को मांगा। बुढ़िया थी कंजूस उसने झूठ मूट कह दिया कि उसके पास खाने के लिए कुछ नहीं है। सैनिक बुढ़िया की चतुराई समझ गया। आंगन में आकर उसने ढेला उठाया और बुढ़िया से बोला मैं इस ढेले को पका कर खाऊँगा। बुढ़िया को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सैनिक को बर्तन दे दिया। सैनिक ने ढेला पतली में डाल दिया कुछ पानी डालकर उबलने को लिए रख दिया। कुछ समय बाद सैनिक ने बुढ़िया से कहा, यदि इसमें थोड़ा सा नमक भी पड़ जाता तो कितना मज़ा आता। बुढ़िया ने थोड़ा सा नमक लाकर दिया। सैनिक ने उसे पतीली में डाल दिया। कुछ समय बाद सैनिक फिर बोला इस में यदि 50 ग्रा० चावल मिला दिया जाए तो और भी मज़ा आता। बुढ़िया कुछ चावल भी

निकाल लायी। सैनिक ने चावल भी उस पतीली में डाल दिये। कुछ समय बाद सैनिक फिर बोला बस अब केवल घी की कमी रह गई है घी के साथ ढेले बहुत मज़ेदार बनते हैं। बुढ़िया उठी घी तो मेरे पास है। वह चमचा भर घी भी ले आयी। सैनिक ने घी पतीली में डाल दिया थोड़े समय बाद सैनिक बोला खाना तैयार हो गया। उसने आग पर से पतीली उतार ली फिर बुढ़िया की आँख बचाकर पतीली में से ढेला निकाल कर बाहर फेंक दिया। तब सैनिक ने कुछ खाना अपने लिए परोसा और कुछ बुढ़िया के लिए। बुढ़िया ने खाया तो उसे बड़ा मज़ेदार लगा। वह कहने लगी मैं सोच भी नहीं सकती थी कि ढेले इतने स्वादिष्ट होते हैं।

☆☆☆☆

मैं अपनी परेशानी और गुम की फ़रियाद अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता। (सूर: यूसुफ: 86)

अल्लाह की रहमत से मायूस न हो। उसकी रहमत से तो बस काफ़िर ही मायूस हुआ करते हैं। (सूर: यूसुफ: 87)

समझदार किसान ने समझाया एकता में बल है

बहुत दिनों की बात है कि किसी गाँव में एक समझदार किसान रहता था। उसकी खेती बड़ी अच्छी थी। उसके सात पुत्र थे। सब आपस में मिल कर रहते थे। कुछ बुरे लोगों ने किसान के पुत्रों में फूट डाल दी। वे आपस में लड़ने झगड़ने लगे। किसान को यह देख कर बहुत दुःख हुआ। उसने एक दिन सात पतली पतली लकड़ियाँ एक साथ बांधीं फिर सातों पुत्रों को बुलाया। पहले बड़े पुत्र से कहा पुत्र इस गट्ठर को तोड़ो। उसने बहुत कोशिश की पर वह गट्ठर न टूटा। किसान ने दूसरे पुत्र से कहा तुम तोड़ो। उसने भी तोड़ने की बहुत कोशिश की पर गट्ठर न टूटा। अब किसान ने रस्सी काट दिया और सातों पुत्रों को एक एक लकड़ी दे कर कहा अब अपनी अपनी लकड़ी तोड़ो। सातों ने अपनी अपनी लकड़ियाँ तोड़ डाली। किसान ने हंस कर कहा क्यों बच्चों तुमने देखा जब तक सातों पतली पतली लकड़ियाँ एक दूसरे से बंधी थीं तब तक इन्हें तोड़ना कितना मुशकिल था। जब ये अलग अलग हो गयीं तो तुमने एक एक कर के तोड़ दिया। तुम सातों भाई जब तक आपस में प्रेम से रहोगे तब तक कोई भी कष्ट नहीं पहुँचा सकता। जब लड़ाई झगड़ा करके अलग अलग हो जाओगे तब तुमहें सब दुःख देंगे। तुम मेरी

इस समय की बात को सदा ध्यान में रखना।

मेरे प्यारे दोस्तों देखो एकता में कितना बल होता है।

शबीना बानो

कक्षा - मुंशी ॥

क्या आप जानते हैं फलों का बादशाह कैसा होता है।

1-सुन्दर और सजीला आम
कितना रंग रंगीला आम
सबके मन को भाता आम
सबका जी ललचाता आम।

2- **भालू**
भालू बैठा रेल में
मजा आगया खेल में
भालू बैठा रेल में
हंस के ओला अच्छा टाटा
मैं कर जौऊ सैर सपाटा।

3-डॉक्टर अंकल कहते हैं अकसर

खाओ खीरा ककड़ी गाजर
तुमको क्यों नहीं अच्छा लगता
पेस्ट्री बर्गर आइस्क्रीम।

वाफिया बानों
मुंशी-1

ऊँचे लोगों की ऊँची बात

सबसे अच्छी हिफाजत अल्लाह की

हजरत अबू बक्र रज़ि० ने सहन में एक मस्जिद बनाई थी सहन की मस्जिद में नमाज़ पढ़ते थे काफिर सहन की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से रोकते थे सहन की मस्जिद में कुरआन पढ़ते थे। कुरआन बहुत अच्छा पढ़ते थे कुरआन का असर काफिर औरतों पर होता था। कुरआन का असर काफिर बच्चों पर होता था। काफिर सहन की मस्जिद में कुरआन पढ़ने से रोकते थे काफिर कहते थे हमारी औरतें हमारे बच्चे तुमहें नमाज़ पढ़ते देखेंगे और मुसलमान हो जाएंगे, हमारी औरतें तुमहें नमाज़ पढ़ते देखेंगी वह मुसलमान हो जाएंगी हमारे बच्चे तुम्हें कुरआन पढ़ते देखेंगे वोह मुसलमान हो जाएंगे हमारी औरतें तुम्हें कुरआन पढ़ते देखेंगी वह मुसलमान हो जाएंगी। तुम सहन की मस्जिद में नमाज़ मत पढ़ो। तुम सहन की मस्जिद में कुरआन मत पढ़ो। तुम छिप कर नमाज़ पढ़ो तुम छिप कर कुरआन पढ़ो। हजरत अबू बक्र रज़ि० नें छिप कर नमाज़ पढ़ने से इन्कार कर दिया। हजरत अबू बक्र रज़ि० नें छिप कर कुरआन पढ़ने से इन्कार कर दिया। उस इन्कार से काफिर फिर खफा हो

गए। काफिरों ने खफा होकर कहा। अब हम अबू बक्र रज़ि० के जमानतदार नहीं रहे। हजरत अबू बक्र ने कहा मेरा कोई जमानतदार न हो अल्लाह हमारी हिफाजत करेगा मैं अल्लाह की हिफाजत में रहूँगा। अल्लाह की हिफाजत सबसे अच्छी हिफाजत है।

रुमा

कक्षा - मौलवी ॥

आलू राम जैसे मत बनो वरना

आलूराम से हो गई भूल
पढ़ने पहुंच गए स्कूल
पर कुछ भी न करी पढ़ाई
बच्चों संग बस करी लड़ाई
फिर टीचर ने करी पिटाई
भागें सरपट छोड़ पढ़ाई।

यासमीन बानों

कक्षा - 7

तौहीद पर ईमान ही सच्चा ईमान है

तौहीद का मतलब है अल्लाह को एक जानना और मानना यानी इस पर यकीन करना कि सारी कायनात ज़मीन व आसमान में जो कुछ है उन सब का पैदा करने वाला सिर्फ अल्लाह ही है। उसका कोई साझेदार नहीं। दुनिया में जो कुछ हो रहा है सब उसके हुक्म हैं चाँद सूरज का निकलना बारिश का होना ज़मीन से मुख्तलिफ़ किस्म के अनाज बेल बूटे फल फूल और जो भी चीज़ें हैं और जो कुछ हमें मिलता है सब उससे मिलता है। वह अगर चाहे तो नुकसान की चीज़ों को नफा में बदल दे और नफा की चीज़ों को नुकसान में बदल दे उस पर किसी का बस नहीं चलता फरिशते जिन्नात नबी रसूल पैगम्बर और सारी मख्लूक उसकी मोहताज हैं। इस्लाम के कलमे लाइलाहा इल्ललाह में ज़िक्र किया गया है यानी ऐसी ताक़त और हस्ती ही इस लायक है कि उसकी इबादत की जाये। उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं।

जो लोग उसको छोड़ कर या उसके साथ किसी और की इबादत करते हैं वह गलती पर हैं और वह बहुत बड़े गुनाह का काम कर रहे हैं। अल्लाह की ज़ात व सिफात में किसी और मख्लूक को शरीक करना गैर अक़ल की बात है। कुरान मजीद में खुद अल्लाह ने फरमाया है अगर ज़मीन व आसमान में कई खुदा होते तो फसाद हो जाता एक खुदा कहता कि बारिश होगी दूसरा खुदा कहता कि धूप निकले एक खुदा कोई फैसला करता तो

दूसरा कुछ और करता। जिस तरह एक कालेज में दो प्रिन्सीपल, एक हुकूमत में दो राजा नहीं हो सकते, एक गाँव में दो प्रधान नहीं हो सकते इसी तरह पूरी कायनात में एक से ज़्यादा खुदा नहीं हो सकते। दूसरी बात यह है कि दुनिया के लोग अपना काम और हुकूमत चलाने में लाजमी तौर पर अपने मददगारों के मोहताज होते हैं। क्योंकि वह हर जगह जा नहीं सकते, सारे काम खुद कर नहीं सकते। इस लिए दूसरे की मदद लेना उनकी मजबूरी है। लेकिन अल्लाह तआला कादिरे मुतलक है हर जगह मौजूद है सब कुछ देखता है और सब कुछ सुनता है इसको किसी की मदद की ज़रूरत नहीं है। इसलिए जो लोग यह कहते हैं हम बुतों और वलियों को पुकारते हैं कि वो हमारी बात अल्लाह तक पहुँचाते हैं सरासर गलती पर हैं। अल्लाह तआला ने फरमाया वह सब कुछ जानने वाला है। सबकी सुनता है, वह किसी का मोहताज नहीं है। यह सोचना कि अल्लाह हमारे बुतों माबूदों की बात सुनने व मानने पर मजबूर है गुनाह की बात है।

अफसाना

कक्षा — मुंशी ॥

शैतान की चाल

एक था लड़का उसका नाम था ज़फ़र। ज़फ़र बहुत अच्छा लड़का था पढ़ने लिखने का बेहद शौकीन था। रोज़ पाबन्दी से मदरसे जाता वक्त से पहुँचता, दिल लगा के अपना सबक़ याद करता। घर के लोग उससे बहुत खुश थे। मासटर साहब भी बहुत प्यार करते थे। मगर ये बातें शैतान को कब भाती हैं। वह तो इन्सान को ज़लील व ख़्वाब व गुमराह देखना चाहता है। बहकाने का तो उसने बीड़ा उठा रखा है। शैतान ने सोचा कि अगर ज़फ़र लिख पढ़ जाएगा तो खुद भी नेक बन जाएगा और जाहिलों को भी सीधी राह पर ले जाएगा। फिर हमारी दाल कैसे गलेगी। ये ख़्याल आते ही शैतान ने अपने एक लड़के को बुलाया। शैतान के भी बहुत से बाल बच्चे थे और आदम की औलाद की तरह सारी दुनिया में फैले हुए हैं। इन्सानों को बहकाते फिरते हैं। हा! तो शैतान ने अपने लड़के को बुला कर कहा तुम कोई ऐसी तरकाब सोचो कि ज़फ़र का लिखना पढ़ना छूट जाए नहीं तो हमारे हक़ में बहुत बुरा होगा न उस पर हमारा कोई बस चलेगा और न हम उसके घर वालों को बहका सकेंगे। शैतान ने कहा ये कौन सी बड़ी बात है मैं अभी जाता हूँ। ये तो मेरे बाएं हाथ का खेल है। एक दिन की बात है ज़फ़र सुबह सवेरे

उठा, वजू करके नमाज़ अदा की, तिलावत के बाद नाशता किया, बस्ता बगल में दबाया, मदरसे के लिए चल पड़ा। थोड़ी दूर गया था कि एक दोस्त की शकल में वह शैतान नमुदार हुआ। सलाम के बाद बोला मिया ज़फ़र कहाँ चल दिए। ज़फ़र ने जवाब दिया मदरसे जा रहा हूँ। शैतान ने कहा अभी तो मिया सात भी नहीं बजे आप इतने सवेरे चल दिए। ज़फ़र ने कहा जरा वक्त से पहले पहुचने में अच्छा रहता है बाकी मान्दह काम भी पूरा कर लेता हूँ। दरजे की सफाई और सामान की तरतीब भी अच्छे से कर लेता हूँ। शैतान ने कहा अजी चले जाना जल्दी क्या है आओ थोड़ी देर अन्टे खेलें। ज़फ़र ने कहा नहीं भाई अब वक्त नहीं देर हो जाएगी।

शैतान ने कहा यार तुम भी कैसी बातें करते हो। सिर्फ़ दो मिनट खेलेंगे, देर नहीं होगी। ज़फ़र ने कहा वादा करते हो। शैतान ने कहा हाँ हाँ तुम्हारे सर की कसम बस दस मिनट बाद चले जाना। रंग बिरंगे अन्टे देख कर ज़फ़र का जी ललचा गया चलो दस मिनट खेल ही लें इतने में क्या देर हो जाएगी। ज़फ़र ने बस्ता रखकर खेल शुरू कर दिया आहिस्ता आहिस्ता खेल में लुत्फ़ आने लगा अब तो मियाँ ज़फ़र भूल ही गए कि

मुझे मदरसे जाना है बहुत देर के बाद याद आया। जल्दी से खेल बन्द किया और बस्ता उठा कर चलने के लिए तैयार हुए अब शैतान ने दूसरी तरकीब सोची बोला, ज़फ़र अब तो बहुत देर हो गयी अब अगर मदरसे गए तो ख्वाह मख्वाह पिटोगे दोपहर का खाना तो तुम्हारे साथ है। घर भी जाने की ज़रूरत नहीं चलो बाग़ चलो वही खेलेंगे शाम को घर चले जाना ज़फ़र धोके में आ गया मदरसे जाने के बजाए शैतान के साथ हो लिया। दोनों बाग़ गए थोड़ी देर तफरीह की इतने में भूक लग गई दोनों ने मिल कर खाना खाया मगर खाना तो सिर्फ एक के लिए था नतीजा ये हुआ की पेट न भरा अब शैतान ने एक तरकीब सुझाई बोला उस बाग़ में बेर के कई दरख्त हैं चलो बेर तोड़ कर खाएंगे पेट भर जाएगा। ज़फ़र पहले झिझका फिर बोला ये तो चोरी है। मैं चोरी नहीं करूंगा। अच्छा तो तोड़ेंगे नहीं नीचे गिरे पड़े ही खा लेंगे उसमें कौन सा बड़ा गुनाह है शैतान बोला। भूक तो लगी ही थी मियाँ ज़फ़र तैयार हो गए बाग़ में जाकर गिरे पड़े बेर खाए मगर जब दरख्त पर निगाह गई लाल पीले बेर देखे तो मुंह में पानी आ गया शैतान ने कहा अच्छा तुम मत तोड़ना मैं ढेले फेंकता हूँ अभी बहुत से गिरेंगे तुम भी खा लेना थोड़ी देर ये हरकत की इतने में दूर से बाग़गान ने देखा दोनो को लल्कारा दोनो गिरते पड़ते भागे अब तो घर के अलावा कोई जगह नज़र न आई नाचार वक्त से पहले घर पहुँचे शैतान ने समझा दिया था कि अगर घर वाले जलद

आने का सबब पूछें तो कह देना मदरसे में आज जल्दी छुट्टी हो गई और उस्ताद अगर गैर हाजिरी का सबब पूछें तो बता देना कि कल मेरी तबियत खराब हो गई थी। चुनावे ज़फ़र ने यही किया शाम को बाग़बान ने ज़फ़र के अब्बा से बेर तोड़ने की शिकायत की तहकीक करने पर मालूम हुआ की ज़फ़र मदरसे भी नहीं गया था बाग़ में जा कर चोरी भी की और यहां आकर झूट भी बोला। चुनावे उन्होंने गुस्से में आकर ज़फ़र को मारा पीटा मास्टर साहब से शिकायत की। सब की नज़रों से ज़फ़र गिर गया। नतीजा ये हुआ की उनका दिल पढ़ने से उचाट हो गया। अब वही मदरसा जहां ज़फ़र की सब इज़्जत करते थे जहां वह वक्त से पहले पहुंचते थे अब उन्हें काट खाने लगा माँ बाप के कहने पर अगर मदरसे जाते भी तो पढ़ने में दिल ही नहीं लगता। इस तरह शैतान का हरबा चल गया और ज़फ़र का पढ़ना लिखना छूट गया। अब वह जाहिल बने घूमतें हैं और बुरे बुरे काम करतें हैं। शैतान खुश है कि एक को तो पढ़ना लिखना छुड़ाकर हमने सीधी राह से भटका दिया। आपने देखा कि कैसे ज़फ़र शैतान के बहकावे में आगया और बरबाद हो गया। इसलिए कहते हैं कि हमें शैतान के बहकावे में नहीं आना चाहिए। शैतान हमेशा इन्सान की बर्बादी ही चाहता है आबादी नहीं।

हिना

कक्षा - मुंशी ॥

सदविचार

ईश्वर के बाद केवल माता पिता का स्थान है।

सच का एक शब्द झूठ के हजारों शब्दों से बड़ा है।

जो समय को बरबाद करता है, समय उसी को बरबाद कर देता है।

उपदेश देने से नहीं बल्कि उन पर आचरण (अमल) करने से मनुष्य धर्मवान बनता है।

जिस काम को आत्मा गवाही न दे वह मत करो, वह पाप है।

दूसरों की भलाई करना अपनी भलाई करना है।

दीन दुखियों की सेवा करना ही सच्चे धर्म का पालन है।

अच्छा स्वभाव मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी है।

अकवाल जर्मी

हर आदमी को वही मिलेगा जिसकी वह नियत करेगा (बुखारी)

जो आदमी खुद को आलिम जाहिर करे वह जाहिल है। (हजरत उमर फारुक)

अनुभव सबसे अच्छा उस्ताद है। (हजरत सुफियान सूरी)

मुसीबत की जड़ इंसान की बातचीत है। (हजरत अबूबक्र)

अच्छी बात दूसरों को बताना ही खैरात है। (बुखारी)

ईमानदार व्यापारी का दर्जा आबिद से बलन्द है। (इमाम शाफई)

बुजुर्ग बनने से पहले इल्म हासिल कर लो। (हजरत उमर)

इंसान सबसे बड़ा आशिक अपनी जात का होता है। (इमाम गजाली)

जकात निकालने से माल कम नहीं होता। (हदीस)

अंतरिक्ष की बातें

चाँद पर उतरने वाले प्रथम अंतरिक्ष यात्री और यान का नाम— नील आर्मस्ट्रंग एडविन है, 21 जुलाई 1969 अपोलो-11 अमेरिका।

विश्व में अटलांटिक ऐसी जगह है जहाँ सूर्य हरा दिखाई देता है।

पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी 223860 मील है। पृथ्वी पर उत्तरीय ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव में 6 महीने का दिन और 6 महीने की रात होती है।

प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा (3-11 अप्रैल 1984) हैं।

चीन के सिंग नाइग चूँ शहर में पाँच सूर्य दिखाई देते हैं।

क्या आप जानती हैं?

भारत का प्रथम 100 प्रतिशत कम्प्यूटर शिक्षित गाँव चमरावट्टम (केरल) है।

जिराफ की जीभ का रंग नीला होता है। इसकी लम्बाई चालीस सेमी० होती है।

हाथी की सूँड में एक लाख मांसपेशियाँ पाई जाती हैं।

खनिज तेल का खनन करने वाली रिंग मशीन विश्व की सबसे बड़ी मशीन है।

दुनिया की सबसे तेज उड़ने वाली चिड़िया हक-हक है जो 190 मील प्रति घण्टा की रतार से उड़ सकती है।

जपान की नर्तकी चिड़िया का दिल सबसे बड़ा होता है।

ब्रजील के घने जंगलों में हरे रंग की कोयल पाई जाती है जिसके बदन से खुशबू झड़ती है।

शगुफ़ता अजीज, कक्षा मौलवी ॥

कम्प्यूटर

मन को करता मतवाला ।
 कम्प्यूटर है बहुत निराला ।
 यह तो एक अनिवार्य भाग है ।
 कम्प्यूटर का यह दिमाग है ।
 चलते इसमें है प्रोग्राम ।
 सी०पी०यू० है इसका नाम ।
 गतिविधियाँ सब दिखलाता है ।
 इसमें कुंजी बहुत समाई ।
 टाइप इसमें करना भाई ।
 यह चूहा है सिर्फ नाम का ।
 माउस होता बहुत काम का ।
 यह कर्माण्ड का ऑडीटर है ।
 इसके वश में कम्प्यूटर है ।
 कविता लेख लिखे जी भर के ।
 तुरन्त छाप लो इसे प्रिन्टर से ।
 नवयुग का कहलाता ट्यूटर ।
 बहुत काम का है कम्प्यूटर ।

जैसी मेहनत वैसा फल

मुर्गा कहता दिन चढ़ आया,
 चारों ओर उजाला छाया ।
 उठो-उठो खेतों में जाओ,
 धरती में सोना उपजाओ ।
 जो करता है जितना काम,
 उतना होता उसका नाम ।

शहनाज़ बानो
 कक्षा - 7

विज्ञान पहेलियाँ

प्र०-विश्व में सबसे पहले कागज़ कहा
 बना?
 उ०-चीन ।
 प्र०-कौन सी मछली आसमान में उड़ती
 है?
 उ०-मरनाई ।
 प्र०-किस नदी का जल गर्म होता है?
 उ०-नील नदी ।
 प्र०-विश्व में कौन सा देश है, जहाँ एक
 भी नदी नहीं है?
 उ०-सऊदी अरब ।
 प्र०-कौन सी मछली एक बार में 70
 लाख अण्डे देती है?
 उ०-कॉड ।

मो० आसिफ

ऐ लोगो जो ईमान लाए
 हो इंसाफ के अलमबरदार बनो
 और खुदा वास्ते के गवाह बनो
 अगरचे तुम्हारे इंसाफ और
 तुम्हारी गवाही की ज़द खुद
 तुम्हारी अपनी ज़ात पर या
 तुम्हारे वालिदैन और
 रिशतेदारों पर ही क्यों न
 पड़ती हो । फरीक-ए-मामला
 ख़्वाह मालदार हो या ग़रीब
 अल्लाह तुम से ज़्यादा उनका
 ख़ैरख़्वाह है ।

(सूर: निसा: 135)

अल्लाह की किताबें प्यारे नबी (सल्ल०)

यू तो अल्लाह तआला ने बहुत सी किताबें भेजीं, छोटी भी बड़ी भी। लेकिन उनमें से चार बड़ी किताबें बहुत मशहूर हैं।

1- **तौरत:** हजरत मूसा (अलै०) पर नाजिल हुई। यह किताब कुछ तो लोगों की गफलत और कुछ खराब लोगों की शरारत से बर्बाद हो गई।

2- **जबूर:** यह हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम लाए। धीरे धीरे नादानों ने उसे भी भुला दिया। शैतान के धोखे में आकर उस पर अमल करना छोड़ दिया। आखिरकार यह किताब भी जाये हो गई।

3- **इंजील:** हजरत ईसा (अलै०) पर नाजिल हुई। कुछ दिनों तक तो लोग उस पर चलते रहे तो बुरे लोगों ने अल्लाह की बातों के साथ साथ अपनी बातें भी मिला दीं जो पूरी किताब गडमड हो गई। उसका बहुत सा हिस्सा गुम भी कर दिया, इस प्रकार यह किताब भी जाये हो गई।

4- **कुरआन:** अल्लाह तआला की अंतिम किताब है। यह हमारे प्यारे पैगंबर हजरत मोहम्मद (सल्ल०) पर उतरी। इस की भाषा अरबी है। आजकल अस्ली हालत में अल्लाह की यही किताब मौजूद है। उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी अल्लाह ने अपने जिम्मे ली है। तुम्हारे घर में कुरआन है। तुम तो तिलावत करते होगे। जल्दी जल्दी इसका मतलब समझना भी सीख लो ताकि जिन्दगी बसर करने का तरीका तुम्हें मालूम हो और फिर दुनिया में इज्जत मिले और आखिरत में अल्लाह मियां खुश होकर तुम्हें जन्नत दें। आमीन।

सौबिया खातून

कक्षा 8

की प्यारी बातें

पाक साफ रहो, पाकी और सफाई आधा ईमान है।

इल्म हासिल करना फर्ज है।

मोमिन को अपने पड़ोसी की इज्जत करनी चाहिए।

तुम में से बेहतर वह व्यक्ति है जो कुरआन सीखे और दूसरों को सिखाए।

सच बोलो चाहे अपना ही नुकसान हो।

जो अपने लिए पसंद करो वही दूसरों के लिए पसंद करो।

अच्छा वही है जिसे उसके साथी अच्छा कहें।

बुरे साथी से तनहा रहना बेहतर है।

बड़ों का अदब, छोटों से प्यार, जो ऐसा ना करे वह हम में से नहीं।

सलाम किया करो, सलाम करने से मोहब्बत बढ़ती है।

माफ कर देना बड़ी बहादुरी है।

अल्लाह की खुशी माँ बाप की खुशी में है।

अल्लाह की नाराजगी माँ बाप की नाराजगी में है।

गुफरान

कक्षा 7

प्यारे नबी (सल्ल०) की प्यारी बातें

हजरत अबू हुसैरा रजि० से रिवायत है कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने फरमाया कि जो औरत अल्लाह और आखिरत पर ईमान लाई हो उसको जायज नहीं कि बगैर महरम के एक रात-दिन की दूरी तय करे। (बुखारी, मुस्लिम) हजरत इब्ने अब्बास रजि० कहते हैं कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया कि मर्द किसी औरत के पास तन्हा न हो, उसके साथ महरम जरूर हो और बगैर महरम के सफर न करे। एक सहाबी रजि० ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी औरत हज को चली गई और मेरा नाम जंग में जाने के लिये लिखा गया है। आप (सल्ल०) ने फरमाया कि तुम अपनी बीवी के साथ जाकर हज करो। (बुखारी, मुस्लिम)

हजरत उमामा रजि० कहते हैं कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया "कुरआन पढ़ा करो ये कयामत के दिन अपने पढ़ने वालों की सिफारिश करेगा। (मुस्लिम)

हजरत नव्वास बिन समआन रजि० कहते हैं कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया कि कुरआन और वह लोग जो दुनिया में इसपर अमल करते थे, कयामत के दिन हाजिर किये जायेंगे, सूर: बकरा और आले इमरान आगे-आगे होंगी। यह दोनों अपने पढ़ने वाले के लिये सिफारिश करेंगी। (मुस्लिम)

हजरत उस्मान बिन अफान रजि० कहते हैं कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया कि तुममें सबसे अच्छा आदमी वह है जो कुरआन पढ़े और पढ़ाये। (मुस्लिम)

हजरत आयशा रजि० कहती हैं कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा जो आदमी कुरआन को समझ कर पढ़ता है जो वह बुजुर्ग फरिशातों के साथ होगा और जो अटक अटक कर मुश्किल से पढ़ता है उसके लिये दो गुना सवाब है। (बुखारी, मुस्लिम)

हजरत उमर बिन खत्ताब रजि० कहते

हैं कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि अल्लाह इस ग्रन्थ के कारण कुछ लोगों के दर्जे बुलन्द करता है और कुछ लोगों को अपमानित करता है। (मुस्लिम)

मो० सईम, अध्यापक तहतानिया नबी करीम (सल्ल०) की प्यारी बातें:

1- **रास्ती:** सच्चाई पर कायम रहो, सच्चाई में निजात है।

2- **अमानत दारी:** जिस शख्स में अमानतदारी नहीं उस में ईमान नहीं।

3- **परहेजगारी:** खुदा के नजदीक बाइज्जत वह है जो सबसे ज्यादा परहेजगार है।

4- **सादगी:** ऐश पसन्दी से बचो, अल्लाह के बंदे ऐश पसंद नहीं होते।

5- **तवक्कुल:** सिर्फ खुदा पर भरोसा करो, लेकिन अपनी कोशिश और मेहनत को ना छोड़ो।

6- **रहमदिली:** तुम जमीन वालों पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।

7- **इआनत:** अपने भाइयों की मदद करना एक महीने किसी मस्जिद में ऐतकाफ करने से अफजल है।

8- **सुलह:** सुलह करना नमाज और सदका से बहतर है।

9- **अफव व हिल्म:** तुम में ज्यादा ताकतवर वह है जो गुस्से में अपने आपको काबू में रखे, और कुदरत होते हुए बदला लेने से दरगुजर करे।

10- **तलाश:** खुदा की तलाश में भटकते फिरने की कोई जरूरत नहीं, देखने की नजर से देखो खुदा शहरग से ज्यादा करीब तुम को मिलेगा।

11- **बुजुर्गी:** खुदा के बन्दों में वही शख्स बुजुर्ग है जो खुदा को मोहब्बत की नजर से देखता है।

मंतशा बानो, कक्षा 7

कंजूसी से जान गयी

मक्खीचूस गीदड़

जंगल में एक गीदड़ था। वह बड़ा कंजूस था। क्योंकि वह एक जगली जीव था। इस लिए हम रूपये पैसे की बात नहीं कर रहे हैं। वह कंजूसी अपने शिकार में करता था। जितने शिकार में दूसरे गीदड़ काम चलाते, वह उतने ही शिकार को सात दिन तक खींचता। जैसे उसने एक खरगोश का शिकार किया पहले दिन वह एक कान खाता। बाकी बचाकर रखता दूसरे दिन दूसरा कान खाता ठीक वैसे ही जैसे कंजूस व्यक्ति पैसा—घिस घिसकर खर्च करता है। गीदड़ अपने पेट की कंजूसी करता। इस चक्कर में वह प्रायः भूखा तथा दुर्बल भी हो जाता। एक बार उसे एक मरा हुआ बारह सिंगा हिरण मिला। वह उसे खींच कर अपनी मांद में ले गया। उसने पहले हिरण के सींग खाने का फैसला किया। ताकि मॉस बचा रहे। कई दिनों तक वह केवल सींग ही चबाता रहा इसी बीच हिरण का मॉस सड़ गया और वह केवल गिद्धों के खाने लायक रह गया। इस प्रकार गीदड़ प्रायः हँसी का पात्र बनता, जब वह बाहर निकलता तो दूसरे जीव उसका मरियल सा शरीर देखते और कहते “वह देखो मक्खीचूस जा रहा है।” पर वह परवाह न करता। कंजूसों में यह आदत होती ही है। कंजूसों की अपने घर में भी खिल्ली उड़ती है। पर वह उसे अनसुना कर देते हैं। उसी वन में एक दिन एक शिकारी शिकार की तलाश में आया। उसने एक सुअर को देखा और निशाना लगाकर तीर छोड़ा। तीर जंगली सुअर की कमर में लगा

और सीधा शरीर में घुसा। क्रोधित सुअर शिकारी की ओर दौड़ा और उसने खच्च से अपने नुकीले दाँत शिकारी के पेट में घोंप दिये। शिकार और शिकारी दोनों मर गये। तभी वहाँ मक्खीचूस गीदड़ आ गया। वह खुशी से उछल पड़ा। शिकारी व सुअर के मॉस को कम से कम दो महीने चलाना है। उसने हिसाब लगाया। “रोज थोड़ा थोड़ा खॉऊंगा” वह बोला। तभी उसकी नज़र पास ही पड़े धनुष पर पड़ी। उसने धनुष को सूँघा। धनुष की डोर कौनों पर चमड़ी की पट्टी से लकड़ी बंधी थी। उसने सोचा—“आज तो इस चमड़ी की पट्टी को खा कर काम चलाऊंगा। मॉस खर्च नहीं करूंगा। पूरा बचा लुंगा” ऐसा सोचकर वह धनुष का कोना मुँह में डाल पट्टी काटने लगा। ज्यों ही पट्टी कटी और डोर छूटी और धनुष की लकड़ी चट से सीधी हो गई। धनुष का कोना चटाक से गीदड़ के तालू में लगा और उसे चीरता हुआ उसकी नाक तोड़कर बाहर निकला। मक्खीचूस गीदड़ वहीं मर गया।

सीख—अधिक कंजूसी का परिणाम अच्छा नहीं होता।

पिंकी

कक्षा— 5

मदरसा सलाम ओरियन्टल कालेज

मिस्वाक की अहमियत

हजरत मोहम्मद (सल्ल०) का मामूल था कि आप मिस्वाक कसरत से करते और दूसरों को मिस्वाक करने की ताकीद भी फरमाते और आप का आखिरी अमल भी मिस्वाक करना ही था। आज रिसर्च से यह साबित है कि मनुष्य जो कुछ खाता है वह मुंह में पलाज्मा बनाती है। जो कुल्ली करने से भी साफ नहीं होता। दिन के समय जो हरकतें हम करते हैं जैसे बोलना, खाना, पानी पीना आदि यह सब हरकतें पलाज्मा को अपना काम करने का मौका नहीं मिलता और रात के समय जब मुंह बंद रहता है तो वह दाँतों को गलाने लगता है। इसलिए हमारे दांत ज्यादातर रात को खराब होते हैं।

गुरु नानक के बारे प्रसिद्ध है कि वह मिस्वाक हाथ में रखते थे और कहा करते थे कि या तो यह लकड़ी लो या बीमारी ले लो। वैसे हकीम इकबाल 'अखबार जहां' में लिखते हैं कि उनके पास एक रोगी आया जिसके दिल की झिल्लियों में पस भरा हुआ था उसका ऑपरेशन भी किया गया लेकिन फिर भी वह रोग न गया। तो जब इकबाल साहब ने देखा तो पता चला कि उस व्यक्ति के मसूढ़ों में पस भरा हुआ था। जो दिल को नुकसान पहुँचा रहा था। फिर दाँतों के इलाज के लिए मिस्वाक करने की राय दी गई। जिससे उस व्यक्ति को फाइदा पहुँचा।

दाँतों की बीमारी और मसूढ़ों के पस से आंख, नाक, कान, दिल, दिमाग सब प्रभावित होते हैं। और टॉसिल रोगियों को भी इससे बहुत फायदा पहुँचता है।

मिस्वाक हमें कई पेड़ों से मिलती है। जैसे कीकर, नीम, और पीलू से भी। हजरत अली का कौल है कि मिस्वाक से दिमाग तेज होता है। मिस्वाक के अंदर फॉस्फोरस होता है। जिस जमीन में कैल्शियम और पोटेशियम अधिक होता है वहाँ पीलू के पेड़ पाए जाते हैं और बाज कब्रिस्तान की मिट्टी में कैल्शियम और फास्फोरस ज्यादा होता है यही कारण है कि पीलू के पेड़ यहां अधिक पाए जाते हैं। और यह बात भी सामने आई है कि अगर पीलू की मिस्वाक को ताजा और नर्म हालत में चबाया जाए तो इससे एक पदार्थ निकलता है जो जरासीमों की पैदाइश को रोकता है।

सबा रशीद
कक्षा ग्यारह II

जो गुस्से को पी जाते हैं
और दूसरों के कुसूर को मआफ़
कर देते हैं ऐसे नेक लोग अल्लाह
को बहुत पसंद हैं।

(सूर: आले इम्रान: 134)

क्या आप जानते हैं बिजली क्यों गरती है?

वैज्ञानिकों के अनुसार आसमान पर छाये हुए बादलों में बर्फी कुवत हर वक्त मौजूद रहती है। इन बादलों के असर से जमीन पर मौजूद दीगर चीजों जैसे इमारत या दरख्तों पर मुखतल्फि प्रकार की बर्फी कुवत पैदा हो जाती है। अब यह दो मुखाल्फि कूवतें एक दूसरे से मिलने के लिए तैयार हो जाती है। मगर इन दो बर्फी कुवतों के बीच हवा एक दूसरे को अलग रखती है। और मिलने नहीं देती। मगर जिस समय बादलों की शक्ति में तीव्रता पैदा हो जाती है तो वह जमीन या जमीन की दूसरी चीजों की ओर लपकती है और पृथ्वी के अन्दर जज्ब हो जाती है। जिस जगह पर बिजली गिरती है वह जगह तबाह व बरबाद हो जाती है। ऐसी स्थिति को बिजली गिरना कहते हैं।

बिजली गिरने के प्रकोप से सुरक्षित रहने के लिए कुरआन की निम्नलिखित आयत पढ़ी जाती है।

يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ

मोहम्मद हस्सान

कक्षा 6

ढोंगी बिल्ला

किसी समय एक पेड़ के नीचे एक तीतर रहता था। तो वह एक दिन चुगने के लिये जंगल में चला गया। उसी समय एक खरगोश उस पेड़ के पास आया और उसने वहीं अपना घोंसला बनाकर रहने लगा। जब तीतर चुगकर वापस लौटता है तो वह खरगोश को देख कर उसने कहा— तुम यहां क्या कर रहे हो। खरगोश ने उत्तर दिया मैं इस पेड़ के नीचे घोंसला बना कर रहता हूं। तीतर ने कहा मैं यहां रहता था और यह मेरी जगह है। उन दोनों में बात चीत हुई और दोनों लडने लगे। लड़ते लड़ते दोनों बिल्ले का पास पहुंचे तो बिल्ला ऊंचे स्थान पर बैठ कर माला जप रहा था। उन दोनों ने बिल्ले से कहा तो बिल्ले ने जवाब दिया मुझे सुनाई नहीं देता। पास में आकर कहो। जब खरगोश और तीतर उसके पास पहुंचे तो उसने फौरन अपने दोनों आगे पैर एक तीतर की पीठ पर रखा और दूसर खरगोश की पीठ पर। तीतर का एक पंख उसने तोड़ दिया जिससे तीतर उड़ नहीं पा रहा था। और खरगोश को मार कर खा गया। तीतर अपनी जान बचाने के लिये भागा मगर बिल्ले ने उसे भी दौड़ा कर मार का खा लिया।

सलोनी राव

कक्षा 9

नन्ही चींटी

नन्ही चींटी कण-2 बिनकर
अपना घर भर लेती है
फूल-2 पर डोल-2 कर
मधूमक्खी रस लेती है।
प्रतिदिन सूरज जाग-2 कर
हमको दिन दे जाता है
रात-2 भर चल कर चन्दा
सबको राह दिखाता है
जो चलते हैं, श्रम करते हैं
वही बड़े बन जाते हैं।
मेहन के बल पर दुनिया में
नाम अमर कर जाते हैं।

तुम क्या बनना चाहोगे

नन्हे मुन्ने भोले बच्चो
तुम क्या बनना चाहोगे
वीर बनेंगे धीर बनेंगे
सागर से गम्भीर बनेंगे
भारत मां की रक्षा के हित
तन-मन से बलि जायेंगे
दन-दन-दन जब चले गोलियां
सीने पर हंस खायेंगे
अड़े रहेंगे खड़े रहेंगे
सीना ताने डटे रहेंगे
पर्वत भी गिर पड़े राह में
ठोकर से ठुकरायेंगे
आग बवण्डर आंधी पानी
सभी झेल मुस्कायेंगे
बड़े चलेंगे बड़े चलेंगे
अपने पथ पर बड़े चलेंगे।

सुबह सूरज कहां से आता

सुबह कहां से आता सूरज
कहां शाम को जाता सूरज
घर है इसका जहां कहां
यह अपनी रात बिताता है
अमृत बरसाता किरणों से
चांद कहां से आता है
कैसे प्रतिदिन तारों के दल
से अम्बर भर जाता है
इतना सुन्दार इन्द्रधनुष है
कैसे बनता मिटता है
किसी तरह मुझ को ऐसा
क्या धनुष नहीं मिल सकता है
आ जाते हैं कहां-2 से
पर्वत जैसे ये बादल
बरसाता आकाश कहां से
रिमझिम-2 इतना जल
आती है यह नदी कहां से
चली कहां को जाती है
कौन परी डाली-2 पर
नूतन के फूल सजाती है।

कल्पना मोर्या

कक्षा-11

कसम का गलत इस्तेमाल गुनाह है

अल्लाह तआला फरमाते हैं— ऐ लोगो! अल्लाह के नाम को अपनी कसम खाने का निशाना न बनाओ।

कसम खाना वास्तव में एक तरह की गवाही देना है। किसी बात पर खुदा की कसम खाने का मतलब यह हुआ कि हम जो बात कह रहे हैं उस पर अल्लाह को गवाह बना रहे हैं। अल्लाह को किसी मामले में गवाह बनाना कोई हंसी खेल नहीं है इसलिए सोच समझ कर कसम खानी चाहिए। बात बात पर कसम खाना बुरी बात है। अल्लाह ऐसे आदमी से नाखुश होते हैं। ज्यादा कसमें खाने वाला आदमी ऐतबार खो देता है। कुरआन ने ऐसे आदमी को जलील कहा और यह भी बता दिया कि ऐसे की बात का ऐतबार न करो।

झूठी कसम खाकर आपस में धोखा देने का जरिया बनाना और कसमों द्वारा गलत बातों का यकीन दिलाना जहन्नम में ले जाने वाला अमल है।

हम सभी को इस बुरी आदत से बचना चाहिए।

अल्लाह तआला हम सब को नेक और अच्छा इंसान बनाए। आमीन

उजमा बानो

कक्षा 8

दशम न्याय

एक बार दस आदमी हरिद्वार के पास के गाँव से चंडी देवी जाने के लिये हरिद्वार पहुँचे। गंगा उन्होंने एक साथ तैर कर पार की। जब उस पार पहुँचे तो यह जानने के लिये कि सब के सब पार आ गये इन लोगों ने गिनना शुरू किया। एक ने गिना फिर दूसरे ने फिर तीसरे ने। हर बार गिनने में नौ ही निलते। फिर दसों ने बारी बारी से गिना और उत्तर नौ ही निकला। कारण यह था कि जो भी आदमी गिनता था वह बाकी नौ लोगों को तो गिनता पर अपने आपको भूल जाता। थोड़ी देर बाद उन लोगों ने यह मान लिया कि एक आदमी गंगा में डूब का मर गया। सब बहुत दुखी हो गये और वहीं बैठ कर रोने पीटने लगे। कुछ देर बाद एक साधू वहाँ से गुजरा। इतने सारे लोगों को रोता पीटता देख वह उन लोगों के पास गया। पास पहुँच कर लोगों से रोने और दुखी होने का कारण पूछा। उन में से एक ने कहा कि हम लोग दस आदमी चंडी देवी के दर्शन करने गाँव से चले थे और गंगा पार करते वक्त हम में से एक डूब गया। यह कह कर वे सब फिर रोने लगे। साधू ने मन ही मन गिना तो वे दस थे। उसने उन लोगों से कहा कि एक बार फिर से गिनती करो। उन में से एक ने खड़े होकर नौ तक गिना। इस पर साधू ने का कि तुम ही दसवें आदमी हो। यह जानकर सब खुश हो गये और साधू की धन्यवाद देकर चंडी देवी के दर्शन करने आगे चल दिये। मूर्खता औ अज्ञान ही सारे दुखों की जड़ है।

अब्दुल वहाब

कक्षा-8

उस्ताद का अदब

उस्ताद की कद्रदानी इल्म में विकास का कारण होती है। शिक्षक का दर्जा माता पिता की तरह बड़ा होता है। शिक्षक हमें पढ़ना लिखना सिखाकर हमें अच्छा इंसान और अच्छा नागरिक बनाते हैं। उस्ताद हमारे आध्यात्मिक पिता होते हैं जो हमारे सोच व फिक्र को सालेह बनाकर हम को संवारते हैं।

शिक्षक का अदब करना अनिवार्य है। उस्ताद की बात मानना, उनकी आज्ञा का पालन करना, जो बात मालूम न हो उस को उस्ताद से मालूम करना, हमारे इल्म व अमल में तरक्की का जरिया है। उस्ताद के सामने तेज बोलना, शोर मचाना, उनका दिया हुआ काम न करना, बे अदबी और बदतहजीबी है। इससे हमारा अपना ही नुकसान होगा। हमारी इल्मी तरक्की रुक जाएगी।

यह बात अनुभव से साबित है कि पढ़ने के जमाने में जिन बच्चों ने उस्ताद का अदब किया उनकी बात मानी वह सफल और समृद्ध हुए, विकास करते गए और जिन लोगों ने उस्ताद की बे अदबी की उनको नाराज किया, बात नहीं मानी वे कहीं के नहीं रहे, न कुछ बन पाए।

इसलिए प्यारे बच्चो! हम को उस्ताद की शकल में जो अल्लाह की नेमत मिली है उसकी कद्र करें उनसे इल्म व अदब, तालीम व तर्बियत हासिल करके दुनिया व आखिरत में कामियाब हों।

नाजिया बानो

कक्षा 8

बच्चों चलो मदरसे

समय हुआ अब चलो मदरसे
निकलो घर से निकलो घर से
लिखना सीखो पढ़ना सीखो
दिन-दिन आगे पढ़ना सीखो
बुरे काम के पास न जाओ
सीधा रास्ता चलना सीखो
सबसे मेल मुहब्बत करना सीखो
सब के दिल में बसना सीखो
निकलो घर से निकलो घर से
समय हुआ अब चलो मदरसे

अफरोज बानो

कक्षा 7

पाँच दुआएं रद नहीं होतीं

- 1- हाजी की दुआ यहां तक कि वह वापस नहीं आ जाता।
- 2- मुजाहिद की दुआ यहां तक कि वह वापस आ जाए।
- 3- मज़लूम की दुआ यहां तक कि उसकी फरियाद सुनने में आये।
- 4- मरीज़ की दुआ यहां तक कि वह सेहतयाब हो जाये।
- 5- भाई की दुआ अपने भाई के लिये उसकी ग़ैर मौजूदगी में।

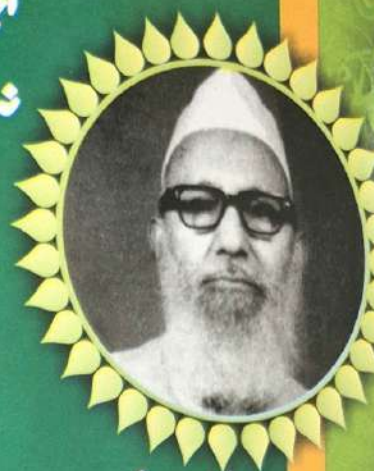
इनमें सब से पहले कुबूल होने वाली दुआ भाई की दुआ अपने भाई के लिये है।

(हदीस नबवी)

اچانے ان کی یادوں کے ہمارے ساتھ رہے
نہ جانے کس گھڑی میں زندگی کی شام ہو جائے



مولانا نجم الدین



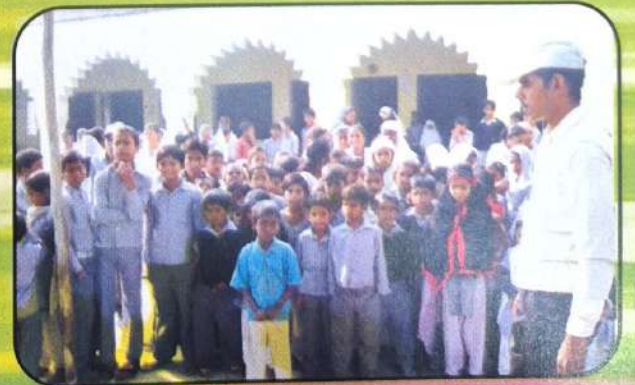
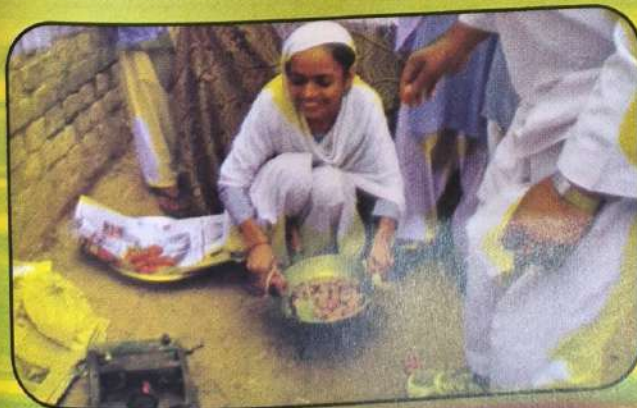
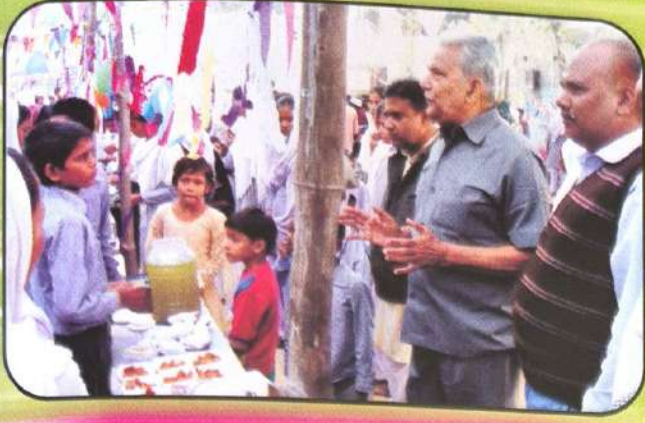
مولانا عبدالسلام زیدی

راہِ نما

مدرسہ کے اساتذہ اور طلبہ و طالبات کی جانب سے اہل وطن کو ایک ادبی تحفہ

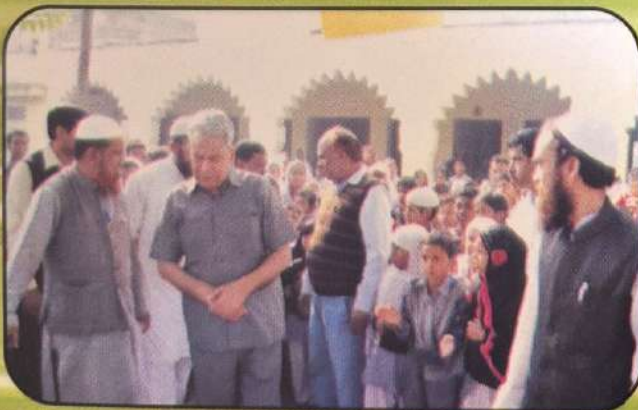
Madrasa Salam Oriental College

Thulendi, Bachharawan, Raebareli





مدرسہ کی استانی میمونہ خاتون





سالانہ جلسے میں قوالی پیش کرتے طلباء



پھلوں کا مشاعرہ پیش کرتے طلباء



سالانہ جلسے میں ادبی ناولٹ پیش کرتے طلباء



ایک دن کارا جانا ٹک پیش کرتے ہوئے بچے



ناولٹ پیش کرتے ہوئے بچے



ناولٹ کا ایک منظر



جلسہ سیرت النبیؐ کا ایک منظر



سالانہ جلسہ میں پروپوں کا رول ادا کرتی ہوئی بچیاں





سوسائٹی کے ذمہ داران اور پرنسپل مدرسہ



آراماچو کیشنل سوسائٹی کے چیئرمین کی آمد کا منظر



الپ سنگھ ٹیک اوجیکارو ایس پوگرام میں اسٹیج پر پرنسپل (بچہ میں) ساتھ میں ہیں استاد عالیہ مولانا حیدر علی (بائیں) اور محمد ریحان (دائیں)



پہنچ ڈی کی ڈگری تفویض کے جانے کے موقع پر ڈاکٹر احمد عدیل



مہمان خصوصی محترمہ سیتا دیوی شیلچ آلیتی بھوناسرکا غیر مقدم کرتے ہوئے اساتذہ و طلبہ



سالانہ جلسہ کے موقع پر مدرسہ کا اسٹاف



پکنک کا مزہ لیتے ہوئے مدرسہ کے بچے



ڈاکٹر رام منوہر لولیا کے مجسمہ کے سامنے پوز دیتے طلباء اور مدرسہ کے اسٹاف

2014-15

راہِ نما

مدرسہ کے اساتذہ اور طلبہ و طالبات کی جانب سے اہل وطن کو ایک انمول تحفہ

سرپرست

ڈاکٹر بلال احمد

صدر سوسائٹی

نائب مدیر

احمد مجیب پرنسپل مدرسہ
احمد فیضی سینئر استاد
حیدر علی ندوی، سینئر استاد

مدیر اعلیٰ

ڈاکٹر محمد مسلم قدوانی

منیجر مدرسہ

فہرست

صفحہ نمبر	بذریعہ	مضامین	نمبر شمار
4		ترانہ مدرسہ	1
5	از صدر	صدر کے قلم سے	2
6	ڈی ایم او (ضلع اقلیتی فلاح و بہبود افسر)	پیغام	3
7	از منیجر	پیغام	4
11	از پرنسپل	پیغام	5
12	احمد فیضی، استاد عالیہ	حضرت مولانا علاء الدین کا سانحہ ارتحال	6
13	سید سہیل حسنی	ہمارا سالانہ جلسہ	7
14	حیدر علی ندوی	دنیا کا عظیم تحفہ: والدین	8
16	احمد مجیب	جیسا سوچو گے ویسے بنو گے	9
18	صبیحہ پروین، استانی فوقانیہ	دنیا کا مثالی قائد و رہنما	10
20	محمد نسیم، استاد تختانیہ	فیشن عورت کی فطری ضرورت ہے	11
21	نسیم اکرم، استاد تختانیہ	علم انسان کو سنوارتا ہے	12
22	ریحانہ بیگم، استانی تختانیہ	بڑوں کا ادب و بات چیت کا طریقہ	13
23	شمشاد علی، استاد جدید مضامین	بانی مدرسہ	14
23	محمد ریحان، استاد تختانیہ	طلباء کے لئے	15
24		علمی شخصیت اور فکری بصیرت	16
27		زندہ سو تو جائیں	17
31		پسندیدہ اشعار	18
32	محمد غفران، درجہ 7	ایمان کی جڑ ایک خدا کا یقین	19
32		اے خدا اے خدا شکر و احسان ترا	20
33		غزل: ذہن کے پکے	21
33	رشدہ فاطمہ انصاری	ہمارا اسکول	22
34		جب کوئی کسی کی نقل اتار کر.....	23
34	سہیلہ بانو	میرا مدرسہ	24

34	کماری سنجنا، درجہ ۷	کویتا: میرے مہی پاپا	۲۵
35	شگفتہ بانو، منشی اول	بلی خالہ کی شادی	۲۶
35		میوہ کا گودام	۲۷
35	اکرم رضا، درجہ ۶	پسندیدہ شاعری	۲۸
36	سعدیہ بانو، مولوی دوم	بدنیتی کا نتیجہ، سچی کہانی قرآن کی زبانی	۲۹
37	شہناز بانو، منشی دوم	خطرہ کی بات	۳۰
37	” ” ”	پانچ چیزوں کو بھول کر.....	۳۱
38	ثریا بانو، مولوی دوم	دعا بھی سوچ سمجھ کر مانگنی چاہئے	۳۲
39	درخشاں حیات، مولوی اول	ڈاکٹر صاحب سے میری پہلی ملاقات (انٹرویو)	۳۳
42	کلینا موریہ	جیون کے رنگ تیاروں کے سنگ	۳۴
43	شاپروین، منشی دوم	موضع تھلیڈی کی ابھرتی شخصیت	۳۵
44		سابق طالبہ شاپروین کے تاثرات	۳۶
45		سابق طالبہ رانہ پروین کے تاثرات	۳۷
46	صالحہ پروین، درجہ منشی اول	علم ایک روشنی اور جہالت تاریکی ہے	۳۸
47	خوشنما، مولوی دوم	چغل خور جنت میں داخل نہ ہوگا	۳۹
47		نو مولود بچے کو ماں کا تحفہ	۴۰
48	شائفہ خاتون، مولوی دوم	غار کاراز	۴۱
49	محمد کلیم، منشی دوم	ہمارے ملک پر قدرت کے احسانات	۴۲
50	ثناء پروین، منشی دوم	ایماندار چور	۴۳
51		فقیری نسخہ	۴۴
52		بیربل کی چالاک	۴۵
51	شمع بانو، منشی دوم	زکوٰۃ کا سماجی پہلو	۴۶
53	عائشہ عزیز، درجہ ۵	محنت کا پھل	۴۷
53	پوجا کماری	علم کی باتیں	۴۸
54	پروین بانو، منشی دوم	جادوگر ایمان لے آئے	۴۹
55	میمونہ خاتون، استانی فوقانیہ	غیبت	۵۰
56		کنجوس بڑھیا اور فوجی	۵۱

56	وافیہ، درجہ نشی اول	کیا آپ جانتے ہیں پھلوں کا بادشاہ کون ہے؟	۵۲
56		ریچھ (بھالو)	۵۳
57	شبینہ بانو، مولوی دوم	سمجھدار کسان نے سمجھایا اتحاد میں طاقت ہے	۵۴
57		ہم کو کیسا بننا چاہئے	۵۵
58	یا سمین بانو، درجہ ۷	آلورام جیسے مت بنو	۵۶
58	روما پروین، مولوی دوم	اونچے لوگوں کی اونچی بات	۵۷
59	افسانہ، درجہ نشی دوم	سب سے بڑا سچ تو حید ہے	۵۸
60	حتا بانو، درجہ نشی دوم	شیطان کی چال	۵۹
62	سابیہ، درجہ ۶	سب سے غریب آدمی	۶۰
63	شگفتہ عزیز، سابق طالبہ	اقوال زریں	۶۱
64		کمپیوٹر	۶۲
64	شہناز، درجہ ۷	جیسی محنت ویسا پھل	۶۳
64	محمد آصف، درجہ ۵	سائنسی پہیلیاں	۶۴
65	عربیہ عزیز، سابق طالبہ	نو مولود بچے کو پہلا لفظ اللہ سکھانے کا اجر	۶۵
65	ثوبیہ خاتون، درجہ ۸	اللہ کی کتابیں	۶۶
67	من تشاء، نشی اول	نبی کریم کی پیاری باتیں	۶۷
68	شمو بانو، نشی دوم	کیا آپ جانتے ہیں؟	۶۸
69	پنگی، درجہ ۵	کبھی چوس گیدڑ	۶۹
70		مسواک کے فائدے	۷۰
71		کیا آپ جانتے ہیں بجلی کیوں گرتی ہے؟	۷۱
71	سلونی راوت، درجہ گیارہ	ڈھونگی بلا	۷۲
72	کلینا موریہ، درجہ دوم	ننھی چیونٹی	۷۳
72	عظمی، درجہ ۸	قسم کا غلط استعمال.....	۷۴
73	عبدالوہاب، درجہ ۸	دشمن نیائے	۷۵
73	نازیہ بانو، درجہ ۸	استاد کا ادب	۷۶
74	افروز بانو	بچوں چلو مدر سے	۷۷
74		ہم اس کا گن گان کریں گے	۷۸

حیدر علی ندوی

ترانہ مدرسہ

اے مدرسہ سلام، اے مدرسہ سلام

ہندو مسلم کی آنکھوں کا تارا ہے تو
علم کا ایک روشن منارہ ہے تو
علم کی روشنی کا سہارا ہے تو
سب کچھ حاضر ہے تیرے لئے اے سلام

اے مدرسہ سلام اے مدرسہ سلام

اے خدا تو مدرسے کو خوشحال کر
اس کی کلیوں کو علم و ہنر سے تو بھر
ہر بشر کو یہاں کے ذی کردار کر
کہہ رہی ہے یہی روح عبدالسلام

اے مدرسہ سلام اے مدرسہ سلام

دل کی دھڑکن کہے اے مدرسہ سلام
ملک کو ہو ضرورت تیری اے سلام
آج حیدر کے دل سے یہ نکلا کلام
جامعہ اب بنے یہ مدرسہ سلام

اے مدرسہ سلام اے مدرسہ سلام

ہے دلوں میں ہمارے ترا احترام

علم کی روشنی ہے مدرسہ سلام
ہے دلوں میں ہمارے تیرا احترام
علمی دنیا میں ہو تیرا اعلیٰ مقام

اے مدرسہ سلام اے مدرسہ سلام

علم کی روشنی کا تو مرکز بنے
قوم کا تو سدا یوں ہی رہبر بنے
کارواں علم کا یوں ہی چلتا رہے
فیض حاصل کرے تجھ سے ہر خاص و عام

اے مدرسہ سلام اے مدرسہ سلام

مشعلیں علم کی اب یہاں سے جلیں
ظلمتیں جس سے دم سے نہ باقی رہیں
تیرے دامن میں ہم سب کو خوشیاں ملیں
ہوئے روشن تھولینڈی کا دنیا میں نام

اے مدرسہ سلام اے مدرسہ سلام

تو نے علم و ادب سے سجایا ہمیں
اور تاریکیوں سے بچایا ہمیں
پیار سے تو نے رہنا سکھایا ہمیں
تاقیامت رہے یوں ہی تیرا قیام

اے مدرسہ سلام اے مدرسہ سلام



پیغام

مجھے یہ جان کر بڑی خوشی ہو رہی ہے کہ مدرسہ سلام اور نیشنل کالج تھولینڈی رائے بریلی کی دوسری سالانہ میگزین ”راہ نما“ شائع ہو رہی ہے۔ میں میگزین میں حصہ لینے والے طلباء و طالبات اور اساتذہ کو مبارکباد دیتی ہوں کہ آپ لوگوں نے ایک تخلیقی کام کا آغاز کر کے سماج کو بالخصوص تعلیم یافتہ طبقے کو ایک نئی سمت دی ہے۔ میں مدرسہ سلام اور نیشنل کالج تھولینڈی کے اس تخلیقی کام کی تعریف کرتی ہوں۔ مجھے مکمل امید ہے کہ مذکورہ میگزین طلباء اور قارئین کی رہنمائی کرنے میں معاون و فائدہ مند ثابت ہوگی۔ میگزین میں شامل مضامین، غزلیں، لطائف اور عظیم شخصیات کے اقوال طلباء و طالبات کی ہمہ جہت ترقی میں معاون ثابت ہوگی۔

میں مدرسے کے مینیجر پرنسپل اور اساتذہ کو مبارکباد پیش کرتی ہوں کہ آپ نے میگزین ”راہ نما“ کے ذریعے معاشرے میں ایک تخلیقی کام کیا ہے۔

مخلص

سینتا دیوی

(سینتا دیوی)

ضلع اقلیتی بہبود افسر

رائے بریلی۔

جہالت دور ہو جائے یہی پیغام ہے میرا
مڑ کر میری آنکھوں نے کبھی میل کا پتھر نہیں دیکھا

اندھیرے کو اجالے سے بدلنا کام ہے میرا
جس دن سے چلا ہوں میری منزل پہ نظر ہے

پیغام

از نیچر

مدرسہ سلام اور نیشنل کالج

ماضی حال اور مستقبل کے آئینہ میں

دراز تک علمی خدمات انجام دیتا رہا۔ والد صاحب خاموشی سے اس کی سرپرستی فرماتے رہے اور اسے برابر ترقی کے راستے پر گامزن کرنے کی فکریں کرتے رہے۔ والد صاحب کے انتقال کے بعد مولانا کے رفقاء، دوستوں اور



حضرات قارئین کرام! آج جس مدرسہ سلام اور نیشنل کالج کی علمی ادبی میگزین آپ کے ہاتھوں میں ہے۔ وہ بہت سے نشیب و فراز سے گزر کر یہاں تک پہنچا ہے۔ اس میں اللہ کا خصوصی مدد شامل حال رہی ہے۔ ملت کے

گاؤں کے لوگوں کی یہی رائے ہوئی کہ مولانا جس مکتب کو چالیس سال سے باقاعدہ چلاتے رہے اور جس چراغ کو روشن کیا ہے اسے بجھنے نہ دیا جائے بلکہ اسے ایک ایسی زندہ مشنری بنا دیا جائے جو مولانا کے کام کے تسلسل کو آگے بڑھا سکے۔ حضرت مولانا سید ابوالحسن علی میاں کی بھی یہی رائے تھی۔ چنانچہ اسی مقصد کو سامنے رکھ کر قصبہ کے مسلمانوں اور مولانا مرحوم کے دوستوں، شاگردوں نے مولانا کے مشن کو زندہ جاوید کرنے کے لئے مولانا عبدالسلام قدوسی میموریل سوسائٹی یوپی تھولینڈی کے نام سے رجسٹرڈ کرائی اور رفتہ رفتہ مکتب درجہ آٹھ تک پہنچ گیا اور ندوۃ العلماء معہد کا نصاب جزوی ترمیم کے ساتھ رائج کیا گیا۔

ہمدردوں کا تعاون، خاندان اور گاؤں کے باشعور، علم دوست حضرات کی ناقابل فراموش خدمات، انکی فکریں، ان کی کاوشیں اور انتھک کوششیں قدم قدم پر مادر علمی کا ساتھ دیتی رہیں جس کا نتیجہ ہے کہ آج مدرسہ علاقے کا ایک اعلیٰ و معیاری ادارہ بن کر ابھر رہا ہے اور بلا تفریق مذہب و ملت سب کی علمی تشنگی دور کر رہا ہے۔

مولانا عبدالسلام ندوی و مولانا نجم الدین اور انکے رفقاء نے جس علمی شمع کو ایک نہایت پسماندہ علاقے میں روشن کیا تھا آج وہ مہر منور بن کر علمی دنیا میں اپنا ایک مقام بنا چکی ہے۔

ابتداء میں اس کی بنیاد مدرسہ ضیاء العلوم کی شکل میں محمد اسماعیل علوی کے گھر کے باہر ایک چبوترے پر ہوئی جو عرصہ

میں شامل ہے۔ ہم اپنے تعلیمی و تربیتی پروگرام میں ایسے کام بھی شامل کرتے ہیں جو عوامی مفاد کے ہوں نیز جس سے بھائی چارگی اور سکیولرزم کو فروغ ملے۔ اور بچوں کے دلوں میں بلا تفریق مذہب و ملت انسانی خدمت کا جذبہ پیدا ہو۔ ہمارے ادارے میں بڑی تعداد میں غیر مسلم طلباء بھی زیر تعلیم ہیں۔ پیشہ وراہ تعلیم کے فروغ کے لئے منی آئی ٹی آئی اور کمپیوٹر کا شعبہ بھی بخوبی اپنا کام انجام دے رہا ہے۔ اسکے علاوہ اردو اور عربی زبان و ادب کے فروغ کے لئے قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان (NCPUL) کے تحت ڈپلومہ کورس بھی چلائے جاتے ہیں جس سے کافی طلباء استفادہ کر رہے ہیں۔

قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان

حکومت ہند کے ذریعہ اردو زبان کی ترویج و ترقی کے لئے چلائے جا رہے اس پروگرام کو بھی ہم اپنے مدرسہ میں چلا رہے ہیں جس میں وہ طلباء جو ابتداء میں اردو نہیں پڑھ سکتے یا وہ حضرات جو اردو سے ناواقف ہیں اسی طرح عربی زبان سے ناواقف ہیں ان کو ان زبانوں سے واقف کرانے کے لئے یہ کورس ہم چلا رہے ہیں اور باقاعدہ الگ سے اس کی کلاس ہوتی ہے۔ کامیاب طلباء کو ڈپلومہ شوقیٹ دیا جاتا ہے جو کہ حکومت ہند سے منظور شدہ ہوتا ہے۔ اس کورس کے ذریعہ سیکڑوں مسلم و غیر مسلم طلباء فائدہ اٹھا رہے ہیں۔ اس سے جہاں ایک طرف اردو زبان کا دائرہ وسیع ہو رہا ہے وہیں اس ڈپلومہ کے ذریعہ سرکاری ملازمت کے بھی مواقع فراہم ہوتے ہیں اسی طرح عربی ڈپلومہ کے ذریعہ عرب ممالک میں

مولانا عبدالسلام قدوئی ندوی میموریل سوسائٹی کی ذمہ داری مولانا نجم الدین صاحب جو ایک قابل لیکچرر تھے اور اب ریٹائر ہو چکے تھے نے سنبھالی۔ مولانا نجم الدین صاحب کی کاوشوں سے مدرسہ کا الحاق عربی فارسی بورڈ سے درجہ آٹھ تک ہو گیا۔ میں ایک رکن کی حیثیت سے مولانا کے ساتھ کام کرتا رہا۔ لیکن مولانا کا سایہ عاطفت بھی تادیر قائم نہ رہا۔ تنفس کے مرض نے آپ کو زیادہ موقع نہ دیا اور آپ نے داعی اجل کو لبیک کہہ دیا۔ انکے انتقال کے بعد سوسائٹی کے مجلس عام نے سوسائٹی اور اسکول کی ذمہ داری کا بوجھ میرے کندھوں پر ڈال دیا۔ طلباء کی کثرت کی بنا پر اساتذہ کی تعداد میں اضافہ ہوتا گیا جسکے لئے وسائل کی قلت رکاوٹ بن جاتی تھیں چنانچہ سرکاری گرانٹ کے لئے جدوجہد ذمہ داران کرتے رہے اب تک ہم اپنے چمن کو عوامی تعاون سے چلا رہے تھے۔ لیکن روز افزوں طلباء کی بڑھتی تعداد اور اساتذہ کی تعداد سے مالی بحران پیدا ہونے لگا اب فکر تھی کہ اگر اساتذہ کی تنخواہ کا مسئلہ حکومت کی گرانٹ سے حل ہو جائے تو ذمہ داران کو کافی سہولت ہو جائے لیکن حکومت کی گرانٹ لینا کوئی آسان کام نہ تھا۔ آخر بڑی جدوجہد کے بعد اللہ تعالیٰ نے یہ مسئلہ بھی ۲۰۰۶ء میں حل فرما دیا۔ اب مدرسہ کے اساتذہ کو سرکاری گرانٹ حاصل ہے۔

مولانا عبدالسلام قدوئی مرحوم ہندو مسلم میں یکساں مقبول تھے وہ پیام انسانیت کے عملی نمونہ تھے۔ ہماری سوسائٹی انکے اس مشن کو آگے بڑھاتی رہی ہے اور یہ ہمارے منصوبوں

دوستی، سیاسی، سماجی، معاشی، معاشرتی زندگی کا وہ اعلیٰ نمونہ پیش کیا جس کی تربیت سے انسانی سماج کی تمام برائیاں ختم ہو گئیں۔ برائیوں، قتل و غارت گری کے خوگر محبت اور نیکی کا پیکر بن گئے۔ گویا ”خود نہ تھے جو راہ پر اوروں کے ہادی بن گئے“ کا عملی نمونہ بن گئے۔ اس ہستی کے حالات زندگی سے واقف کرانے کے لئے ہم سیرت النبیؐ کا جلسہ کرتے ہیں۔ جس میں بچوں کے اندر خطابت کی صلاحیت اور مافی الضمیر ادا کرنے کا جذبہ پیدا کرنے کیلئے تقریری مقابلہ اور نعت و منقبت کے مقابلے کرائے جاتے ہیں۔ جہاں بچے ہندی، اردو، انگریزی، عربی مختلف زبانوں میں تقاریر میں حصہ لیتے ہیں اور انعام حاصل کرتے ہیں۔

سالانہ جلسہ: یہ بھی ہمارا ایک پروگرام ہوتا ہے

جس میں بچے مختلف قسم کے ثقافتی پروگرام پیش کرتے ہیں جس میں ہم اپنے محکمہ کے ڈی ایم او یا اور کسی خصوصی مہمان کو مدعو کرتے ہیں۔ اس میں بچے اصلاحی اور سبق آموز نائٹ، ڈرامہ، گیت، حب وطن کے ترانے، اصلاحی بھائی چارگی کی تقاریر، چٹکے، بیت بازی وغیرہ پیش کرتے ہیں۔

بال میلا: پنڈت جواہر لال نہرو جی کے یوم پیدائش

پر ۱۴ نومبر کے اس پروگرام کے ذریعہ ہم بچوں میں باہمی تعاون سے کام کرنے اور تجارت کے طریقے سکھاتے ہیں۔ بچے مختلف اسٹال کیسے لگائیں، میلے میں صفائی ستھرائی پر کیسے قابو پایا جائے، خرید و فروخت کرنے میں کس طرح بات چیت کی جائے، نفع ملے تو اسے کیسے تقسیم کریں اس طرح کی

ملازمت کرنے والے حضرات کو کافی سہولت ہوتی ہے۔ پیشہ ورانہ و صنعتی ترقی کے لئے ہم منی آئی ٹی آئی اور کمپیوٹر کی تعلیم بھی دے رہے ہیں تاکہ ہمارے طلباء مختلف صنعتی اداروں میں کام کر کے اپنی معیار زندگی کو بلند کرنے کے لائق بن سکیں۔ اسکے لئے ہم نے اپنے مدرسہ میں شعبہ منی آئی ٹی آئی اور شعبہ کمپیوٹر کھولا ہے جہاں متعلقہ کورس کے قابل اساتذہ باقاعدہ بچوں کو تھیوری اور پریکٹیکل تعلیم دیتے ہیں۔ اللہ کا فضل ہے کافی بچے اس کورس سے فائدہ اٹھا رہے ہیں کچھ برس روزگار بھی ہیں اس طرح ہمارا یہ شعبہ پیشہ ورانہ تعلیم کو آگے بڑھا رہا ہے۔

مسلم اقلیت کی دینی، دنیوی، صنعتی و پیشہ ورانہ تعلیم کے لئے ہم فکر مند ہیں۔ طلباء کے لئے ایسے دارالاقامہ کا قیام جہاں دینی ثقافتی ماحول میں طلباء رہ سکیں۔

قومی یکجہتی کے حصول کے لئے وسائل کی تلاش، اسٹڈی سرکل کا قیام، دارالمطالعہ کا قیام، تعلیم نسواں اور نادار بچیوں کی تعلیم و تربیت کی فکر ہمارے منصوبوں میں شامل ہے۔ اللہ سے دعا ہے کہ ہمارے ان فلاحی منصوبوں کو پایہ تکمیل کو پہنچائے۔

بچوں کے تربیتی پروگرام

بچوں کی ہمہ جہت نشوونما و ترقی کیلئے مدرسہ میں مختلف قسم کے ثقافتی پروگرام وقتاً فوقتاً منعقد کئے جاتے ہیں جو حسب ذیل ہیں:

جلسہ سیرت النبیؐ: دنیا کی وہ عظیم ہستی جس

نے اپنے تیس سالہ دعوتی دور میں ایک انقلاب برپا کر دیا اور رشد و ہدایت، اصلاح معاشرہ، اخوة و بھائی چارگی انسان

جو پتھر پہ پانی پڑے متصل

تو بے شبہ گھس جائے پتھر کی سل

جیسا کہ بزرگوں نے فرمایا ہے کہ کسی چیز کو حاصل کرنے اور کسی منزل مقصود پر پہنچنے کے لئے مسلسل کوشش کی جائے تو اس میں کامیابی ضرور ملتی۔ یہی مسئلہ ہماری میگزین کے ساتھ بھی پیش آیا ہے۔ پہلی اشاعت کے بعد تقریباً ایک سال کی انتھک کوششوں کے بعد آپ کی خدمت میں حاضر ہے۔ میگزین پڑھنے کے بعد آپ حضرات اپنی رائے ضرور لکھیں۔ تاکہ جو خامیاں رہ گئی ہوں وہ اگلے شمارہ میں دور کی جاسکیں۔

حضرات! کسی ادارہ کی میگزین تعلیم کی ہی ایک کڑی ہے۔ تعلیم کے لفظی معنی سکھانے کے ہیں، میگزین کا مقصد بھی یہی ہے۔ علم کو آگے بڑھانے میں کسی تعلیمی ادارے کی میگزین کا اس کی کامیابی میں اہم رول ہوتا ہے۔ اور اس سے ادارے کے علمی معیار کا بھی اندازہ ہوتا ہے کیونکہ میگزین کے ذریعہ ہم اپنے خیالات دوسروں تک پہنچاتے ہیں۔ بہت خوشی ہے کہ مدرسہ کے طلباء و طالبات نے بڑے جوش و خروش کے ساتھ اس میں حصہ لیا ہے۔ میں اپنے صدر صاحب کا بے حد ممنون ہوں جو وقتاً فوقتاً مدرسہ کی سرگرمیوں کی جانکاری لیتے رہتے ہیں۔ میں حیدر علی صاحب استاذ عالیہ (درجہ ۱۰) کا بے حد ممنون ہوں جنہوں نے اس میگزین کے تیار کروانے میں روز اول سے ہی میری مدد کی ہے۔ جناب محمد اخلاق ندوی صاحب کا بھی شکر گزار ہوں جنہوں نے اس کی نوک پلک درست کر کے چھپوانے میں مدد کی۔

☆☆☆☆

تمام تربیتی باتیں بال میلے کے ذریعہ بچوں کو سکھائی جاتی ہیں۔

تعلیمی سفر: ہم گاؤں کے بچوں کو شہری ماحول میں لے جاتے ہیں۔ وہاں مختلف تاریخی مقامات دکھاتے ہیں اور اسکے متعلق بتاتے ہیں۔ چڑیا گھر یا کوئی پارک لے جاتے ہیں۔ بہت سے بچوں نے زندہ شیر یا بہت قسم کے جانور پرندے نہیں دیکھے ہیں، وہاں انکو وہ چیزیں دکھائی جاتی ہیں۔ جو اسکولوں میں صرف پڑھی یا تصویروں میں دیکھی ہے۔ اسے حقیقت میں دیکھتے ہیں۔

الوداعی تقریب: جو نیر سینٹر کے آداب کیا ہیں، فارغ ہو کر جانے والے طلباء کو جو نیر طلباء کس طرح الوداع کہیں، یہ آداب الوداعی پارٹی کے ذریعہ سکھائے جاتے ہیں۔

عید، ہولی ملن تقریب: مختلف مذاہب کے ماننے والے کس طرح ایک دوسرے کی تقاریب میں شریک ہوں اس تقریب کے ذریعہ ہم بچوں میں آپسی تال میل اور بھائی چارگی ایک دوسرے کی ساتھ سکھ دکھ میں شریک ہو کر ہندوستان کی اہم خوبی انیکتا میں ایکتا کا جذبہ پیدا کرتے ہیں۔

اسی طرح ہم زکوٰۃ کے پیسوں سے نادار طلباء کو سردی میں سویٹر وغیرہ بھی تقسیم کرتے ہیں۔ اسی طرح ہمارا مدرسہ ہمہ جہتی ترقی کے لئے اور طلباء و طالبات کے روشن مستقبل کے لئے مصروف عمل ہے۔ ہمارا یہ ادبی رسالہ 'راہ نما' اسی کی ایک کڑی ہے جس میں ہمارے اساتذہ و طلباء طالبات کی تحریریں و فکری کاوشیں منظر عام پر آتی ہیں۔ اور طلباء کے اندر تحریری و فکری صلاحیت کے جوہر ابھرتے ہیں۔



پیغام

- از پر نسل

مدرسہ سلام اور نیشنل کالج تھو لینڈی رائے بریلی کی دوسری میگزین ”راہ نما“ کی اشاعت کے موقع پر مجھے بڑی خوشی ہو رہی ہے کہ یہ ادبی میگزین اپنی منزل کی طرف رواں دواں ہے۔ وقت کی کمی اور وسائل کی کمی اشاعت کی راہ میں رکاوٹ ڈالتی رہی ہیں۔ لیکن ذمہ داروں کی محنتوں اور منیجر محترم کی فکروں سے یہ کام آسان ہوا اور الحمد للہ میگزین کا دوسرا ایڈیشن اشاعت کے لئے تیار ہے۔ مجھے امید ہے کہ رسالے کی دینی، علمی، ادبی، ثقافتی، تاریخی و مزاحیہ تخلیقات طلباء کے چہار رخ ترقی، اصول پسندی، صبر، نظم و ضبط، حب الوطنی کے احساس کو بڑھا دینے میں معاون ثابت ہوگی۔

”راہ نما“ کی اشاعت کے موقع پر ایک بار جملہ اہل علم خصوصی طور پر اردو داں حضرات کے لئے لمحہ فکریہ ہے کہ ہم اپنی شیریں زبان اردو کے لئے کیا کر رہے ہیں۔ مسئلہ صرف دعویٰ کرنے سے حل نہیں ہوگا۔ اس کے لئے عملی ثبوت پیش کرنا ہوگا۔ اسی ضرورت کے پیش نظر ہمارے ادارے نے یہ عملی قدم اٹھا کر زبان و ادب کی خدمت کی یہ ادنیٰ کوشش اہل علم کی خدمت میں پیش کی ہے تاکہ ہماری آئندہ کی نسلیں علم و ادب کی اس وراثت کو آگے بڑھا سکیں۔

کسی بھی ادارے کا رسالہ ایک کاغذ کی کتاب نہ ہو کر اس ادارے کا مکمل آئینہ ہوا کرتا ہے۔ جس میں ہر طرح کی علمی، ادبی، فکری، تربیتی سرگرمیاں نظر آتی ہیں۔ ادارے کا خادم ہونے کے ناطے مجھے اپنے طلباء و طالبات سے یہی کہنا ہے کہ اعلیٰ سے اعلیٰ درجے کے حصول علم کو اپنی زندگی کا مقصد بنائیں اور اپنے خاندان، قوم، ملک کے لئے مفید ثابت ہوں۔

آج ضرورت ہے کہ طلباء رسمی تعلیم کے ساتھ ساتھ تکنیکی تعلیم کی طرف بھی خصوصی توجہ دیں۔ تاکہ ہمہ جہت کامیاب بن کر سماج میں اپنا مقام بنا سکیں۔ ہم اساتذہ کا فرض ہے کہ ہمیشہ اپنے فرائض کے تئیں بیدار رہیں اور پوری ایمان داری سے اسکی ادائیگی کریں۔

راہ نما کی دوسری اشاعت کے موقع پر سبھی اساتذہ، اسٹاف، طلباء و طالبات کو مبارکباد دیتا ہوں اور ان کے روشن مستقبل کی دعا کرتا ہوں۔ اور بارگاہ الہی میں دعا کرتا ہوں کہ اللہ تعالیٰ ہم سب کو اپنے جائز مقاصد میں کامیاب فرمائے اور ادارہ کو ترقی کی راہ پر گامزن فرمائے۔

احمد مجیب

حضرت مولانا علاء الدین ندوی

کا سانحہ ارتحال

حضرت مولانا علاء الدین صاحب ندوی موضع تھلینڈی کی ایک معروف شخصیت اور ہر دل عزیز انسان تھے۔ آپ ہمارے بے حد مشفق دوست تھے۔ میرا ان سے ذاتی لگاؤ تھا۔ اس لئے میں انکے شب و روز سے اچھی طرح واقف بھی تھا۔

مولانا بڑے فراخ دل، صاحب اخلاق اور ہمدردی کا پیکر تھے۔ ہر ایک کے کام آنا ہر ایک کی پریشانی کو آپ اپنی ذاتی پریشانی تصور کرتے تھے اور حتی الامکان اسے دور کرنے کی کوشش کرتے۔ آپ کی بے لوث خدمت کی بنا پر اہل تھلینڈی نے آپ کو اپنے گاؤں کا نمائندہ پردھان چنا۔ ابتدائی تعلیم مدرسہ ضیاء الاسلام جو اس وقت مدرسہ سلام اور نیشنل کالج کے نام سے جانا جاتا ہے تعلیم حاصل کی اور بعد میں اعلیٰ تعلیم کے لئے ندوۃ العلماء گئے۔ اور وہاں سے بھی تعلیم حاصل کی۔ حصول تعلیم کے بعد آپ نے علم و عمل کی اشاعت کے لئے اپنی زندگی وقف کر دی تھی۔ موضع تھلینڈی اور اطراف میں کوئی علمی ماحول نہ تھا۔ جہالت عام تھی۔ آپ نے کہیں باہر جانے کے بجائے گاؤں میں رہ کر ہی خاموشی سے علم و ادب اور دین کی خدمت کرنا مناسب اور وقت ضرورت سمجھی اور اپنے آپ کو گاؤں کے حوالے کر دیا۔ آج مولانا اگرچہ ہمارے درمیان میں جسمانی طور پر موجود نہیں ہیں مگر آپ کی دعائیں آپ کی ہدایات، آپ کی فکریں ہماری رہنمائی کرتی رہیں گی۔ ہم اہل مدرسہ کو افسوس ہے کہ ایک مشفق و محسن سے محروم ہو گیا۔ اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ ہم سب کو اس کا نعم البدل عطا فرمائے اور حضرت والا کو جنت الفردوس میں اعلیٰ مقام عطا فرمائے۔ آمین

احمد فیضی

مدرسہ سلام اور نیشنل کالج تھلینڈی

ہمارا سالانہ جلسہ: ایک جائزہ

۶ اپریل ۲۰۱۳ء بروز ہفتہ مدرسہ سلام اور نیشنل کالج کا سالانہ جلسہ بڑے تزک و احتشام کے ساتھ زیر صدارت عالی جناب بلال احمد صاحب منعقد ہوا۔ جلسے کا آغاز حافظ صہیب صاحب کی تلاوت کلام پاک سے ہوا۔ اس کے بعد بچوں نے مختلف قسم کے رنگارنگ ثقافتی پروگرام پیش کئے۔

۶ صالہ پروین درجہ نشی اول نے نعت پاک کا نذرانہ پیش کیا اور نعت پاک کے مقابلہ میں اول پوزیشن حاصل کی۔

مدرسہ سلام کا دلکش ترانہ خوشنما اور انکی ٹیم نے پیش کیا۔

خطبہ استقبالیہ مدرسہ کے سینئر استاد علی جناب سید سہیل حسنی نے پیش کیا۔

استقبالیہ گیت انزلہ، صبا، شہیا مہوس، زینت آصفہ عظمیٰ صابریں کی ٹیم نے پیش کیا (جس کے بول تھے مرحبا مرحبا استقبال آپ کا)

درجہ اطفال نرسری کے بچوں نے ایک گیت اپنے دلکش انداز میں پیش کیا۔ درجہ نشی اول کی طالبہ درخشاں حیات نے اردو تقریر پیش کی جس کا عنوان تھا ”تعلیم نسواں وقت کی اہم ضرورت ہے۔“ درجہ ہشتم کے طالب علم سچن کمار ساہو نے ہندی تقریر پیش کی جس کا عنوان تھا ”بھائی چارگی اور سماج“۔ اور تقریری مقابلہ میں یہ اول نمبر پر رہے۔ انگریزی تقریر درجہ نشی اول کی عربیہ عزیز نے اپنے مخصوص لب و لہجہ میں پیش کی جس کا عنوان تھا Education is light۔ اور یہ مقابلہ میں دوسرے نمبر پر رہیں۔ عربی تقریر درجہ ششم کی نازیہ نے عربی لب و لہجہ میں پیش کی جس کا اردو ترجمہ پیش کیا۔ عنوان تھا: الوقت اغلی من الذهب والفضة۔ ایک دن کی سلطانہ نائک پیش کیا عربیہ اور

انکے ساتھیوں نے۔ دوسرا نائک پیش کیا شگفتہ وہاب، صالحہ زینب نے جس کا عنوان تھا ”بہو کی ود“۔

تیسرا نائک لالچی کلی جس کو پیش کیا اسامہ اور انکے ساتھیوں نے۔ فن قوالی کو اسامہ اور انکی ٹیم نے پیش کیا۔

جاوید اور مدثر نے چٹکے پیش کئے۔

درجہ ۶ کی نازیہ وساتھی نے ”پھلوں کا مشاعرہ“ پیش کر کے سائنسی معلومات پیش کی۔

ماں کے اوپر ایک دل آویز نظم پیش کی محمد لقمان نے۔ ایک گیت اسامہ اور ساتھیوں نے پیش کیا جس کا عنوان تھا ”سکشا کی حیوت جلا کر ہم آگے بڑھتے جائیں گے۔“

اسی طرح درجہ ۷ کے طالب علموں نے تقریر پیش کی۔

آخر میں صدر جلسہ نے اپنی قیمتی خیالات پیش کئے اور آئندہ سال کے پروگرام کے لئے دس ہزار روپیہ جیب خاص سے دینے کا اعلان فرمایا۔

منیجر صاحب نے اپنے مفید مشوروں سے نوازا۔

مدرسہ کے پرنسپل صاحب نے کلمات تشکر پیش کئے۔

پروگرام کا اختتام مدرسہ کے استاذ حیدر علی ندوی کی دعا پر ہوا۔

سبھی شرکاء نے افادیت کو سراہا اور پیش کئے جانے والے پروگراموں کی تعریف کی۔ بچوں کی محنت اور اساتذہ کی تعریف کی جن کی رہنمائی سے اتنا اچھا ادبی و ثقافتی پروگرام وقوع پذیر ہوا۔

سید سہیل حسنی

حیدر علی ندوی
استاد عالیہ

دنیا کا عظیم تحفہ 'والدین'

طویل تجربے کی بنیاد پر ان پر روک ٹوک کرنے یا کسی بات کی پابندی عائد کرتے ہیں تو اولاد اس کی اپنی توہین اور بے جا پابندی و حق سلبی تصور کر کے بغاوت و نافرمانی پر اتر آتی ہے۔

ستم بالائے ستم یہ کہ جس اولاد کے لئے ماں نے راتوں کی نیند قربان کی، خود گیلے میں سوئی اور اولاد کو سوکھے میں سلایا، جس اولاد کے روشن مستقبل کے لئے باپ نے کتنے پاڑے پیلے، اپنے کتنے ارمانوں کو دبایا، اپنی کتنی خواہشات کو قربان کیا وہی اولاد ماں باپ کے ساتھ برا سلوک کرتی ہے، بات بات پر ان کو جھڑکتی ہے، کتنے ہی بد بخت ہیں جو والدین کو مارتے پیٹتے اور گھر سے نکالنے کا جرم کرتے ہوئے خدا کے غضب سے نہیں ڈرتے۔

والدین کی نافرمانی، ناقدری اور حق تلفی کرنے والے اپنی اس حرکت سے باز آجائیں۔ وہ یاد رکھیں اللہ کے حقوق کے بعد سب سے بڑا حق ماں باپ کا ہے۔ ماں کی ناقدری اور نافرمانی کرنے والا مرنے سے پہلے پہلے اسکی سزا بھگت کر ہی مرے گا۔ اولاد اگر پوری زندگی ماں باپ کی خدمت کرتی رہے تب بھی وہ ان کا تھوڑا سا بھی حق ادا نہیں کر سکتی۔

ہماری یہ ذمہ داری ہے کہ ہم بڑے ہو کر اپنے پیروں پر کھڑے ہو کر اپنے والدین کے لئے کچھ کریں۔ ان کو راضی و خوش کرنے کی پوری کوشش کریں انکے کام آئیں، اپنی کمائی کا کچھ حصہ ان کے لئے خاص کریں۔ کسی بزرگ کا قول ہے: ماں باپ کو ستانے والا نہ تو دنیا میں چین و سکون پاتا ہے اور نہ آخرت میں اسکی معافی ہوگی۔ جس کے والدین اس سے ناراض ہیں اس کا خاتمہ ایمان پر ہونا مشکل ہے۔

اللہ پاک نے جہاں اپنی عبادت کا حکم دیا ہے وہیں والدین

یہ ایک حقیقت ہے کہ ماں باپ اولاد کے حق میں خدا کا انمول تحفہ اور نعمت عظمیٰ ہیں۔ والدین اولاد کے لئے پیار کا خزانہ ہیں جس کا بدل دنیا میں کوئی ہو نہیں سکتا۔ اولاد کو ماں باپ سے بڑھ کر کوئی پیار نہیں دے سکتا۔ والدین اپنے بچوں کے مستقبل کو سجانے سنوارنے اور بہتر سے بہتر بنانے میں ہمیشہ فکر مند رہتے ہیں اس کیلئے ہر طرح کی قربانی دینے کے لئے تیار رہتے ہیں۔ خود روکھا سوکھا کھانا کھانا، پھٹے پرانے کپڑے پہننا گوارا کر لیتے ہیں لیکن اولاد کی تعلیم و تربیت اور روشن مستقبل پر آنچ نہیں آنے دیتے۔ ماں باپ کا ہر قدم ان کی ہر فکر اولاد کی بہتری، اچھائی اور بھلے کے لئے ہی ہوتی ہے۔ اگر وہ اولاد پر کسی چیز کی پابندی بھی لگاتے ہیں تو اسکے اندر بھی انکے روشن مستقبل اور ان کی بھلائی کا ہی راز چھپا ہوتا ہے۔ بچوں کے حق میں والدین کی شفقت و محبت سب سے زیادہ ہوتی ہے اور وہ اپنی پوری زندگی کو اولاد کے لئے وقف کر دیتے ہیں۔ ہر پریشانی جھیل لیتے ہیں، ہر غم کو سہہ لیتے ہیں۔ ہر مصیبت کو برداشت کر لیتے ہیں اس امید اور توقع پر کہ میرا بیٹی، بیٹی کچھ بن جائے، وہ اولاد کو اچھا اور نیک و کامیاب دیکھنا چاہتے ہیں۔

اولاد کو بھی چاہئے کہ وہ اپنے والدین کے اس خواب کو پورا کریں، ان کے ارمانوں کو نہ توڑیں۔

لیکن افسوس کی بات یہ ہے کہ آج کے تیزی سے بدلنے ہوئے حالات نے ہماری نئی نسل کی سوچ کو بدل دیا ہے۔ مغربی کلچر، تہذیب و ثقافت اور ٹی وی کلچر نے انکے سوچنے سمجھنے کی صلاحیت پر منفی اثر ڈال کر انکے شیرازے کو منتشر کر دیا ہے۔ آج کل کے بچوں کو والدین کی بات بری لگتی ہے۔ اگر والدین اپنے

کردار کا اثر

حضرت بایزید بسطامیؒ کے پڑوس میں ایک یہودی رہتا تھا۔ ایک رات ساتھ والے مکان میں ایک بچہ مسلسل روتا رہا۔ آپ نے صبح یہودی کے دروازے پر کھڑے ہو کر دستک دی۔ اندر سے ایک عورت کی آواز آئی کہ گھر میں کوئی مرد نہیں ہے۔ حضرت بایزید بسطامیؒ نے اپنا تعارف کرایا اور خیریت دریافت کی۔ یہودی عورت نے بتایا کہ میرا شوہر کئی ماہ سے سفر پر گیا ہوا ہے اور اس عرصہ میں میرے یہاں بچہ کی ولادت ہوئی ہے۔ اور رات بھر وہی بچہ روتا رہتا ہے۔ آپ نے بچے کے رونے کا سبب پوچھا تو عورت نے بتایا کہ گھر میں اندھیرا رہتا ہے، کوئی تیل لانے والا نہیں ہے اور نہ ہی پیسے ہیں۔ میرے شوہر جاتے وقت گھر میں اناج رکھ گئے تھے اسی پر گذر اوقات کر رہی ہوں۔ حضرت فوراً اپنے گھر گئے اور ضرورت کی ہر چیز اس عورت کو مہیا کیا اور پھر شام ہونے سے پہلے وہ ہاتھ میں تیل کی کچی لے کر یہودی کے دروازے پر پہنچ گئے۔ کئی روز تک آپ اس خاتون کے لئے ضروری چیزیں فراہم کرتے رہے کہ مکان تاریکی میں نہ ڈوب جائے اور اندھیرے میں بچہ پھر نہ رونا شروع کر دے۔ کچھ ماہ بعد یہودی سفر سے واپس آیا اور اس کی بیوی نے تمام حالات کا اس سے ذکر کیا تو وہ بہت خوش ہو اور ہدیہ شکر ادا کرنے کے لئے حضرت بایزید بسطامیؒ کی خدمت میں حاضر ہوا۔ آپ نے فرمایا کہ بھائی شکر یہ کی ضرورت نہیں یہ تو میرا فرض تھا جس کو میں نے پورا کیا ہے، کیونکہ اگر میں ایسا نہ کرتا تو سخت گنہگار ہوتا، کیونکہ ہمارے دین میں پڑوسی کے بڑے حقوق ہیں۔ یہودی نے حضرت سے عرض کیا کہ جناب مجھے بھی اسی دین کی چادر رحمت میں چھپالو، اور انہیں آقائے دو جہاں کا کلمہ پڑھا دو جن کی غلامی کی وجہ سے آپ اس بلند مرتبے پر فائز ہیں۔ آپ نے اس کی خواہش پوری کی اور وہ مشرف بہ اسلام ہو گیا۔☆☆☆

کے ساتھ اچھا برتاؤ کرنے کا بھی حکم دیا ہے۔ چنانچہ ارشاد خداوندی ہے: وبالوالدین احسانا؛ اے لوگو اپنے ماں باپ کے ساتھ اچھا سلوک کرو۔

والدین جب بوڑھے ہو جائیں تو خاص طور سے انکی اطاعت کرنا انکی خدمت کرنا بہت ضروری ہو جاتا ہے۔ یہاں تک کہ انکی بے تکی باتوں کو برداشت کرنا چاہئے۔ اللہ نے فرمایا ہے کہ اگر وہ بڑھاپے کو پہنچ جائیں (اور اس عمر میں عقل میں فتور ہو ہی جاتا ہے) اور کوئی ناگوار بات کہہ دیں تو تم اپنی پیشانی پر بل بھی نہ لاؤ اور نہ ان کو کچھ کہو اس وقت تم اپنے بچپن کو یاد کر لیا کرو کہ ہم اس عمر میں کیا کیا حرکتیں کرتے تھے۔ بستر پر پیشاب کر دیا کپڑے خراب کر دیئے لیکن ماں سب برداشت کر لیتی تھی۔ صاف کر کے پھر گلے لگا لیتی تھی۔ باپ پیار کرتا تھا۔ پیارے نبیؐ نے فرمایا اللہ کی رضامندی باپ کی رضامندی میں ہے۔ جنت ماں کے قدموں میں ہے۔ ہر مذہب میں ماں باپ کا مرتبہ بہت بڑا بتایا گیا ہے۔ اس لئے ہر اولاد کو اس کا لحاظ رکھنا چاہئے۔ تاکہ اس کی دنیا و آخرت خراب نہ ہو۔

خلاصہ کلام یہ ہے کہ والدین اللہ کی نعمتوں میں سب سے بڑی نعمت ہیں۔ ہمیں ہر حال میں ان کی قدر کرنی چاہئے۔ اگر والدین دنیا سے جا چکے ہیں تو ان کے حق میں ایصال ثواب اور دعائے مغفرت کرتے رہنا چاہئے۔

والدین کی ناقدری سے لوگو بچا کرو
ہر آن ان کی شوق سے خدمت کیا کرو
اللہ ہوگا راضی اور رسول ہونگے خوش
خوب اپنے ماں باپ کی اطاعت کیا کرو

جیسا سوچو گے ویسے بنو گے

مثبت فکر انسان کی ترقی میں معاون ہوتی ہے

پرنسپل مدرسہ سلام

احمد مجیب

اس کے برعکس جو لوگ منفی سوچ Negative thinking کے ہوتے ہیں وہ اپنی منفی سوچ کی وجہ سے اپنے تئیں خود پریشان، بے چین، فکر مند رہتے ہیں اور اپنی گندی سوچ کی وجہ سے دوسروں کو بھی نقصان پہنچانے کی فکر میں رہتا ہے۔ ایسا کم ظرف انسان مثبت کاموں میں اپنی توانائی صرف کرنے کے بجائے اس غم میں ڈوبا رہتا ہے کہ فلاں اس اعلیٰ مقام تک کیسے پہنچ گیا۔ اس کو کیسے گرایا جائے۔ فلاں نے اتنی ترقی کیوں کر لی؟ کون سی ترکیب اپنائی جائے کہ اس کی ترقی رک جائے۔ غرض کہ وہ حسد اور جلن کے مہلک مرض میں گرفتار ہوتا ہے۔ اسکی صلاحیتیں اس کا فکری اثاثہ سب کچھ منفی کاموں میں استعمال ہوتا ہے۔ ملک و ملت سماج و قوم کی فلاح و بہبود تو دور کی بات ہے۔ ایسا انسان انسانیت کے نام پر بدنماداغ ثابت ہوتا ہے۔ اسی لئے اللہ تعالیٰ نے قرآن کریم میں اس شنائیت کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا ہے: وَلَا تَحْسَبُوا وَاوَلَاتِبَاغَضُوا وَلَا يَغْتَب بَعضُكُم بَعضًا۔ آپس میں ایک دوسرے سے حسد مت رکھو اور ایک دوسرے سے بعض نہ رکھو، غیبت مت کرو۔

قرآن نے ایک صالح اور صاف ستھرا معاشرہ و سماج بنانے اور آپسی بھائی چارگی کو مضبوط کرنے نیز امن و سکون کی زندگی گزارنے کے زریں اصول اس آیت کریمہ کے ذریعہ ہم کو بتائے ہیں۔ پڑھے لکھے اور تعلیم یافتہ طبقے سے یہی امید کی

انسانی زندگی کی تخلیق کا مقصد اعظم حصول معرفت ہے۔ معرفت میں معرفت الہی معرفت کا اعلیٰ مقام ہے۔ معرفت اشیاء معرفت نفس، وغیرہ کے مدارج طے کرتے کرتے انسان بلندی کی چوٹی پر پہنچ جاتا ہے۔ لیکن ان سب خوبیوں کو حاصل کرنے میں انسان کے فکر کا پہلو اس کی سوچ کا انداز بڑی اہمیت رکھتا ہے۔ وہی اس کی زندگی کے رہبر اور اصول بن جاتے ہیں۔ پھر یہ اصول یا تو اسے ترقی کی طرف لے جاتے ہیں یا پھر تنزلی کی طرف۔ مثبت سوچ Positive thinking یعنی ہر ایک کے متعلق اچھا نظریہ رکھنا اس کو نفع فائدہ، خوشی پہنچانے کی فکر کرنا ہر ایک کی بھلائی سوچنا، دوسرے کی ترقی سے خوش ہونا، دوسرے کو سہارا دینا، ضرورت کے وقت اس کے کام آنا، خطرات سے اسے آگاہ کرنا، کسی کی جان و مال، عزت و آبرو کی حفاظت کرنا، ایک مثبت فکر کے حامل شریف اور نیک انسان کی علامتیں ہیں۔ ایسے انسان کے دوست زیادہ دشمن کم ہوتے ہیں۔ ہر ایک کے منہ سے اس کے لئے دعائیں کلمات نکلتے ہیں۔ ایسا بندہ اللہ کا بھی محبوب ہوتا ہے، پیارے نبی کا فرمان ہے: ساری مخلوق بشمول ہندو مسلم سکھ عیسائی، پارسی جین اللہ کا کنبہ ہیں۔ اللہ کو وہ بندہ زیادہ محبوب ہے جو اللہ کے کنبہ کے لوگوں کے ساتھ اچھا برتاؤ کرے۔ مثبت فکر رکھنے والا انسان اللہ کا اور اس کے بندوں کا بھی محبوب ہوتا ہے۔ قلت اسباب میں بھی وہ پرسکون رہتا ہے۔ اسکے ہمدرد زیادہ ہوتے ہیں، جو ہر حال میں اس کا ساتھ دیتے ہیں۔

جاتی ہے کہ وہ خوبیوں کا مظہر بنے اور اپنی عملی و صاف ستھری زندگی کے ساتھ معاشرے کی اصلاح کا کام کرے۔ انسان اپنی منفی سوچ سے کسی کا بگاڑ کچھ نہیں سکتا، خالق کائنات نے جس کے متعلق جو فیصلہ کر دیا ہے وہ کوئی بدل نہیں سکتا پھر ہمارے جلنے یا چاہنے سے ہمارا ہی نقصان ہوگا۔ حاسد خود حسد کی آگ میں جلتا ہے اور یہ سب نتیجہ ہوتا ہے انسان کی منفی فکر و سوچ کا۔ ایسے انسان سے سب نفرت کرنے لگتے ہیں۔ کوئی بھی اس کو اپنا ساتھی و دوست بنانا پسند نہیں کرتا۔ کوئی بھی مصیبت میں اس کا ساتھ نہیں دیتا۔ اس لئے انسان کو چاہئے کہ وہ اپنی سوچ کو مثبت بنائے تاکہ خدا اور اللہ کے بندے کی نظر میں محبوب و محمود بنا رہے۔ خود بھی پرسکون رہے اور لوگوں کو بھی سکون پہنچائے۔ آمین

فکر مثبت ہوگی جس کی اس کو ملے گا سکون

فکر منفی چھین لے گی دوستو امن و سکون

☆☆☆☆☆☆

ایک جنتی مرد

حضرت انس بن مالکؓ سے مروی ہے انھوں نے بتایا کہ ہم لوگ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس بیٹھے ہوئے تھے اسی دوران میں آپؐ نے فرمایا کہ ابھی ایک شخص آئے گا، جو جنتی ہے۔ ایک انصاری شخص حاضر ہوا، اس کی ڈاڑھی سے وضو کا پانی ٹپک رہا تھا اور اس نے اپنے جوتے بائیں ہاتھ میں اٹھا رکھے تھے۔ جب دوسرا دن آیا تو نبی کریمؐ نے اسی طرح پھر ارشاد فرمایا۔ دوبارہ وہی شخص اسی حالت میں حاضر ہوا۔ تیسرے دن بھی نبی کریمؐ نے وہی ارشاد فرمایا۔ تیسرے دن بھی وہ شخص اسی حالت میں حاضر ہوا۔ جب نبی کریمؐ چلے گئے تو عبد اللہ بن عمرو بن العاص نے اس انصاری شخص کا پیچھا کیا اور اس سے کہا کہ میرا میرے باپ سے جھگڑا ہو گیا ہے لہذا میں نے قسم کھا رکھی ہے کہ تین دن تک گھر نہیں

آؤں گا۔ اگر آپ مجھے ان تین دنوں میں اپنے یہاں ٹھہرنے کی اجازت دے دیں تو بڑی نوازش ہوگی۔ اس نے کہا ٹھیک ہے، تم میرے گھر ٹھہرو۔ حضرت انس کہتے ہیں کہ عبد اللہ بن عمرو بن العاص واقعہ بیان کرتے ہیں کہ انھوں نے اس انصاری کے یہاں تین دن قیام کیا۔ انھوں نے ان کو رات میں بھی قیام کرتے ہوئے نہیں دیکھا سوائے یہ کہ بستر پر جاتے وقت انھوں نے اللہ کا ذکر کیا اور اس کی بڑائی بیان کی۔ پھر وہ سو رہے یہاں تک کہ صبح ہو گئی اور فجر کی نماز کے لیے وہ جاگے۔ دوسری بات جو انھوں نے دیکھی وہ یہ تھی کہ اس شخص نے جب بھی زبان سے کوئی بات ادا کی تو وہ خیر پر مبنی تھی۔ جب تین دن گزر گئے اور قریب تھا کہ میں اس کے اعمال کو حقارت کی نگاہ سے دیکھوں، میں نے کہا کہ اے اللہ کے بندے! میرا میرے باپ سے کوئی جھگڑا نہیں تھا اور نہ کوئی ایسی بات تھی لیکن اصل بات یہ ہے کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے آپ کے بارے میں تین بار ایسا فرماتے ہوئے سنا تھا تو میری خواہش ہوئی کہ آپ کے یہاں آ کر ٹھہروں اور دیکھوں کہ آپ کے کیا اعمال ہیں، جن کی وجہ سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے یہ خوش خبری سنائی ہے۔ میں بھی ان اعمال کو بجالاؤں (اور جنت کا مستحق بنوں) لیکن میں نے آپ کو بہت زیادہ ایسا کوئی کام کرتے ہوئے نہیں پایا کہ جن کی وجہ سے میں سمجھوں کہ نبی کریمؐ نے آپ کو جنت کی خوش خبری دی۔ اس انصاری صحابی نے جواب دیا کہ بے شک میں ایسا ہی ہوں جیسا آپ نے مجھے تین دنوں میں ملاحظہ کیا ہے۔ پھر عبد اللہ بن عمرو بن العاص واپس جانے لگے۔ انھوں نے ان کو بلایا اور عرض کیا۔ بے شک بات ایسی ہے جیسی میں نے کہی اور آپ نے دیکھا مگر بات یہ ہے کہ میں اپنے دل میں کسی مسلمان کے بارے میں کوئی کینہ نہیں رکھتا اور نہ اس سے حسد کرتا ہوں اس نعمت پر جو اللہ نے اس کو دی ہے۔ عبد اللہ نے کہا یہی بات ہے جس کی وجہ سے آپ کو خوش خبری دی گئی اور ہم اس سے قاصر ہیں۔ (مسند احمد ۳/۱۶۶)

دنیا کا مثالی قائد اور مثالی رہنما

صیحہ پروین
استانی فوقانیہ

پرورش کی۔

جب آپ کچھ بڑے ہوئے تو آپ پر آپ کے گھر کی ذمہ داریاں آپ کو گھر سے باہر لے گئیں۔ تب آپ نے عربی سماج میں پھیلی بے انتہا برائیاں دیکھیں۔ اس وقت عرب میں یہ عالم تھا کہ عربی اپنی ہی بیٹیوں کو سخت ناپسند کرتے تھے اور اپنے ہی ہاتھوں سے ان ننھی سی جانوں کو مار کر زمین میں دفن کر دیا کرتے تھے۔ یہ ایک ناقابل برداشت جرم تھا۔ اس کے علاوہ اور بھی جرائم آپ کے پیش نظر آئے۔ لیکن آپ کے لئے انہیں برداشت کر پانا بہت مشکل تھا۔ اس لئے آپ لوگوں کو ایسے جرائم کرنے سے روکتے۔ انہیں انسانیت اور انسانی حقوق کی تعلیم دینے لگے اور سچے خدا کے پسندیدہ مذہب اسلام قبول کرنے کی دعوت دینے لگے۔ اس وقت میں عربی لوگ بتوں اور آگ کی پوجا کرتے تھے لیکن آپ کی تعلیم حاصل کرنے کے بعد ان میں سے بیشتر لوگ مسلمان ہو گئے اور انہوں نے اسلام قبول کر لیا۔ اس طرح آپ نے superstition کا خاتمہ کیا۔ اس دوران غلاموں کا یہ حال تھا کہ اگر ایک غلام کو ان کا مالک آواز دیتا تو مالک کے قہر سے خوفزدہ ہو کر سارے غلام اسکے سامنے آکھڑے ہو جاتے۔ لیکن آپ نے غلاموں کی حالت سدھارنے کے ساتھ ساتھ غلام اور مالک کے درمیان انسانیت کا ایک نایاب رشتہ بنا دیا۔

آپ نے اولاد کی طرف انکے والدین کی ذمہ داریاں اور حقوق بیان کئے اور کہا کہ اولاد اور بیوی ایک انسان کے لئے آزمائش ہیں جو انکے ساتھ بہتر سلوک کرے گا اسے خدا اس کا اجر دیگا۔ آپ نے ساتھ ہی ساتھ اولاد کے حقوق اور ذمہ داریاں

دوستو اور میرے بزرگو! آج ہم جس کھٹن بھرے، دہشت زدہ اور جنگی ماحول میں سانس لے رہے ہیں، ایسے ماحول میں پرسکون زندگی بسر کر سکرنا بہت مشکل ہے۔ کئی بار دل میں یہ سوال بار بار اٹھتا ہے کہ کب وہ وقت آئے گا جب زمین کا ہر انسان چین سے جی سکے گا، ساتھ ہی ہم اپنے آپ سے یہ سوال بھی کرتے ہیں کہ کون ایسا ماہر فن شخص تھا جس نے سماج کی بد حالی کو بہتری میں تبدیل کر دیا، لیکن اصل سوال تو یہ ہے کہ کیا ہم اس شخص کے دیئے ہوئے تحفے کو محفوظ رکھ پائے۔

خاتم الانبیا

اگر ہم خاتم الانبیا، سارے نبیوں میں اول، حضرت عبداللہ کے نور نظر، حضرت آمنہ کے جگر کے ٹکڑے، حضرت محمد کی زندگی کے کچھ حصوں پر نظر ڈالیں تو ہمیں کچھ نہ کچھ سبق ضرور ملے گا۔ ہمارے نبی کریم حضرت محمد ہی میری نظر میں دنیا کی وہ عظیم ترین ہستی ہیں جنہوں نے سماج کی برائیوں کو ختم کرنے اور سماج کی بہتری کے لئے وہ نایاب نمونے اور کارگزاریاں پیش کیں جنہیں ان سے پہلے کوئی انجام نہیں دے سکا اور میرا پختہ یقین ہے کہ ایسا قیامت تک بھی کوئی نہیں کر سکے گا۔

حضرت محمد مکہ میں ۵۷ھ میں پیدا ہوئے۔ آپ کے والد ماجد حضرت عبداللہ آپ کی پیدائش سے پہلے ہی انتقال کر گئے اور آپ کی پیدائش کے بعد آپ کی والدہ ماجدہ بھی انتقال فرما گئیں۔ تب آپ کے دادا حضرت عبدالمطلب نے آپ کی ذمہ داری سنبھالی لیکن کچھ عرصہ کے بعد انہوں نے بھی آپ کا ساتھ چھوڑ دیا۔ اس کے بعد آپ اپنے چچا جان حضرت ابوطالب کے زیر تربیت چلے گئے۔ انہوں نے آپ کی نہایت شفقت سے

مثبت ذہنیت کا نتیجہ

ڈاکٹر عائشہ القرنی اپنی کتاب 'التحزن' (غم نہ کریں) میں

لکھتے ہیں:

ایک مشہور مسلمان داعی نے جرمنی کے میونخ شہر میں سکونت اختیار کی۔ جب وہ شہر میں داخل ہوئے تو انہوں نے دیکھا کہ ایک بڑے سائن بورڈ پر لکھا ہے 'کیا تم یو کو ہاما کی کفریات کو نہیں جانتے'۔ یہ دیکھ کر اس داعی نے پاس میں ہی ایک اور سائن بورڈ لگا دیا اور اس پر لکھ دیا 'کیا آپ اسلام کو نہیں جانتے'۔ اگر آپ اس کی معلومات چاہتے ہیں تو فلاں فلاں فون نمبر پر رابطہ کریں۔ بڑی تعداد میں لوگوں نے رابطہ کیا اور ایک سال کے اندر اندر ایک لاکھ سے زیادہ جرمن مسلمان ہو گئے جن میں مرد و عورت دونوں تھے۔ پھر انہوں نے ایک مسجد، ایک اسلامی مرکز اور ایک درس گاہ بنائی۔ (ختم)

اس واقعے سے ثابت ہوتا ہے کہ یہ فطری دین ساری انسانیت کی ضرورت ہے لیکن افسوس کہ اس کے پیروکار اس کی قدر و قیمت سے ناواقف اور مثبت ذہنیت سے محروم ہیں سیکڑوں سال کی غلامی اور افلاس نے آج ان کو ایک منفی قوم بنا دیا ہے۔ ان کو کہیں بھی روشنی کم اور اندھیرا زیادہ دکھائی دیتا ہے۔ تعجب ہے کہ ان کے پاس عصائے موسیٰ ہے اور وہ جادوگروں سے سہمے ہوئے ہیں۔ ان کے پاس صداقت ہے اور وہ در یوزہ گری کر رہے ہیں۔

مالک ہیں اجالوں کے ناپیدناؤ ہن والے
احساس کے ماروں کی دنیا میں اندھیرا ہے

بیان کیوں اور فرمایا کہ ماں کے پیروں کے نیچے جنت ہے جو ماں کی خدمت کرے گا اسے جنت نصیب ہوگی۔ آپ نے ایک انسان کی دوسرے انسان پر ذمہ داریاں اور حقوق بھی بیان کئے اور ہر انسان کو پیار اور بھائی چارے کے ایک مضبوط رشتہ میں باندھ دیا۔

آپ نے تعلیم اور ہنر کو ترجیح دی اور فتنہ و فساد کا خاتمہ کیا۔ آپ نے joint trade کو بڑھاوا دیا اور کہا کہ اس قسم کی تجارت میں کوئی انسان دوسرے انسان کو نقصان نہیں پہنچا سکتا۔ کیونکہ ایسی تجارت میں خود اس کا فائدہ بھی شامل ہے۔ آپ نے ذہن کو اس حد تک بیدار کیا کہ اس کے لئے مطالعہ فطرت ممکن ہوا جس کے نتیجے میں ایجاد و انکشافات کا دروازہ کھلا اور انسانی تمدن کہیں سے کہیں پہنچ گیا۔ یہ کہنا بالکل بجا ہوگا کہ آپ نے تاریخ کے رخ کو موڑ دیا۔ ایک ہمہ گیر انقلاب برپا کر دیا۔ تمدن کا کوئی ایسا شعبہ نہیں جس میں آپ کے برپا کردہ انقلاب کے اثر نہ ہو۔ آپ کے جیسا نہ کوئی کام کر سکا ہے اور نہ ہی کوئی کر سکے گا۔ آپ کے کارناموں اور عظیم شخصیت نے آپ کو دنیا کا سب سے بڑا عظیم سماجی مصلح بنا دیا۔ اس کا اعتراف غیروں کو بھی ہے۔ مثال کے طور پر امریکن ایسوسی ایشن نے ۱۰۰ ایسے افراد کا انتخاب کیا جنہوں نے انسانیت کے لئے عمدہ کام کئے۔ اس میں سرفہرست آپ کا نام ہے۔ مائیکل ہارٹ نے دی مینڈر کے نام کے جو کتاب لکھی ہے، اس میں پہلے نمبر پر آپ ہی کو مجبوراً شامل کیا ہے۔ اس لئے کہ آپ جیسی شخصیت کا حامل تاریخ کی کوکھ سے کوئی پیدا ہی نہیں ہوا ہے۔ اللہ ہم سب کو آپ کی اتباع کی توفیق عطا فرمائے۔ (آمین)

فیشن ایک عورت کی فطری ضرورت ہے

اسلام میں اس کی اجازت ہے

مخلوق کی اطاعت خالق کی ناراضگی میں جائز نہیں۔

2۔ جو کام شرعی حدود میں ہیں اور جائز درجے میں ہیں اس میں حسب وسعت شوہر کی مکمل اطاعت کرنا عورت کے ذمہ ہے۔ حدیث میں آیا ہے کہ اگر میں کسی کو کسی کے لیے سجدہ کرنے کا حکم دیتا تو عورت کو حکم دیتا کہ وہ اپنے شوہر کے لئے سجدہ کرے۔ دوسری حدیث میں آیا ہے کہ اگر کوئی آدمی اپنی بیوی کو حکم دے کہ سرخ پہاڑ سے پتھر اٹھا کر سیاہ پہاڑ اور سیاہ پہاڑ سے پتھر اٹھا کر سرخ پہاڑ پر لے جائے تو اسے یہی کرنا چاہیے۔

3۔ عورت شرعی حدود میں رہ کر جو کچھ بناؤ سنگار کرے اس کا مقصد شوہر کو خوش کرنا ہونہ کہ دوسری عورتوں اور نامحرم مردوں کو دکھانا یا اترانا ہو۔ اگر شوہر کو خوش کرنے کے لیے بناؤ سنگار کرے گی تو انشاء اللہ اس پر اس کو ثواب ملے گا، چاہے دوسری عورتیں اسے دیکھ کر خوش ہوں یا ناراض۔

زیادہ بناؤ۔ سنگار شرعاً پسندیدہ نہیں۔

یاد رکھیں! زیادہ بن ٹھن کر رہنا شریعت میں پسند نہیں ہے۔

شوہر والی عورت ضرور سنگار کر لے یہ ٹھیک ہے لیکن بناؤ سنگار کو ایک عادت بنا لینا اور طرح طرح کے طریقے اس کے لیے سوچنا اور اس کے لیے الگ الگ قسم کی چیزیں خریدنا اور ذہن کو ہر وقت اس میں الجھائے رکھنا مومن کے مزاج کے خلاف ہے۔ جس کو نیک اعمال اور اچھے رویے کے ساتھ رہنا ہے ان کے پاس اتنی فرصت نہیں کہ بناؤ سنگار اور غیر ضروری سجاوٹ میں وقت اور پیسہ برباد کرے۔

محمد سنیم، استاد فونو قانیہ

آج کی خاتون فیشن کی جس راہ پر چل رہی ہے وہ مسلمان خاتون کے لیے زیب نہیں دیتی۔ مسلمان خاتون کو چاہئے زیب وزینت کے وہ طریقے اپنائے جو اسلامی تعلیمات کے مطابق ہوں، اور اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم کو راضی کرنے والا ہو۔ حدیث میں آیا ہے 'ان اللہ جمیل یحب الجمال' اللہ خود خوبصورتی کا مظہر ہے اور جمال (خوبصورتی) کو پسند کرتا ہے۔

اس لیے خاتون کے لیے یہ جاننا ضروری ہے کہ زیب و زینت کے کون سے طریقے شریعت کے خلاف ہیں اور کون سے طریقے شریعت کے مطابق ہیں، تاکہ وہ خلاف شرع کاموں سے بچے اور شرعی حدود میں رہتے ہوئے اپنے بناؤ سنگار کر سکے۔ نیچے انہیں طریقوں کو ذرا تفصیل کے ساتھ ذکر کیا جاتا ہے۔ ہماری خواتین ان کو غور سے پڑھیں اور اس کے مطابق عمل کرنے کی کوشش کریں۔ اسی میں آپ کی دین و دنیا دونوں جہان کی بہتری اور کامیابی ہے۔

فیشن کی حد

خاتون کو زیب و زینت سے متعلق تین باتیں بنیادی طور پر ذہن میں رکھنا چاہئے۔

1۔ جن کاموں کی شریعت میں قطعی طور پر منہا ہی ہے اسے کرنا کسی صورت میں بھی عورت کے لیے جائز نہیں چاہے شوہر ہو یا کوئی اور ان کو کرنے کے لیے کہے یا نہ کرنے کی صورت میں وہ اس سے ناراض ہو جائے۔ کیونکہ حدیث شریف میں آیا ہے کہ

علم انسان کو سنوارتا ہے

سے فائدہ نہیں اٹھایا تو انسان بگڑے گا اس کی سوچ غلط ہوگی معاشرے پر اس کا غلط اثر پڑے گا پھر سماج میں ایسے لوگوں کی زیادتی ہوگی وہ سماج اتنا ہی بگڑتا چلا جائے گا۔ اس لئے تمام مذاہب میں تعلیم و تربیت کی خاص اہمیت ہے اور آج دنیا کے تمام ملکوں میں تعلیم کی طرف اہمیت دی جا رہی ہے۔ علم انسان کو جوڑتا ہے۔ علم کے لیے عمل ضروری ہے۔ علم ہم کنٹرول کریں نہ کہ ہم علم کو اپنے حساب سے چلائیں۔ اگر ایسا ہوا تو یہ بات انسانیت کے لیے نقصان دہ ہوگی۔

اسلام میں علم پر بہت زور دیا گیا ہے۔ پیارے آقا صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ علم حاصل کرو چاہے اس کے لیے تمہیں چین جانا پڑے۔ اس لیے ہماری سب سے اپیل ہے کہ علم کو زیادہ سے زیادہ سیکھیں یا حاصل کریں۔ علم کو فروغ دیں۔ اچھے لوگوں کی صحبت میں رہ کر اپنے علم سے خود کو اور ملک و قوم کو فائدہ پہنچائیں۔

اللہ ہم سب کو علم حاصل کرنے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین

محمد نسیم اکرم

(تحتانیہ)

علم قدرت کا انمول تحفہ ہے جو انسان کو فکری طور پر سجا سنوار کر اسے سماج و قوم و پوری انسانیت کے لیے مفید بناتا ہے۔ انسانی زندگی کی فطرت میں خیر و شر (اچھے اور برے) دونوں کا مادہ رکھا گیا ہے۔ اور انسان کو وقتی اختیار دیا گیا ہے کہ وہ چاہے تو علم کی روشنی میں اپنے آپ کو بہیمیت اور جاگورپن سے نکال کر ملکوتی صفات میں اپنے کو ڈھال کر اچھا انسان بنے اور چاہے تو علم سے دور رہ کر اپنے اندر حیوانیت گنوارپن کا عیب بڑھا کر خود اپنا اور سماج کا دشمن بن جائے۔ علم ہی وہ خزانہ ہے جو انسان کے اندر کی فکر و سوچ کو صحیح رخ پر ڈال کر قدسی صفات کا پیکر بنا کر اسے اعلیٰ سے اعلیٰ مقام تک پہنچا دیتا ہے۔ انسانی ڈھانچہ تو صرف آگ، پانی، مٹی وغیرہ کی ایک مشین ہے اس کی روح اصل ہے۔ اس کی سوچ اور فکر اس کے جسمانی حصوں ہاتھ پیر کان آنکھ وغیرہ سے کام لیتی ہے۔ اس لیے انسان کی سوچ کا اچھا ہونا بہت ضروری ہے۔ اور یہ بات صرف اور صرف علم اور اچھے لوگوں کی صحبت اور تربیت سے حاصل ہو سکتی ہے۔ پس جب انسان اندر سے اچھا بنتا ہے تو سماج بھی اچھا بنتا ہے جہاں سب کو امن چین سکھ سکون ملتا ہے۔ لیکن اگر انسان نے علم سے دوری بنائی یا تربیت اور اچھے لوگوں کی صحبت سے یا اپنے علم

بڑوں کا ادب اور بات چیت کا طریقہ

تعلیم انسان کا ایسا جوہر ہے جو انسان کے طور پر لیتے،

رہن سہن، بات چیت کے ڈھنگ کو بدل دیتی ہے۔ اور تعلیم یافتہ

آدمی سے یہ امید کی جاتی ہے کہ اس کا بات چیت کا طریقہ چال

ڈھال ایسا ہو کہ پتہ چلے کہ یہ پڑھا لکھا آدمی ہے۔ زبان دل اور

فکر کی ترجمان ہوتی ہے۔ اللہ تعالیٰ نے قرآن میں فرمایا ہے: اور

لوگوں سے اچھے ڈھنگ سے بات کرو۔ اس آیت میں اللہ نے

اچھی سماجی زندگی گزارنے کی پہلی بات یہ بتائی ہے کہ آپس میں

جب بات چیت کی جائے تو اچھے انداز اور اچھے لہجے میں کی

جائے۔ لہجہ نرم ہو بات چیت میں سختی نہ آئے اپنی بڑائی، یا مال

و دولت کا گھمنڈ بالکل ظاہر نہ کیا جائے جس سے بات کی جائے

اس کے مرتبے کا لحاظ رکھا جائے۔ بڑوں سے ادب کے ساتھ

چھوٹوں سے شفقت کے ساتھ بات کی جائے۔ ایسی بات نہ کی

جائے جس سے کسی پر طعنہ کشی ہو یا اسکی ذلت ہو۔ ہم سب کے

حقیقی مربی عالم کے استاد پیارے آقا نے فرمایا: مسلمان کی شان

یہ ہے کہ وہ نہ تو طعنہ دیتا ہے اور نہ کسی پر لعنت بھیجتا ہے، نہ بدزبانی

کرتا ہے۔ آپ نے فرمایا جو اللہ تعالیٰ اور قیامت کے دن پر یقین

رکھتا ہو وہ بولے تو بھلی بات کہے ورنہ خاموش رہے۔ اپنی زبان

سے کسی کا دل توڑنا، ٹھیس پہنچانا بھلے لوگوں کا کام نہیں ہے۔ بھلی

بات کہنا بھی صدقہ کرنے کی طرح ثواب رکھتی ہے۔ بے حیائی

اور بے شرمی کی باتوں سے چغلی غیبت کی باتوں سے بچنا چاہئے

اس سے اور نیکیاں بھی چلی جاتی ہیں۔

بات ٹھہر ٹھہر کے کی جائے۔ سب کی طرف متوجہ ہو جائے

۔ ہنسی مذاق اور دل لگی کی باتوں میں حد سے زیادہ نہ بڑھا جائے۔

بات بات میں چیخنا اپنی بڑائی ظاہر کرنا، دوسرے کو حقیر سمجھنا کسی

کے مرتبہ کو گرانا اچھے لوگوں کا طریقہ نہیں ہے۔ اس لئے پڑھے

لکھے لوگوں کو اس کا خاص خیال رکھنا چاہئے ورنہ ایک ان پڑھ

جاہل گنوار اور پڑھے لکھے میں کوئی فرق نہیں رہے گا۔ اسی لئے

آدمی کی چند منٹ کی بات چیت سے ہی اس کی عقلمندی یا بے وقوفی

کا اندازہ اہل علم لگا لیتے ہیں۔ یہ بات اچھی تعلیم اچھے لوگوں کی

صحبت و تربیت سے آتی ہے۔ ورنہ آدمی تعلیم یافتہ ہونے کے

باوجود احمق سمجھا جاتا ہے۔ گندے اور بازاری لوگوں کی عادتیں

چھٹی نہیں ہیں۔ اس لئے ہم سب کو بات چیت کے طریقے پر بھی

دھیان دینا چاہئے۔ ہماری بات چیت سے سماج کو نفع پہنچے کسی

کا کلیجہ نہ پھٹے، کسی کی آہ و زاری کا سبب نہ بنے۔ اللہ تعالیٰ سے

دعا ہے کہ ہم سب کو ایسا بنا دے۔ آمین

ریحانہ بیگم

نائب معلمہ

مدرسہ ہذا

محمد شمشاد، استاد مدرسہ

بانی مدرسہ

جس نے مدرسہ کی نیو ہے ڈالی
قوم کی ہے آنکھوں کا تارا
دنیا کا ہر کام نرالا
دیکھو تھو لینڈی مدرسہ ہے کیسا
مدرسہ بھی کیا خوب بنایا
علم کی ایسی ہوا چلائی
آپ نے علم کی پیاس بجھائی

اس کی ہے ہر بات نرالی
آپ نے قوم کو خوب ہے سنوارا
کوئی تو ہے سمجھانے والا
اہل علم چاہتے ہیں جیسا
جس نے دیکھا اسی کو ہے بھایا
پوری تھو لینڈی پر ہے چھائی
سب کی محنت ہے رنگ لائی

طلباء کے لئے

- ۱- ہر طالب علم کو اسکول کے معین وقت پر پہنچنا چاہئے۔
- ۲- اسکول کی طرف سے طے ڈریس میں آنا چاہئے۔
- ۳- استاد کے کلاس روم میں داخل ہوتے وقت تمام طلباء کو کھڑے ہو کر ان کو سلام کرنا چاہئے۔
- ۴- ہر طالب علم کو استاد والدین اور بڑوں کا احترام کرنا چاہئے۔
- ۵- جو موضوعات اسکول میں پڑھائے جائیں اس کا بار بار ضرور دہرانا کرنا چاہیے ورنہ وہ چیزیں یاد نہیں رہیں گی۔
- ۶- کوئی موضوع سمجھ میں نہ آ رہا ہو تو استاد سے بغیر ہچکچائے کھڑے ہو کر پوچھنا چاہئے۔
- ۷- اسکول میں لکھائے گئے مواد کو جہاں تک ہو سکے ایک ہی کاپی پر نہیں کرنا لکھنا چاہئے، اسی وقت فیئر کاپی پر لکھ لینا چاہئے۔ ایسا کرنے سے بچے ہوئے وقت کو دوسرے موضوع میں لگانا چاہئے۔
- ۸- ہر موضوع کی کاپی الگ ہونی چاہئے ایک ہی کاپی پر تمام سبجیکٹ نہیں ہونے چاہئے۔
- ۹- ہر سبجیکٹ کی الگ کاپی ہونے سے امتحان کے وقت موضوع کو یاد کرنے/مطالعہ کرنے میں آسانی ہوتی ہے۔
- ۱۰- تمام موضوعات کو ہر دن پڑھنا چاہئے جس سے امتحان کے نزدیک آنے پر زیادہ مشکل نہ ہو۔
- ۱۱- امتحان سے ۲-۳ گھنٹے پہلے سبجیکٹ کی پڑھائی نہیں کرنی چاہئے نہیں تو طالب علموں کو جوابات میں مشکل کا سامنا کرنا پڑے گا اس سے بچنا چاہئے۔
- ۱۲- جو موضوع مشکل لگ رہا ہے اس موضوع کو ۱-۲ گھنٹے روز ۵-۶ دن پڑھنے پر وہی موضوع آپ کا سب سے پسندیدہ موضوع بن جائے گا۔
- ۱۳- اسکول میں کلاس روم کے اندر پڑھائی کے وقت کسی قسم کی چیونگم، ٹافی، نمکین بسکٹ وغیرہ نہیں کھانی چاہیے۔
- ۱۴- اسکول نہادھو کر اور صاف کپڑے پہن کر آنا چاہیے۔

محمد ریحان

ٹیچر - مدرسہ سلام اورینٹل کالج - دھولینڈی

حضرت مولانا عبد السلام قدوائی ندوی

علمی شخصیت اور فکری بصیرت

نہیں آسکتا تھا۔ یہ مقالات حضرت کے اعلیٰ اخلاق اور اقدار حیات کے ترجمان ہیں۔

حضرت مولانا قدوائی کی علمی زندگی میں اردو ادب اور اسلامی لٹریچر کے لحاظ سے ایک اور روشن باب ہے۔ انہوں نے اپنی عملی زندگی کا آغاز ممبئی میں روزنامہ خلافت کی ادارت میں شرکت سے کیا۔ وہ ایک سال خلافت ہاؤس میں مولانا رئیس احمد جعفری کے ساتھ قیام پذیر رہے۔ ظاہر ہے کہ ایک سال کے عرصہ میں انہوں نے بہت کچھ لکھا ہوگا جب کہ آپ کو روز لکھنے کا مشغلہ تھا۔

حضرت مولانا ندوہ میں پندرہ برس مدرس رہے۔ اس عرصہ میں علامہ سید سلیمان ندوی نے ماہنامہ الندوہ کو دوبارہ جاری کرایا۔ یہ الندوہ کا تیسرا دور کہلاتا ہے۔ یہ رسالہ مولانا سید ابوالحسن علی ندوی اور مولانا عبد السلام قدوائی ندوی کی ادارت میں نکلا اور خوب چمکا۔ تین برس الندوہ نکلتا رہا۔ ان تمام شماروں میں اداریے اور کوائف ندوہ دونوں اہتمام سے مولانا عبد السلام قدوائی ندوی نے تحریر فرمائے۔ علاوہ ازیں مقالات بھی لکھے۔

۱۹۳۷ء میں مسلمانانہ تقسیم کے باعث جو مایوسی اور

قنوطیت چھائی ہوئی تھی اس کو دور کرنے کے لئے مولانا نے

پروفیسر سید احتشام احمد ندوی

آج قلم کا دماغ حضرت مولانا عبد السلام قدوائی ندوی کی یادوں کے پھولوں سے معطر ہے اور حضرت مولانا جیسے فرشتہ صفت عالم کے تصور سے افق تخیل روشن ہے کہ میں نے ان کے احوال و افکار کے بارے میں ہندوستان کے معروف اسلامی مراکز تہذیب و تمدن کے اہل علم اور اہل فکر کے مقالات ایک کتاب کی شکل میں مرتب کر دئے ہیں۔

مجھے فخر ہے کہ مجھے حضرت مولانا کے ساتھ ان کے گھر میں رہنے کا طویل موقع ملا اور میرا سفر و حضر میں حضرت کا ساتھ رہا۔ میں نے ان کی زندگی میں تقویٰ و تقدس کا جلوہ پایا۔ ان کے اعلیٰ اخلاق اسوہ رسولؐ سے مستعار تھے۔ حسن اخلاق کا وہ آئینہ تھے جو شخص ان سے ملنے آتا جب تک وہ خود نہ چلا جاتا مولانا اس کی طرف پوری طرح ملتفت رہتے اور خندہ پیشانی سے گفتگو کرتے رہتے۔ ان میں کوئی امتیاز نہ تھا، ہندو مسلمان حتیٰ کہ نوکر چاکر سب سے نہایت خوش خلقی سے ملتے۔ ان کی محفل ہر خاص و عام کے لئے یکساں کھلی رہتی۔ ان کا ظاہر و باطن یکساں تھا۔ اسلامی مساوات کا تصور ان پر غالب تھا اور اس پر ان کا عمل تھا۔ مولانا معاملات میں صفائی کا خیال رکھتے۔ سخت کلامی، غصہ گرمی کا خیال ان کے بارے میں تصور میں بھی

میں چاہتا ہوں کہ ان چاروں رسالوں سے مولانا قدوائی کے مقالات جمع کر کے شائع کئے جائیں۔ میں نے الندوہ کے فائل کے مطالعہ کے بعد محسوس کیا کہ مولانا قدوائی نے اسلامی تاریخ پر بہت عمدہ مقالات لکھے ہیں اور یہی ذوق مجھے تعمیر کے فائلوں میں بھی نمایاں نظر آیا۔ مسلمانوں کی اصلاح کے لئے مولانا قدوائی نے 'تعمیر' میں بڑے پر زور مقالے تحریر فرمائے ہیں۔ ضرورت ہے کہ ان مقالات کو ترتیب و تدوین کے بعد کتابی شکل میں شائع کر دیا جائے۔

حضرت مولانا قدوائی کو خطوط لکھنے کا شوق تھا۔ روز صبح بہت سے کارڈ لیکر بیٹھ جاتے اور خطوط لکھنا شروع کر دیتے۔ افسوس ہے کہ مولانا کے خطوط کے محفوظ کرنے کا کوئی نظم نہ کیا جاسکا۔ مگر پھر بھی حضرت مولانا سید ابوالحسن علی ندوی، حضرت مولانا رابع حسنی ندوی مدظلہ اور دوسرے اہل علم کے پاس ان کے خطوط موجود ہونگے۔ میرے پاس حضرت مولانا کے چالیس خطوط ہیں اور اتفاق سے ان کے خطوط کا وہ مجموعہ بھی مولانا کی صاحبزادی شامہ بلال کے پاس موجود ہے جو مولانا نے ابو بکر شیت ناظم دینیات مسلم یونیورسٹی کے صاحبزادے روئے ضیاء اللہ شیت کو لکھے تھے۔ لکھنؤ میں نشاط گنج میں ایک بزرگ مولوی اسماعیل تھے۔ جنہوں نے بخاری شریف حضرت مولانا قدوائی سے پڑھی تھی وہ اسکول میں مدرس تھے۔ مگر حضرت مولانا پابندی سے خط لکھتے تھے۔ خط کا طریقہ یہ تھا کہ جوانی کارڈ ساتھ آتا تھا۔ مولانا قدوائی اس کا جواب لکھ کر روانہ کر دیتے تھے۔ میں نے جب ان خطوط کے حصول کی کوشش کی تو معلوم ہوا کہ ان کے

ایک پندرہ روز رسالہ 'تعمیر' نکالا۔ اس میں تفسیر مولانا پابندی سے لکھتے تھے۔ انہوں نے ادارے بھی بڑے جاندار تحریر فرمائے ہیں۔ یہ رسالہ کئی برس نکلا مگر حضرت مولانا کے جامعہ نگر نئی دہلی کے ناظم دینیات بن کر چلے جانے سے رسالہ نے دم توڑ دیا۔ مولانا کے مقالات 'تعمیر' میں بڑے روزدار ہیں۔ اور مسلمانوں کے اندر خود اعتمادی پیدا کرنے میں انہوں نے پوری کوشش کی اور تاریخ ہند کے اس موڑ پر تاریخ اسلام سے بھی انہوں نے روشنی حاصل کی اس لئے کہ مولانا کا خصوصی ذوق تاریخ اسلام کا تھا۔

آخر میں مولانا ریٹائر ہو کر کچھ عرصہ اپنے گاؤں محمد پور تھولینڈی میں رہے پھر حضرت مولانا سید ابوالحسن علی ندوی نے مولانا قدوائی کو دارالعلوم ندوۃ العلماء کا معتمد تعلیمات مقرر کیا۔ اسکے بعد حضرت مولانا علی میاں نے اصرار فرمایا کہ وہ دارالمصنفین کی نظامت قبول کر لیں۔ چنانچہ مولانا دارالمصنفین اعظم گڑھ تشریف لے گئے۔ علامہ شبلی سے جو ان کو عشق کی حد تک محبت و شفقت تھا اس کی تکمیل کا اللہ تعالیٰ نے ذریعہ پیدا کر دیا اور عمر کا آخری حصہ دارالمصنفین کی خدمت اور رسالہ معارف کی ادارت پر صرف کر دیا۔ اس چار سالہ قیام میں حضرت مولانا نے سیرت النبیؐ کی چھ جلدوں کا خلاصہ ایک جلد میں تیار کیا، ان چار برسوں میں مولانا نے معارف کے ادارے لکھے اور معارف کے لئے مقالات بھی تحریر فرمائے۔ وہ شریک ناظم تھے۔

اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ مولانا قدوائی کی عظمت بحیثیت ایک صحافی کے بھی ہمارے سامنے آجاتی ہے۔

تھے، انکی تقریر کی مقبولیت کا عالم یہ تھا کہ لوگ دور دور سے کھنچ کر جامعہ اور دارالمصنفین میں ان کی تقریریں سننے آتے تھے، تھولینڈی میں جمعہ اور عیدین میں وہ نہایت مدلل اور موثر تقریر فرماتے تھے۔ تقریر و تحریر کی صلاحیت ان کے اندر مبدأ فیاض سے ودیعت کی گئی تھی۔ ان کے ادارے ان کی عمدہ تحریروں اور حسن اسلوب پر دلالت کرتے ہیں۔

حضرت مولانا سید ابوالحسن علی ندویؒ کے حکم سے مولانا عبدالسلام قدوائیؒ پر تعمیر حیات کا ایک خاص نمبر شائع ہوا۔ اس کے جملہ مقالات اس مجموعہ کی زینت ہیں مگر میں نے دس نئے مضامین مندرجہ ذیل اصحاب علم و دانش سے درخواست کر کے لکھوائے ہیں:

- (۱) مولانا ضیاء الدین اصلاحی (۲) پروفیسر صفری مہدی (۳) پروفیسر محمد اکرام (۴) پروفیسر نذیر الدین مینائی (۵) مولانا رشید الوحیدی (۶) پروفیسر محمد سالم قدوائی (۷) پروفیسر بدر الدین الحافظ (۸) پروفیسر شفیق احمد خان (۹) محمد عامر قدوائی (۱۰) شامہ بلال

ان مقالوں کے علاوہ حضرت مولانا عبد اللہ عباس ندوی مدظلہ العالی، مولانا محمد شبیر ندوی صاحب اور پروفیسر ڈاکٹر یسین مظہر صدیقی کے شائع شدہ مقالات بھی اس مجموعہ کی زینت ہیں۔ میں یہ کہے بغیر نہیں رہ سکتا کہ اس کتاب کی تکمیل میں حضرت مولانا قدوائی کے خویش ڈاکٹر بلال احمد صاحب کی پر خلوص کوششوں اور جدوجہد کا بھی حصہ ہے۔ انہوں نے پانچ مقالات جامعہ ملیہ سے جمع کر کے مجھے عنایت فرمائے۔ میں ان کا ممنون ہوں۔

گھر میں اب کوئی نہیں۔ ان خطوط کے حصول کی تڑپ ہے خدا کرے کہ کوئی سبیل نکل آئے۔

چونکہ حضرت مولانا صاحب اسلوب تھے، ان کی شخصیت کا جلوہ ان کے خطوط پر بھی منعکس ہے۔ میں خطوط جمع کر رہا ہوں ان کے خطوط کا یہ تحفہ بھی اہل شوق کی خدمت میں ان شاء اللہ پیش کیا جائے گا۔ خطوط نگاری کا جو حضرت مولانا کو خصوصی شوق تھا اس کی جانب مولانا ضیاء الدین اصلاحی مدظلہ نے اپنے مقالے میں اشارہ فرمایا ہے۔ مولانا سعید احمد اکبر آبادی نے مجھ سے فرمایا کہ مولانا قدوائی کا اسلوب بیان نہایت بلیغ اور موثر تھا۔ (حضرت مولانا قدوائی نے مجھ سے ایک دلچسپ واقعہ بیان فرمایا، انہوں نے کہا کہ ایک بار علامہ سید سلیمان ندویؒ نے مجھ سے فرمایا کہ کیا آپ فقہ جانتے ہیں یا نہیں؟ فرمایا نہیں۔ فرمایا کہ کیا آپ کو حدیث میں مہارت حاصل ہے؟ مولانا قدوائی نے فرمایا نہیں۔ حضرت سید صاحب نے پوچھا کیا آپ منطق فلسفہ پر نظر رکھتے ہیں؟ مولانا قدوائی نے فرمایا نہیں۔ آخر میں حضرت سید صاحب نے فرمایا کہ پھر آپ کو کیا آتا ہے؟ مولانا قدوائی نے فرمایا کہ میں اردو اچھی لکھ لیتا ہوں اس پر حضرت سید صاحب خاموش ہو گئے۔) اور یہ بات سچ ہے کہ حضرت مولانا قدوائی عمدہ اردو لکھتے اور بولتے تھے اور کبھی کبھی برجستہ مناسب اشعار بھی اپنی تقریروں میں چسپاں کر دیتے تھے۔

مقرر بھی مولانا بہت عمدہ تھے۔ نہایت عمدہ انداز سے اسلامی موضوعات کو سمجھاتے تھے، سلجھی ہوئی تقریر فرماتے

نہ ہنسو تو جانیں

والد- پھر سے بتاؤ۔

داداجی- ایک دھوبی کے پاس دو گدھے.....

☆☆☆☆☆

-مئی میں آج اسکول نہیں جاؤں گی۔

کیوں بیٹی؟

مئی ماسٹر جی کو کچھ بھی نہیں آتا ہے

اور وہ ہر سوال کا جواب مجھ سے ہی پوچھتے ہیں۔

☆☆☆☆☆

ماں ایک چونی دے دو۔

کیوں؟

اسکول میں لیٹ گیا تھا اس لئے اساتذہ نے چونی جرمانہ لگایا ہے

تم اسکول میں پڑھنے جاتے ہو یا لیٹنے۔

☆☆☆☆☆

آئیے آئیے کیسے آئے؟

بس سے۔

☆☆☆☆☆

ایک تھے موہن ایک تھے سوہن

موہن نے کہا رامپور کا میلہ دیکھنے چلیں؟

سوہن: پروہاں جا کر کہا کیا کھائیں گے؟

موہن: وہی جو روز کھاتے ہیں، دھکے۔

☆☆☆☆☆

☆☆☆

ٹیچر- دہلی میں قطب مینار ہے۔

ایک طالب علم جو بیچ پر آنکھ بند کر لیٹا تھا۔

ٹیچر- طالب علم سے۔ راجو تم کیا کر رہے ہو؟

طالب علم- سر۔ میں نے آپ کی باتیں سن رہا ہوں۔

ٹیچر- اچھا بتاؤ میں نے کیا کہا ہے؟

طالب علم- یہی کہ دہلی میں کتا بیمار ہے۔

عائشہ عزیز، درجہ-4

☆☆☆

رامو- یا راجو میرا وزن دو کلو کم ہو گیا۔

دویندر- ضرور آج تم نہایے ہو۔

☆☆☆☆☆

داداجی پوتے کو کہانی سناتے ہیں۔

ایک دھوبی کے پاس دو گدھے تھے

ایک گدھے کا نام ڈھینچو تھا

اور دوسرے گدھے کا نام پھر سے بتاؤ تھا

ڈھینچو کھو گیا تو پیچھے کون بچا؟

والد- پھر سے بتاؤ۔

داداجی- ایک دھوبی کے پاس دو گدھے تھے

ایک گدھے کا نام ڈھینچو تھا

اور دوسرے گدھے کا نام پھر سے بتاؤ تھا

ڈھینچو کھو گیا تو پیچھے کون بچا؟

ڈاکٹر سنا سے۔ آپ کی گردے فیل ہو گئے ہیں۔
سنا پہلے تو بہت رویا پھر، آنسو پونچھے ہوئے بولا:
کتنے نمبر سے۔

☆☆☆☆

شیوجی۔ میں تمہاری تپسیا سے خوش ہوا بھکت بناؤ تمہیں کیا چاہیے
بھکت۔ ڈی جے سٹم دے دو پر بھو
شیوجی۔ اگر ڈی جے سٹم ہوتا تو میں ڈمرو کیوں بجاتا۔

☆☆☆☆

ٹیچر نے بچے کی کاپی میں نوٹ لکھ کر بھیجا:
براہ مہربانی بچے کو نہلا کر بھیجا کریں۔
بچے کی ماں نے لکھ کر بھیجا:

براہ مہربانی بچے کو پڑھایا کریں سو گھانا کریں۔

☆☆☆☆

ڈاکٹر۔ گولو آپ کا دانت نکالنا پڑے گا۔
گولو۔ پیسے لگیں گے کیا؟
ڈاکٹر۔ ۲۰۰ روپے لگیں گے۔

گولو۔ یہ لوہ ۵ روپے تھوڑا سا ڈھیلا کر دو، نکال تو میں خود لوں گا۔

☆☆☆☆

ماسٹر جی۔ ہزار کے بعد لاکھ، پھر کروڑ پھر ارب آتا ہے، ارب کے
بعد کیا آتا ہے؟

طالب علم۔ ارب کے بعد ایران آتا ہے۔

☆☆

ایک شرابی سڑک پر جا رہا تھا اچانک پھسل کر وہ کیچڑ
میں گر گیا۔ اسی وقت بجلی چمکی تو شرابی بولا: ہے بھگوان! ایک تو
پہلے ہی کیچڑ میں گر گیا اور اب تصویر بھی کھینچ رہے ہو۔

☆☆☆☆☆

ایک صاحب کو گانا گانے کا بڑا شوق تھا۔ ایک دن وہ دریا کے
کنارے گھوم رہے تھے اور گارہے تھے محبوبہ محبوبہ اتنے میں وہ دریا
میں گر گئے اور زور زور سے چلانے لگے۔ میں ڈوبا میں ڈوبا۔

☆☆☆☆

باپ: بچے رو کیوں رہا ہے؟
بچے: گرو جی نے مارا ہے۔
باپ۔ تم نے کلاس میں گڑ بڑ کی ہوگی۔
بچے: نہیں، میں تو کلاس میں سو رہا تھا۔

☆☆☆☆☆

تین آدمی اپنی تعریف کے پل باندھ رہے تھے۔
پہلا۔ میں لکھ پتی ہوں۔
دوسرا۔ میں کروڑ پتی ہوں
تیسرا۔ میں اپنی چینی کاپتی ہوں۔

☆☆☆☆

مریض۔ میں ہر بات جلدی بھول جاتا ہوں، کوئی
دوائی دیجئے۔

ڈاکٹر۔ ایک کام کرو پہلے تم میری فیس دے دو، کہیں تم
دوائی لینے کے بعد پیسے دینا بھول جاؤ تو۔

☆☆☆☆☆

شوہر ساری رات غائب رہنے کے بعد جب گھر پہنچے
تو بیوی نے غصے سے کہا: اب صبح کے سات بجے تم کس لیے آئے
ہو؟
شوہر نے جواب دیا: ناشتہ کرنے کے لیے۔

☆☆☆☆

بچوں کے نفسیاتی ٹیسٹ ہو رہے تھے
 پروفیسر نے چوہے کے سامنے،
 ایک طرف ایک اور دوسری طرف چوہیا رکھی
 چوہا ایک کی طرف لپکا
 پروفیسر نے ایک بدل کر روٹی رکھی
 پھر وہ روٹی کی طرف لپکا
 پروفیسر بولے اب سمجھ گئے کہ
 نوڈ سے بڑی کوئی چیز نہیں
 تب پیچھے سیٹ پر بیٹھا لڑکا بولا
 سر چوہیا بدل کر دیکھو
 شاید یہ اس کی بہن ہو۔

گاہک: 'کیا ہوٹل کا باورچی بدل گیا ہے؟'
 مالک: 'ہاں! مگر آپ کو کیسے پتہ چلا؟'
 گاہک: 'پہلے کھانے میں سفید بال نکلتے تھے اب کالے
 نکلتے ہیں۔'

☆☆☆☆☆

ایک بچہ اسکول سے گھر آ کر ایک کونے میں جا کر مرغا بن
 جاتا ہے۔

ماں: 'بیٹا یہ کیا کر رہے ہو؟'
 بچہ: 'امی آپ ہی نے تو کہا تھا کہ ہ جو کام اسکول میں
 کیا کرو وہ گھر آ کر دہرایا کرو۔'

☆☆☆☆☆

مالک: (دیر سے آنے پر ناراضگی سے نوکر سے بولا) 'الو
 کہاں تھے؟'

نوکر: 'حضور گھونسلے میں۔'

مالک: (بگڑ کر) 'گدھے'

نوکر: 'حضور دھوبی کے یہاں۔'

مالک: (چلاتے ہوئے) بے وقوف

نوکر: 'مجھے اس جانور کے گھر کا پتہ نہیں معلوم

☆☆☆☆☆

ایک طوطا سڑک پر جا رہا تھا۔ سامنے کار آرہی تھی۔ اچانک ٹکر
 ہو گئی۔ طوطے کو اسپتال لے گئے اور پنجرے میں لیٹا دیا تبھی اسے
 ہوش آیا تو بولا: 'آئیلا میں جیل، میں کار والا مر گیا کیا؟'

☆☆☆☆☆

رامو اور شیا مو دوست تھے۔

رامو نے شیا مو سے پوچھا: 'یار عقل بڑی یا بھینس۔'

شیا مو: 'پہلے ڈیٹ آف برتھ تو بتا بے۔'

☆☆☆☆☆

سچن فرمل

کلاس-5

☆☆☆☆☆

ٹیچر طلباء سے۔ ہمیں درختوں سے ہونے والا کوئی ایک
 فائدہ بتاؤ۔

طالب علم: (کھڑا ہو کر) درختوں سے ہمیں یہ فائدہ ہوتا ہے
 کہ جب ہمیں چوری کرنے کی سزا دینے کے لیے می ڈنڈے لے
 کر دوڑاتی ہیں تو ہم درخت پر چڑھ کر بچ جاتے ہیں۔

☆☆☆☆☆

ٹیچر طلباء سے۔ بتاؤ ہمیں آکسیجن گیس کہاں سے ملتی ہے؟
 طالب علم۔ ٹیچر ہمیں آکسیجن گیس وہاں سے ملتی ہے جہاں
 سے ایل پی جی گیس ملتی ہے۔

☆☆☆☆☆

باپ بیٹے سے۔ بیٹے تیرے ایگزام میں کتنے نمبر آئے؟

بیٹا۔ سو میں سے سو

باپ۔ خوش ہو کر، ارے واہ سو میں سے سو نمبر۔

بیٹا۔ ہاں پاپا لیکن ٹیچر نے سو میں دوزیر و تو لگا دیا لیکن ایک لکھنا بھول گئی۔

ثنا پروین، درجہ مولوی 1

☆☆☆☆

وند نے پنکج سے پوچھا: تم یہ کیسے ثابت کر سکتے ہو کہ جانوروں کی آنکھیں انسانوں سے زیادہ تیز ہوتی ہیں؟

پنکج نے جواب دیا: کیا تم نے کبھی کسی جانور کو چشمہ لگاتے دیکھا ہے؟ جج۔ تم نے کچھ دن پہلے بھی ۱۰۰ روپے چرائے تھے۔

چور۔ صاحب مہنگائی کے زمانے میں ۱۰۰ روپے کتنے دن چلتے ہیں۔

علقہ، درجہ 7

☆☆☆

تاریخ کے پرچے میں آیا: ثابت کرو کہ دنیا گول ہے۔

لڑکے نے لکھا: مسمی گول ہے، سیب بھی گول ہے، اس سے ثابت ہوتا ہے کہ دنیا گول ہے۔

پرچہ جانچنے والے نے لکھا: چشمہ لگا کر دیکھو بیٹا نمبر بھی گول ہے۔

☆☆☆☆

بیٹا: نہیں می آج ہی عید ہے۔

می: نہیں بیٹا آج عید نہیں ہے۔ اچھے بچے ایسی ضد نہیں کرتے۔

بیٹا: نہیں می آج ہی عید ہے، عید آج ہی ہے کیونکہ پاپا بازو والی

آنٹی سے گلے مل رہے تھے۔

بڑھیا (ڈاکٹر سے)۔ دانت نکال دیجیے۔

ڈاکٹر۔ منہ کھولو۔

بڑھیا۔ لو کھول دیا۔

ڈاکٹر۔ اور کھولو۔

بڑھیا نے تھوڑا امنہ اور کھول دیا۔

ڈاکٹر۔ تھوڑا اور کھولو۔

بڑھیا نے سارا امنہ اوپر کر دیا۔

ڈاکٹر۔ تھوڑا اور کھولو۔

بڑھیا (غصے میں)۔ کیا منہ میں بیٹھ کر ہی دانت نکالنے کا خیال ہے؟

☆☆☆

پونے کمال کر دیا۔ وہ بینک میں جا کر سو گیا جب اس سے پوچھا گیا تو بولا میں نے اخبار میں پڑھا تھا کہ اس بینک میں سونے پر لون ملتا ہے۔

☆☆☆☆

ٹیچر لڑکے سے۔ اگر چور پیچھے کے دروازے سے آ گیا تو تم کیا کرو گے؟

لڑکا۔ آئی دل ڈائل ۱۰۰۔ وہ پولیس بھی پیچھے کے دروازے سے آئے گی۔

☆☆☆

لڑکا لڑکی سے۔ رخصتی کے وقت لڑکیاں روتی کیوں ہیں؟

لڑکی لڑکے سے۔ اگر تجھے پتہ چلے کہ شہر سے دور لے جا کر کوئی تجھ سے برتن منجھوائے گا تو کیا تو نہ روئے گا۔

☆☆☆

گرو۔ بیٹا تم نے اپنے جیب میں لیموں کیوں رکھا ہے؟

چیلہ۔ دشمنوں کے دانت کھٹے کرنے کے لیے۔

پسندیدہ اشعار

حرم پاک بھی اللہ بھی قرآن بھی ایک
کیا بڑی بات تھی ہوتے جو مسلمان بھی ایک

خودی کو کر بلند اتنا کہ ہر تقدیر سے پہلے
خدا بندے سے خود پوچھے بتا تیری رضا کیا ہے؟

پھول کی پتی سے کٹ سکتا ہے ہیرے کا جگر
مرد ناداں پر کلام نرم و نازک بے اثر
گلوں میں رنگ بھرے بادلوں بہار چلے
چلے بھی آؤ کہ گلشن کا کاروبار چلے
ان ہی کلیوں کو حق سے زندگی میں مسکرانے کی
جو کلیاں ابتدائے عمر سے کانٹے میں پلتی ہیں۔

☆☆☆☆☆☆

لینا چاہتے ہو تو والدین کی دعا لو
دینا چاہتے ہو تو راہ خدا میں دو۔
لڑنا چاہتے ہو تو اسلام کی خاطر لڑو۔
بیٹھنا چاہتے ہو تو اچھوں کے ساتھ بیٹھو۔
ہنسنا چاہتے ہو تو اپنی تقدیر پر ہنسو۔
رونا چاہتے ہو تو اپنے اعمال پر روؤ۔
پچھنا چاہتے ہو تو قبر کے عذاب سے بچو۔
پینا چاہتے ہو تو اپنے غصے کو پیو۔
آنا چاہتے ہو تو غریب کی مدد کو آؤ۔

صبیحہ خاتون

درجہ ۴ (الف)

اللہ میرے رزق کی برکت نہ چلی جائے
دوروز سے گھر میں کوئی مہمان نہیں ہے

انسان زندگی کے معیار بچ کر
دنیا رکھیں ہو گئی ایمان بچ کر

آہٹ سی کوئی آئی تو لگتا ہے کہ تم ہو
سایہ کوئی لہرائے تو لگتا ہے کہ تم ہو

اللہ اگر توفیق نہ دے انسان کے بس کا کام نہیں
فیضانِ محبت عام سہی عرفانِ محبت عام نہیں

اپنے من میں ڈوب کر پا جا سراغِ زندگی
تو اگر میرا نہیں بنانا بن اپنا تو بن

باغِ جنت میں محمدؐ مسکراتے آئیں گے
پھولِ رحمت کے گریں گے ہم اٹھاتے جائیں گے

پانی پانی کر گئی مجھ قلندر کی یہ بات
تو جھکا جب غیر کے آگے نہ تن تیرا نہ من

تدبیر کے دست زریں سے تقدیر درخشاں ہوتی ہے
قدرت بھی مدد فرماتی ہے جب کوشش انساں ہوتی ہے

جس کھیت سے دہقان کو میسر نہ ہو روزی
اس کھیت کے ہر خوشہ گندم کو جلا دو
مجھے اس شخص سے ملنا ہے جس نے
کسی کی بھی دل آزاری نہیں کی

ایمان کی جڑ ایک خدا کا یقین ہے

تو دونوں بلا ہوتے سنسار میں
ہوا کرتی ہر روز دونوں میں جنگ
ادھر ایک کہتا میاں چپ رہو
رہے آج دنیا میں بارش رہے
نہیں آج ہے دھوپ کا فیصلہ
شب و روز فتنے اٹھاتے یوں ہی
لڑائی سے سارا جہاں کانپتا
بہت جلد ہو جاتے زیروزبر
بری طرح گر پڑتے ہو ہو کے ماند
بلکہ سرے سے خدا ہوتا گم
خدا کو جو مانے وہی نیک ہے

اگر دو خدا ہوتے سنسار میں
خطرناک ہوتا زمانے کا رنگ
ادھر ایک کہتا کہ میری سنو
ادھر ایک کہتا کہ بھائی مرے
بگڑ کر ادھر دوسرا بولتا
خدا دونوں لڑتے لڑتے یوں ہی
زمیں کانپتی آسماں کانپتا
تو دنیا کے یہ بحر و خشک و تر
یہ تارے یہ تاروں کے جھرمٹ میں چاند
نہ ہم ہوتے بچوں جہاں میں نہ تم
حقیقت میں سب کا خدا ایک ہے

ہم کو پیدا کیا اور کھانا دیا
اور بھی تو بہت ہم پر احساں کئے
اے خدا اے خدا شکر و احساں ترا
اور اس کو سجایا ہمارے لئے
تو نے بھیجانی جن سے قرآن ملا
اے خدا اے خدا شکر و احساں ترا
دین کی راہ سیدھی دکھادی ہمیں
راہ سیدھی چلا اے میرے مہرباں

اے خدا اے خدا شکر و احساں ترا
اے خدا اے خدا شکر و احساں ترا
پیارے پیارے ہمیں ابا اماں دیئے
سارا عالم بنایا ہمارے لئے
اے خدا اے خدا شکر و احساں ترا
اچھی باتیں ملیں دین ایماں ملا
سب برائی بھلائی بتادی ہمیں
ہے یہ میری دعا میرے اللہ میاں

محمد غفران

درجہ ہفتم

غزل ہمارا اسکول

سکشا جگت کا ہے وردان
 مدرسہ سلام ہے مہمان
 ہم کو اس پر ہے ابھمان
 ہمیں بڑھانی اس کی شان
 جس سے ملتا ہم کو گیان
 کرنا ہے اس کا سمان
 پتا اس میں میرا بچپن
 ہوئی کبھی نہ کسی سے ان بن
 پایا یہیں بھاشا کا گیان
 گیان مان اور سمان
 سکشا جگت کا یہ وردان
 ہم نے پایا ہے سمان
 یہ وریالیہ بڑا مہمان
 نہیں کوئی ایسا سنسٹھان
 مدرسہ سلام ہے مہمان

رشدہ فاطمہ

سابق طالبہ

دھن کے پکے کام کے سچے پاگل پاگل سے الفاظ
 بول رہے ہیں شہر سخن میں پاگل پاگل سے الفاظ
 جس کا جتنا ظرف ہے گہرا اتنی پیاس بجھاتے ہیں
 سات سمندر برساتے ہیں بادل بادل سے الفاظ
 درد کے درماں، زخم کے مرہم راہ کے رہبر دل کے سکوں
 عیسیٰ نفس ہیں خضر صفت ہیں گھائل گھائل سے الفاظ
 محو میری فکر و نظر پر رحم و کرم ہیں یزدانی
 ورنہ میرے ہاتھ نہ آتے پاگل پاگل سے الفاظ
 ☆☆☆☆☆☆☆

برے نام سے پکارنا

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو، نہ مرد دوسرے
 مردوں کا مذاق اڑائیں ہو سکتا ہے کہ وہ ان سے
 بہتر ہوں اور نہ عورتیں دوسری عورتوں کا مذاق
 اڑائیں ہو سکتا ہے وہ ان سے بہتر ہوں۔ آپس
 میں ایک دوسرے پر طعن نہ کرو، اور نہ ایک
 دوسرے کو بر یا لقب سے یاد کرو، ایمان لانے
 کے بعد فسق میں نام پیدا کرنا بہت بری بات
 ہے۔ (سورہ الحجرات: ۱۱)

جب کوئی کسی کی نقل اتار کر اپنی اصلیت

میرا مدرسہ

مدرسہ میرا جان سے پیارا ہے
 ہم سب کی آنکھوں کا تارا ہے
 ہم سب اس کے گن گاتے ہیں
 ٹیچر من لگا کر پڑھاتے ہیں
 ہندی عربی گنت انگریزی
 ہر بھاشا کی ہوتی ہے پڑھائی
 ہندو مسلم سکھ عیسائی
 سب کو سکشا ملے میرے بھائی
 آؤ ہم سب اس کے گن گائیں
 ہم سب مدرسہ پڑھنے جائیں

چھپاتا ہے تو اس کا انجام کیا ہوتا ہے: پڑھیے

گدھا ایک تھا موٹا تازہ
 بن بیٹھا جنگل کا راجا
 کہی شیر کا چڑا پایا
 چٹ ویسا ہی روپ بنایا
 سب کو خوب ڈراتا بن میں
 پھرتا آپ گن ہو من میں
 بن پشوؤں کو آنکھ دکھاتا
 سب پر جم کر رعب جھاتا
 چلے کپٹ کی کب تک مایا
 گدھا شیر کب تک بن پایا
 کوئی گدھا کہیں چلایا
 سن اس نے بھی کان اٹھایا
 لگا رینکنے کھ اوپر کر
 بھید کھل گیا اس کا سب پر
 پھر تو جھٹ سب نے پکڑا۔
 خوب مارا چھوڑا چڑی اکھیرا
 دیتا گدھا دھوکہ نہ بھائی
 تو اس کی ہوتی نہ پٹائی

کویتا۔ میرے مئی پاپا

بھولی بھالی مئی میری
 پاپا میرے پیارے ہیں
 مئی پاپا دونوں میرے
 سارے جگ سے نیارے ہیں
 میں ہوں ان کی ننھی منی
 بھولی بھالی پیاری ہوں
 مئی پاپا دونوں ہی کی
 آنکھوں کا میں تارا ہوں۔

محمد افضل

کماری سنجنا

کلاس-7

درجہ 7

کویتائیں

☆☆☆☆☆

چوں چوں کرتی چڑیا آئی
دانا منہ میں بھر کر لائی
ڈال ڈال پر کرے بسیرا
خوب چہکتی ہوا بسیرا

☆☆☆☆☆

ایک چھوٹی سی موٹر کے اندر
آ بیٹھے یہ بھالو بندر
کہتے ہیں موٹر تیز چلاؤ
ہم کو بھی ٹھنڈی ہوا کھلاؤ۔

☆☆☆☆☆

بلی خالہ کی شادی میں
گیت سنائیں بندر ماما
رج کر اپنا خوب ڈرامہ
چن من تو کیوں روتا ہے
تیرا بھی تو نیوتا ہے۔

☆☆☆☆☆

اوپر میوے کا گودام
نیچے رہتے چوہے رام
چوری کرنا انکا کام
کھاتے کا جو اور بادام
جب آتی ہے بلی رانی
مرجاتی ہے ان کی نانی۔

☆☆☆☆☆

سورج آ کر جھانک رہا ہے
بچوں کے منہ تاک رہا ہے
بچوں اٹھو فریش ہو جاؤ
بستر چھوڑو اور نہاؤ
بچو اب اسکول کو جاؤ
پڑھنے میں دل خوب لگاؤ

☆☆☆☆☆

کالی کوئل بول رہی ہے
ڈال ڈال پر ڈول رہی ہے
کہو کہو کر گیت سناتی
کبھی کبھی میرے گھر آتی۔

☆☆☆☆☆

نام - سعدیہ بانو

درجہ مولوی II

ایک سچی کہانی قرآن کی زبانی

بد نیتی کا نتیجہ

بوئی ہی نہیں تھی۔ اب صرف میدان کے سوادہاں کچھ نہ تھا۔ جب وہ کسان اپنے کھیت اور باغ کی فصل کاٹنے اور پھل توڑنے گئے تو وہاں کچھ نہ پایا۔ وہ بہت حیران اور دکھی ہوئے اور ہاتھ مل کر رہ گئے۔ آپس میں تو تو، میں میں کرنے لگے۔ انہیں خالی ہاتھ گھر لوٹنا پڑا۔ اپنے کئے ہوئے پر شرمندہ ہوئے اور تینوں بھائیوں نے عہد کیا کہ اب ہمیشہ اپنے والد کے راستے پر چلیں گے اور جن کا جو حق ہمارے والد کے وقت میں تھا اس کو ضرور دیں گے۔

بچو۔ دیکھا تم نے نیت کا پھل انسان کو کیسے ملتا ہے۔ اس لئے ہم کو ہمیشہ اچھی نیت رکھنی چاہئے۔ ☆☆

پسندیدہ شاعری

آپ کی زندگی میں کبھی غم نہ ہو
آپ کی آنکھیں کبھی نم نہ ہوں
آپ کو ملے زندگی کی ہر خوشی
بھلے ہی اس خوشی میں ہم نہ ہوں
ملنا تھا اتفاق پھڑنا نصیب تھا
وہ آج اتنی دور ہے کل جتنا قریب تھا
پاتے ہیں کچھ گلاب چٹانوں میں پرورش
آتی ہے پتھروں سے خوشبو کبھی کبھی۔

اکرم رضا

کلاس-6

کسی گاؤں میں ایک کسان رہتا تھا۔ اس کے پاس زمین تو زیادہ نہ تھی پر اس کی نیت اچھی تھی۔ اس کا اصول تھا کہ جب وہ اپنے کھیت کی فصل کاٹتا، باغ میں سے میوے توڑتا وہ اس میں سے آدھا حصہ خدا کی راہ میں بانٹ دیتا۔ اس کسان کی یہ بھی عادت تھی کہ جب گھر میں کھانا تیار ہوتا تو اس پکے ہوئے کھانے میں سے آدھا کھانا غریبوں، فقیروں، بیواؤں، یتیموں کو کھلا کر تب خود کھاتا اس نے کبھی اپنے دسترخوان پر اکیلے کھانا نہیں کھایا۔ اس نے اپنی پوری زندگی میں اس اصول کا سختی سے عمل کیا۔ اس کے مرنے کے بعد اس کے تینوں بیٹے اس کی دولت کے مالک ہوئے۔ لڑکے اپنے والد کی طرح کچھ وقت تک چلتے رہے۔ لیکن والد کی پیروی کرنا ان کے لئے ٹیڑھی کھیر ہو گیا۔ جب فصل تیار ہو گئی تو فصل کی پیداوار کو دیکھ کر منہ میں پانی بھر آیا۔ دل میں کھڑیاں پکنے لگیں۔ آخر میں ان سے رہا نہ گیا۔ اور ایک دوسرے نے اپنے اپنے خیالات کا اظہار کیا اور باغ سے پھل توڑنے اور کھیت کی فصل کاٹنے کا آپس میں مشورہ کیا۔ آخر کار یہ طے کیا کہ کھیت دن میں کاٹنا ٹھیک نہیں ہے۔ کیونکہ اگر ہم ایسا کریں گے تو غریب اور بھکاری گھیر لیں گے اور آدھا یا کچھ کم ان کو دینا پڑے گا۔ اس لئے مناسب یہی ہے کہ راتوں رات ہمیں سارا کام کر لینا چاہئے۔ اپنا اناج اور اپنے میوے سب کے سب اپنے گھر بھی لے آئیں گے۔ مانگنے والوں کو ٹکا سا جواب بھی دینا پڑے گا۔ سانپ بھی مر جائے اور لاشی بھی نہ ٹوٹے۔ اس مشورے کے بعد وہ اپنے اپنے بستر پر کچھ دیر آرام کرنے کے لئے چلے گئے۔ اس رات کو اتنے اولے گرے کہ ان کے کھیت اور باغات سب برباد ہو گئے۔ ایسا معلوم ہوتا تھا جیسے اس جگہ پر کوئی چیز

خطرہ کی بات ہے پانچ چیزوں کو بھول کر پانچ

چیزوں سے محبت

شہناز بانو

درجہ نمشی ۱۱

ایک زمانہ ایسا آنے والا ہے کہ جس میں لوگوں کو پانچ چیزوں سے محبت ہوگی اور پانچ چیزوں کو بھلا دیں گے۔

۱۔ دنیا سے محبت کریں گے اور آخرت کو بھلا دیں گے۔

۲۔ مال سے محبت کریں گے اور حساب و کتاب

کو بھلا دیں گے۔

۳۔ مخلوق سے محبت کریں گے اور خالق کو بھلا دیں گے۔

۴۔ گناہ کے کام سے محبت کریں گے اور توبہ

کو بھلا دیں گے۔

۵۔ بڑے بڑے محل اور کوٹھیوں سے محبت کریں اور قبر

کو بھلا دیں گے۔

اللہ تعالیٰ ہم تمام مسلمانوں کو اپنی اور اپنے حبیب جناب

محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی سچی محبت نصیب فرمائے۔

ایک زمانہ ایسا آنے والا ہے کہ جس میں لوگوں کو پانچ چیزوں سے محبت ہوگی اور پانچ چیزوں کو بھلا دیں گے۔

۱۔ دنیا سے محبت کریں گے اور آخرت

کو بھلا دیں گے۔

۲۔ مال سے محبت کریں گے اور حساب و کتاب

بھلا دیں گے۔

۳۔ مخلوق سے محبت کریں گے اور خالق

کو بھلا دیں گے۔

۴۔ گناہ کے کام سے محبت کریں گے اور توبہ

کو بھلا دیں گے۔

۵۔ بڑے بڑے محل اور کوٹھیوں سے محبت

کریں گے اور قبر کو بھلا دیں گے۔

اللہ تعالیٰ ہم تمام مسلمانوں کو اپنی اور اپنے حبیب جناب

محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی سچی محبت نصیب فرمائے۔ آمین

شہناز بانو شیخ

درجہ نمشی ۱۱

بدذہابی

بعض لوگ جب کسی ناپسندیدہ صورتحال میں گھر جاتے ہیں تو وہ اپنے غم و غصہ کا اظہار کرنے کے لئے سبھی لوگوں پر پل پڑتے ہیں۔ نبی کریمؐ نے اسے سخت ناپسند کیا اور فرمایا: ”قیامت کے دن اللہ کے نزدیک مرتبے میں سب سے برا آدمی وہ ہوگا جس کی بدذہبانی سے بچنے کے لئے لوگ اسے چھوڑ دیں۔“ (مسلم)

دعا بھی سوچ سمجھ کر مانگنی چاہئے

نام - شریا بانو
درجہ - مولوی ۱۱

میں وہ بلی بن چکی تھی۔ شہزادے نے اس کو اپنے گھوڑے سے ڈھکیل دیا وہ روتی ہوئی اپنے گھر کو واپس چل دی۔ تبھی اس کے لڑکے نے دعا مانگی یا خدا ہم لوگ جیسے تھے ویسے ہو جائیں۔ اس کی دعا قبول ہوئی وہ لوگ جیسے تھے ویسے ہو گئے ان تینوں کی ایک ایک مراد پوری ہو گئی۔

دوستوں ایسی دعا نہ مانگو کہ آپ کا نقصان ہو جائے۔
ایسی دعا مانگو جو دوسروں کے کام آسکے۔

☆☆☆☆☆☆

اے انسان تجھے جو بھلائی بھی حاصل ہوتی ہے اللہ کی عنایت سے ہوتی ہے اور جو مصیبت تجھ پر آتی ہے وہ تیرے اپنے کسب و عمل کی بدولت ہے۔ (سورہ النساء: ۹)

یقیناً خدا کے نزدیک بدترین قسم کے جانور وہ بہرے گونگے لوگ ہیں جو عقل سے کام نہیں لیتے۔ (سورہ الانفال: ۲۲)

بہت دنوں پہلے کی بات ہے کہ ایک مکان میں ماں باپ اور بیٹے رہتے تھے۔ یہ لوگ بہت غریب تھے یہ تینوں کہیں جا رہے تھے تبھی ان تینوں کی ملاقات موسیٰ علیہ السلام سے ہوئی۔ باپ نے کہا اللہ پاک سے کہہ دینا کہ ہم تینوں کی ایک ایک مراد پوری ہو جائے۔ جب موسیٰ علیہ السلام وہاں سے واپس آئے تو کہا کہ تم تینوں کی ایک ایک مراد پوری ہوگی۔ یہ تینوں اپنے گھر واپس چلے آئے۔ جب صبح ہوئی تو باپ نے کہا کہ دریا سے نہا کر ہم تینوں دعا مانگیں گے۔ باپ دریا میں نہانے چلا گیا پھر اس کی بیوی نے نہا دھو کر دعا مانگی کہ یا خدا مجھے خوبصورت شہزادی بنا دے اسی وقت وہ خوبصورت شہزادی بن گئی ادھر سے ایک شہزادہ جا رہا تھا اس کی نظر شہزادی پر پڑی تب شہزادہ نے کہا اتنی خوبصورت شہزادی اس جنگل میں کیا کر رہی ہے شہزادے نے اس کو اپنے گھوڑے پر بٹھایا اور اپنے محل کی طرف چل دیا۔ جب نہا کر باپ واپس آیا تو پوچھنے لگا بیٹا تمہاری ماں کہاں گئی تو بیٹے نے کہا ماں کو ایک شہزادہ لے گیا تب باپ نے دعا مانگی کہ میری بیوی کی صورت بلی کی طرح ہو جائے اس کی دعا قبول ہوئی۔ جب شہزادہ اپنے گاؤں پہنچا تو گاؤں کے لوگوں نے کہا دیکھو شہزادہ بلی کو بیٹھا کر لایا ہے جب شہزادوں نے پیچھے مڑ کر دیکھا تو سوچ

کے ساتھ سیکولر بھی ہیں اور سبھی لوگوں کو ساتھ لیکر چلنے والے ہیں۔

سوال: ڈاکٹر صاحب، آپ کے مدرسہ میں کافی تعداد

میں غیر مسلم طلبا بھی ہیں، آپ اس سے کیا پیغام دینا چاہتے ہیں؟

جواب: دراصل ملک میں مدرسوں کے متعلق کچھ

لوگوں نے یہ پروپگنڈہ پھیلا رکھا ہے کہ مدارس میں صرف مذہبی

تعلیم دی جاتی ہے۔ یہاں معصوم بچوں کو بنیاد پرست و دہشت

گرد بنایا جاتا ہے ان میں تشدد و غیر رواداری کا عنصر بھرا جاتا

ہے۔ اس لئے میں نے کوشش کر کے غیر مسلم بچوں اور ان کے

سرپرستوں کو یہ دعوت دی آپ اپنے بچوں کو ہمارے یہاں تعلیم

دلوائیں اور مدارس کے نظام تعلیم اور کارکردگی سے واقف ہوں

اور الحمد للہ ہم اپنے اس مقصد میں کامیاب ہوئے اور ایک بڑی

تعداد غیر مسلم طلباء کی جس میں پسماندہ اور ہریجن اور دیگر جنرل

برادری کے بچے ہمارے مدرسے میں زیر تعلیم ہیں۔

ہم نے اس پروپگنڈے کو غلط ثابت کرنے کے لئے کہ

مدارس میں دہشت گردی کی تعلیم دی جاتی ہے یہ لوگ روادار

ہوتے ہیں اور وطن پرست نہیں ہوتے یہ قدم اٹھایا اور سب

کو دعوت دی کہ آپ آئیں اور دیکھیں کہ مدارس میں کیا پڑھایا

جاتا ہے۔ آپ دیکھئے یہاں ہندو مسلم سب بچے ایک ساتھ

پڑھتے ہیں، اس کے علاوہ جب بچے ایک ساتھ بیٹھ کر

پڑھیں گے تو وہ ایک دوسرے کی تہذیب و کلچر سے بھی واقف

ہونگے۔ آپسی دوریاں کم ہونگی۔ بھائی چارگی بڑھ سکے گی جس کی

آج ہمارے سماج میں سخت ضرورت ہے۔

سوال: ڈاکٹر صاحب! آپ کو مدرسہ چلانے کا خیال

کیسے آیا؟ آپ نے قومی خدمت کے لئے اس کو کیوں ترجیح دی؟

سوال: ڈاکٹر صاحب، ڈاکٹری کی تعلیم کہاں حاصل کی؟

جواب: میں نے سہارنپور بھارتیہ طبیہ کالج سے یونانی

کا ڈپلومہ کورس میں بھی تعلیم حاصل کی ہے۔

سوال: ڈاکٹر صاحب حصول تعلیم کے بعد آپ نے

ملازمت یا اپنی ذاتی پریکٹس یا تجارت کی کوشش نہیں کی؟

جواب: حصول تعلیم کے بعد گاؤں آ گیا جہاں میری

کچھ جائداد ہے اس کی دیکھ بھال میں لگ گیا اور چونکہ شروع سے

ہی مجھے سماجی فلاح و بہبود کے کام کرنے کا شوق تھا اس لئے میں

نے گاؤں ہی میں مستقل رہائش اختیار کر لی اور پردھانی کا ایکشن

بھی لڑا۔ ۱۹۸۲ء سے ۱۹۸۷ء تک پردھان بھی رہا۔

سوال: ڈاکٹر صاحب، جیسا کہ راہ نما میں مذکور ہے کہ

مولانا عبدالسلام کے سانحہ ارتحال کے بعد آپ کے کندھوں پر

کافی ذمہ داریاں آ گئیں، خصوصاً یہ مسئلہ کہ آپ کے گاؤں میں

کافی تعداد میں مختلف مکاتب فکر کے لوگ رہتے ہیں جو تعلیم سے

بہت دور ہیں۔ جن کے بچوں کو آپ نے تعلیم کی روشنی میں کھڑا

کرنے کا بیڑا اٹھایا ہے، یہ آپ کے لئے بہت بڑا چیلنج ہے، اس

چیلنج کو آپ نے کس طرح پورا کیا اور مدرسہ کو کس طرح آپ نے

اس مقام تک پہنچایا؟

جواب: ہمارے گاؤں میں مختلف مذاہب اور

مسلمانوں میں مختلف مکتب فکر کے لوگ رہتے ہیں۔ اس لئے ہم

نے بغیر کسی مسلکی یا قومی و مذہبی تفریق کے سب کو ساتھ لے کر علم

کی شمع روشن کرنے کا عہد کیا اور اپنی سوسائٹی میں سبھی مکتب فکر

کے لوگوں کو جگہ دی۔ اسی وجہ سے مدرسہ کے نام کو مدرسہ سلام

اور سنٹل کالج رکھا جس سے لوگوں کو یقین ہو کہ ہم مذہبی ہونے

الدين صاحب نے ایک خواب دیکھا تھا کہ اسلام کی ترقی کے لئے جو بھی ممکن ہو کیا جائے۔ بچوں کو اسلام کے بنیادی عقائد، طور طریقے، جینے کا سلیقہ بتایا جائے اور قوم کو تاریکی سے نکال کر اس مقام تک پہنچایا جائے جہاں مولانا ابوالکلام آزاد، سرسید احمد خان نے علی گڑھ مسلم یونیورسٹی قائم کر کے پہنچایا جس کی آج ملک میں اہم پہچان ہے۔

سب سے قبل اس کی بنیاد ۱۹۳۲ء میں آمنہ بی بی کے گھر میں رکھی گئی پھر عبد السلام صاحب کے یہاں پھر چند سال بعد مشرف صاحب پھر اسماعیل علوی صاحب کے یہاں چلتا رہا۔ جہاں چند ہی ایام گزرے ہوئے کہ امید کی کرن نظر آئی وہ یہ کہ بہت سے غیر مسلم حضرات نے بھی تعلیم کی خواہش ظاہر کی۔ مولوی نجم الدین بھی سب کو ساتھ لے کر چلنا چاہتے تھے رفتہ رفتہ مدرسہ نے اپنی رفتار پکڑی اور ہم لوگ اپنے مقصد کی جانب بڑھتے گئے۔ آج ہم یہ کہنے پر حق بجانب ہیں

قدم چوم لیتی ہے خود بڑھ کے منزل

مسافر اگر اپنی ہمت نہ ہارے

ڈاکٹر صاحب بہت بہت شکریہ۔

آپ سب کو راہ نما کے ذریعہ بتانا چاہتا ہوں کہ تعلیم کے معاملہ میں ڈاکٹر صاحب جتنے ذمہ دار و سخت ہیں اتنے ہی اچھے اور خیر خواہ بھی ہیں۔ لوگوں سے پیار و محبت و شفقت سے ملنا ان کی عادت ہے۔ آپ جب بھی ان سے ملاقات کریں گے تو بہت خوش ہونگے۔ ایک اچھے انسان کی یہی پہچان ہے۔ اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ مدرسہ کو ہر شر سے محفوظ رکھے اور ترقی عطا فرمائے۔ مدرسہ کے بانیان خیر خواہوں، ہمدردوں معاونین کی محنتوں کو قبول فرما کر ذخیرہ آخرت بنائے۔ آمین

جواب: چونکہ مدرسہ ضیاء الاسلام والد صاحب کی زیر نگرانی درجہ اول سے پنجم تک بخوبی تعلیمی خدمات انجام دے رہا تھا والد صاحب اپنی ملازمت کے دوران بھی مدرسے کی کفالت فرماتے رہے۔ والد صاحب کے انتقال کے بعد یہ خواہش ہوئی کہ اس کو آگے بڑھایا جائے اس سلسلہ میں میرے چچا جان جو والد صاحب کے پھوپھیرے بھائی تھے نے مولانا عبد السلام قدوی میموریل سوسائٹی کی تشکیل کی اور مجھے ایک ممبر کی حیثیت سے نامزد کیا اس طرح مجھے مدرسہ کی خدمت کا موقع ملا۔ مولوی نجم الدین صاحب کے انتقال کے بعد مدرسے کی پوری ذمہ داری سوسائٹی نے مجھے سونپ دی۔

سوال: ڈاکٹر صاحب! یہاں آکر مدرسے کی تعمیری و تعلیمی ترقیات و دیگر سرگرمیاں (جیسے منی آئی آئی، کمپیوٹر، ڈپلومہ کورسز کا آغاز کی وجہ سے لوگوں کی کافی امیدیں وابستہ ہیں) اس بات کا ثبوت ہیں کہ آپ نے اپنی ملازمت کی فکر و ذاتی معاش کی فکر کو زیادہ اہمیت نہ دے کر دیوانگی کی حد تک اپنے آپ کو مدرسہ کے لئے وقف کر دیا ہے۔ ڈاکٹر صاحب یہ بتائیں کہ مدرسہ کے اخراجات کیسے پورے ہوتے ہیں۔

جواب: ہمارے اساتذہ کی تنخواہ حکومت کی گرانٹ کے ذریعہ مل جاتی ہے اور تعمیری اخراجات کے لئے والد صاحب کے شاگردوں اور خاندان کے لوگوں کے تعاون سے تعمیری اخراجات پورے کئے جاتے ہیں۔

سوال: ڈاکٹر صاحب، مدرسہ کی ابتداء کب سے ہوئی؟

جواب: یوں تو اس کی ابتداء ۱۹۳۲ء میں ہوئی۔ اس وقت تعلیم کے حالات ایسے نہیں تھے نہ تو لوگوں میں تعلیمی بیداری و شوق تھا اس لئے ابتداً مدرسہ کا چلانا اتنا آسان نہ تھا۔ چچا نجم

جیون کے رنگ تہواروں کے سنگ

پڑے۔ عید کے دن سب نے انور اور سلمیٰ کے گھر دعوت اڑائی۔ سب ایک دوسرے سے گلے ملے۔ جوزف بولا دسمبر میں کرسمس کا تہوار ہے۔ اس دن سب کو دعوت میرے یہاں ہوگی۔ کرسمس کے دن جوزف کے گھر میں ایک درخت بنا تھا اس کا نام کا کرسمس ٹری یعنی کرسمس درخت، پیڑوں کو موم بتیوں، جھالروں اور غبارے سے سجایا تھا۔ تمام دوستوں نے مل کر کھانا کیا۔ چلتے وقت جوزف کے والد نے بچوں کو تحفے بھی دیے۔ جاڑا گزرتے ہی پھالگن کا سہانا موسم آ جاتا ہے۔ انہی دنوں میں ہولی کا تہوار پڑتا ہے۔ ہولی آتے ہی امر سریتا راجو انور جوزف سبھی نے پچکاریاں نکال لیں رنگ کھینے لگے۔ رنگ اور گلہال کی دھوم مچ گئی۔ جسے دیکھو وہی رنگ میں شرابور ہو گیا۔ ہمارے سارے تہوار بھائی چارے کے تہوار ہیں۔ اس میں تمام قسم کا بھید بھاؤ بھول کر ہم سب ایک دوسرے کے گلے ملتے ہیں۔ اس لیے ہمیں مل جل کر رہنا چاہیے۔

کلپنا موریہ

درجہ مولوی اول (۹)

دیوالی کا تہوار آیا صفائی کر دی گئی دیواروں پر سفیدی ہو گئی۔ دروازے کھڑکیوں کی رنگائی ہو گئی۔ دکانیں مٹی کے کھلونوں، پھلجھڑیوں، پٹاخوں سے بھر گئی۔ حلوائی طرح طرح کی مٹھائیاں بنانے لگے۔ بچوں کا جوش دیکھتے ہی بنتا تھا۔ کوئی کھلونا خرید رہا تھا تو کوئی مٹھائیاں، پوجا کے لیے لکشمی۔ گنیش کی مورتیاں سب کے ہاتھوں میں تھی۔ رات ہوتے ہی سب کے گھر دیپوں کی روشنی سے جگمگا اٹھے۔ راجو، سریتا، امر اور ان کے دوست انور سلمیٰ اور جوزف کے ساتھ دیپ جلا رہے تھے۔ کہیں پھلجھڑیاں چھوٹ رہی تھیں تو کہیں پٹانے۔ تمام بچے خوب خوش تھے۔ انور بولا عید کو مت بھولنا۔ میں ابھی سے سب کو سیونیاں کھانے کی دعوت دیتا ہوں۔ سلمیٰ چپک کر بولی۔ بھیا، عید بھی خوشیوں کا تہوار ہے۔ اس پر ہم سب کے لئے نئے کپڑے بنتے ہیں نئے کپڑوں کو پہن کر ہم عید گاہ میں جاتے ہیں۔ وہاں ہم سب ایک دوسرے سے گلے ملتے ہیں۔ ہمیشہ کی طرح اس بار بھی تم لوگوں کو میٹھی میٹھی سیونیاں کھلائیں گے۔ سریتا نے ہنس کر کہا۔ میں تو پیٹ بھر کر کھاؤں گی۔ یہ سنتے ہی سارے بچے کھلکھلا کر ہنس

موضع تھولینڈی کی ابھرتی شخصیت

ڈاکٹر احمد عدیل

بدری دت مصر کی نگرانی میں مکمل کیا جس کا عنوان تھا ”ہندی کے مسلمان کتھا کاروں کی کیرتیوں کا ساہیتیک ادھین تھا۔ ۲۰۱۴ء میں پوری کی۔ ڈاکٹر احمد عدیل صاحب ایک علم دوست شخصیت کے مالک ہیں۔ آپ کا کمرہ ایک لائبریری ہے۔ آپ کے مضامین مختلف رسالوں میں شائع ہوتے رہتے ہیں۔ ہم سب کے لئے بڑی خوشی کی بات ہے کہ ایم اے کرنے کے بعد آپ مدرسہ سلام اور نیشنل کالج میں تعلیمی خدمات بحسن و خوبی انجام دے رہے ہیں۔

ڈاکٹر احمد عدیل صاحب نے اپنی علمی کاوشوں کے ذریعہ تھولینڈی کا نام روشن کیا اور ہندی ادب کو آپ نے اس کتاب کے ذریعہ زینت بخشی۔ ہم سب اللہ تعالیٰ سے دعا گو ہیں کہ اللہ تعالیٰ آپ کو اور ترقی عطا فرما کر آپ کے علمی نفع کو عام فرمائے۔

تعارف: آپ کا اسم گرامی احمد عدیل ہے، آپ کی پیدائش موضع تھولینڈی کے علمی گھرانے میں ۱۵ ستمبر ۱۹۸۰ء کو ہوئی۔ چار بھائی بہنوں میں ڈاکٹر عدیل احمد سب سے چھوٹے ہیں۔ آپ بہت ہی نرم مزاج ہیں۔ اپنے کام میں مستعد اور چاق و چوبند رہتے ہیں۔

خاندانی پس منظر: آپ کے والد جناب مولوی احتشام علی مرحوم ایک علم دوست تھے۔ محبت قوم و وطن فرد تھے اپنے بچوں کی تعلیم پر خصوصی توجہ دی تھی۔ آپ سے بڑے دو بھائی، ایک جامعہ ایک جامعہ ملیہ دہلی میں ملازم ہیں۔ دوسرے اسی مدرسہ کے سینئر استاذ ہیں۔ ایک بہن ہیں۔ آپ کی والدہ ایک دیندار صوم و صلوة کی پابند خاتون ہیں جو ابھی باحیات ہیں۔

آپ کا تعلیمی سفر: ڈاکٹر احمد عدیل صاحب کی ابتدائی تعلیم مدرسہ ہذا (اسلامیہ اسکول) میں ہوئی جو نیر درجہ گاہوں کے ہی جو نیر ہائی اسکول میں ہوئی۔ ۹ سے ۱۲ تک تعلیم گاندھی ودیالیہ انٹر کالج چھراواں ۱۹۹۶ء میں ہوئی۔ ایم اے، بی اے فیروز گاندھی کالج رائے بریلی سے ۲۰۰۳ء میں مکمل کیا اور پی ایچ ڈی کانپور یونیورسٹی سے ڈاکٹر

ثناء پروین

منشی

مدرسہ سلام اور نیشنل کالج، رائے بریلی

تاثرات

عزیز قارئین!

پڑھنے نہیں جاسکتے ان کے لئے یہ اسکول بہت اچھا ہے کیونکہ وہ یہاں پر رہ کر تعلیم حاصل کر سکتے ہیں۔ ہم بھی اسی اسکول کے پڑھے ہوئے ہیں اور آج ہم ایم اے کر رہے ہیں۔ ہمیں یہ اسکول بہت پسند ہے۔ اس اسکول کے استادوں میں اپنے طلباء کیلئے جو لگاؤ ہے وہ لگاؤ ہمیں بہت کم اسکولوں میں دیکھنے کو ملتا ہے۔ ہم بھی باہر پڑھنے جاتے ہیں لیکن جو تہذیب و ادب ہم نے یہاں پر سیکھا وہ ہمیں کہیں بھی نہیں ملی۔ اس اسکول میں صبح کے وقت دعا پڑھائی جاتی ہے اور سارے کلمے پڑھائے جاتے ہیں۔ یہاں پر دن کا آغاز خدا کو یاد کر کے کیا جاتا ہے۔ ہمیں ایسا بہت کم اسکولوں میں دیکھنے کو ملتا ہے۔ اس اسکول میں جلسے بھی ہوتے ہیں جس سے بچوں کو حوصلہ ملتا ہے۔ جس سے وہ اپنی بات بڑوں کے سامنے بول سکیں اور انہیں کوئی ہچکچاہٹ نہ محسوس ہو۔ ہم اب بھی اس اسکول کو یاد کرتے ہیں۔ تو ہمیں ہمارے پرانے دن یاد آ جاتے ہیں۔ بہت خوش نصیب ہیں وہ بچے جو اس اسکول میں پڑھتے ہیں اور انہیں ایسے حوصلہ افزائی والے استاد ملے۔ ہم اپنے آپ کو بہت خوش نصیب مانتے ہیں کہ ہم ایسے اسکول میں پڑھے ہیں۔

حنا پروین ادریسی (سابق طالبہ)

ایم اے ایجوکیشن

دیانند پتھر اوواں پی جی کالج

پتھر اوواں، رائے بریلی۔

میں حنا پروین ادریسی اپنے مدرسے میں تعلیم کے دوران جو سیکھا اس کے بعد یہاں سے نکل کر ڈگری کالج گئی وہاں کے ماحول کو دیکھا کہ مدرسہ کے وقت میں مجھے کس اعلیٰ تہذیب سے سنوارا اس کا احساس اس وقت ہوا جب میں نے ڈگری کالج کی لڑکیوں کو بیلاگ گھومتے ہوئے دیکھا اگرچہ ہر لڑکی ایک طرح کی نہیں ہوتی ہے لیکن زیادہ تر لڑکیاں وہاں پر گھومتی نظر آتی ہیں۔ اسی وجہ سے ماں باپ اپنے بچوں کو کالج بھیجنے سے کتراتے ہیں اور بچوں کی تعلیم رک جاتی ہے کیونکہ زیادہ تر کالجوں کا ماحول اچھا نہیں ہوتا ہے۔ میں خود بھی ایم اے (ایجوکیشن) کر رہی ہوں لیکن جو تعلیم اور ادب مجھے یہاں سیکھنے کو ملا وہ ماحول مجھے کہیں نہیں مل پایا۔ ہم اپنے اسکول کو کبھی نہیں بھول سکتے۔ مدرسہ سلام اور نیشنل کالج بہت ہی اچھا اسکول ہے۔ یہاں کے استاد بہت اچھے ہیں اور یہاں پر تعلیم بھی بہت اچھی دی جاتی ہے۔ اس اسکول کا رہن سہن کافی اسکولوں سے اچھا اور مختلف ہے۔ یہاں پر تہذیب و ادب کا بھی خیال رکھا جاتا ہے۔ اس اسکول میں استاد اپنے طلبہ کو اپنے بچوں کی طرح سمجھتے ہیں اور وہ اپنے طلباء کو پیار سے پڑھاتے ہیں۔ ہر ماں باپ کی خواہش ہوتی ہے کہ انکے بچوں کو اچھی تعلیم ملے۔ اگر صحیح نظریہ سے دیکھا جائے تو یہاں پر بہت اچھی پڑھائی ہوتی ہے جو بچے کسی مجبوری کی وجہ سے باہر

تاثرات

پہچان کم ہوتی ہے۔ اگر ان کو ہمدردی سے گائیڈ کیا جاتا رہے تو یہی بچے سنور سکتے ہیں۔ ورنہ بعد میں وہ پچھتاتے ہیں۔ میں نے اس سلسلے میں مدرسہ سلام اور نیشنل کالج کو اس بارے میں بہت اچھا پایا۔ اور اس کی قدر یہاں سے جانے کے بعد معلوم ہوئی۔ اس مدرسے نے ہمارے ذہن و فکر پر جو چھاپ چھوڑی ہے وہی آج ہمارے لئے رہنما اصول ہیں۔ میں شکر گزار ہوں اپنے مدرسے کے اساتذہ اور مینجمنٹ کی جنہوں نے ہمیں سنوارا سچا یا سماج کے قابل بنایا۔ لوگ اس بات کی تعریف کرتے ہیں۔

رافیہ خاتون

(سابق طالبہ)

بی اے، مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی

عزیز قارئین!

میں رافیہ خاتون، نے مدرسہ سلام اور نیشنل کالج تھولینڈی سے تعلیم حاصل کی ہے اب میں بی اے مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی سے کر رہی ہوں۔ میں نے جب مدرسے سے تعلیم مکمل کرنے کے بعد باہر کی دنیا میں قدم رکھا تو مجھے ایک خلا سا محسوس ہوا جو ادب، سلیقہ، اسلامی دینی ماحول، وطن پرستی، انسانیت، معاشرے میں رہنے کا ڈھنگ ایک دوسرے سے ہمدردی، قوم کی خدمت کا جذبہ جو ہمارے اساتذہ نے ہم کو دیا تھا وہ بہت کم اسکولوں میں سکھایا جاتا ہے۔ میں اور اسکولوں ڈگری کالجوں کی بچیوں سے ملی ان کے خیالات اور ان کی طرز زندگی کو دیکھا تو مجھے بے ساختہ اپنا مدرسہ، وہاں کی تربیت یاد آگئی۔ اگرچہ تمام اسکول کالج طلباء و طالبات کا بھلا چاہتے ہیں ان کو کسی لائق بنانا سب کا مقصد ہوتا ہے۔ لیکن توجہ کی کمی کی وجہ سے اور کچھ باہر کے ماحول کی خرابی کی وجہ سے طلباء و طالبات میں وہ چیز پیدا نہیں ہو پاتی۔ چونکہ بچوں کی یہ عمر ایسی ہوتی ہے کہ انہیں اچھے برے کی

العلم نور والجهل ظلام

علم روشنی ہے جہالت اندھیرا ہے

جہالت کا راستہ آپ کو بے ہودہ، بے سلیقہ بنائے گا۔ آپ کے اندر بھلا برا سمجھنے کی صلاحیت نہ کے برابر ہوگی۔ آپ چاہتے ہوئے بھی کسی مقام پر نہیں پہنچ سکتے۔ قدم قدم پر آپ دوسروں کے محتاج ہوں گے۔ اس لیے میری تمام بھائیوں اور بہنوں سے اپیل ہے کہ علم حاصل کرو، روشنی میں رہو علم وہ روشنی ہے جو جہالت کی تاریکی کو انسان کے دل و دماغ سے نکال کر علم کی روشنی بھر دیتی ہے۔ اسی اپیل کے ساتھ اپنی بات ختم کرتی ہوں۔ اور اللہ پاک سے دعا کرتی ہوں کہ ہمارے سینوں کو علم کی روشنی سے منور فرمائے۔ آمین

حصول علم کی خاطر سفر سے نہ گھبراؤ

ذرائع جو بھی ممکن ہوں بروئے کار لے آؤ

صالحہ پروین ۱۱

نشانی اول

عزیز ساتھیو اور پیاری بہنو! علم کا حاصل کرنا فرض ہے یہ وہ دولت ہے جو کسی بھی حال میں انسان سے جدا نہیں ہو سکتی نہ تو کوئی چور اسے چرا سکتا نہ کوئی اسے چھین سکتا ہے یہ وہ دولت ہے جو خرچ کرنے سے بڑھتی ہے۔ اسی لئے اسے لازوال دولت کہا گیا ہے۔ علم کی روشنی میں انسان اچھا برا دیکھ سکتا ہے۔ اسی لئے پیارے آقا صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا علم ایک روشنی ہے اور علم نہ حاصل کرنے والا اندھیرے میں ہے۔ اس کے دل کی آنکھ اچھا برا نہیں دیکھ سکتی۔ علم کا چھپانا جرم و گناہ ہے۔ علم کو دوسروں تک پہنچاؤ یہ بہت بڑی نیکی ہے۔ دنیا میں اللہ نے دو میں سے ایک راستے کو منتخب کرنے کا اختیار انسان کو عطا فرمایا ہے ایک علم کا راستہ اور دوسرا جہالت کا راستہ۔ آپ جو راستہ اپنائیں گے اس کے اثرات آپ پر پڑیں گے۔ علم کی راہ اپناؤ اس سے آپ کے اندر سچائی، تمیز، ادب، معرفت بھلے برے کی پہچان آئے گی۔ دنیا و عقبیٰ میں عزت ملے گی۔ علم تنہائی میں بہترین ساتھی ہے۔ اس کے برعکس

لا یدخل الجنة قتات (الحدیث)

چغمل خور جنت میں داخل نہ ہوگا

عزیز ساتھیو! چغمل خوری ایک سماجی برائی ہے۔ چغمل خور بڑا ذلیل انسان ہوتا ہے، ایسا انسان معاشرہ میں لوگوں کی نظروں میں گر جاتا ہے۔

چغمل خور کا کام یہ ہے کہ دو آدمیوں کے درمیان جھوٹی سچی باتیں بیان کر کے آپس میں لڑا دیتا ہے۔ وہ خود کے نزدیک بھی ذلیل ہوتا ہے۔ پیارے آقا صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک بار ارشاد فرمایا کہ میں تم کو بتاؤں کہ سب سے برے لوگ کون ہیں؟ پھر آپ نے خود ہی ارشاد فرمایا کہ جو چغلیاں کھاتے پھرتے ہیں، دوستوں کے آپس میں تعلقات خراب کرتے ہیں۔

ایک مرتبہ آپ کا گزر ایک قبرستان پر ہوا۔ ان میں ایک قبر والے پر عذاب اس لئے ہو رہا تھا کہ وہ لوگوں کی چغلی کرتا پھرتا تھا۔ پیارے آقا کا حکم تھا کہ میرے اصحاب میں سے کوئی مجھ تک کسی کی بات نہ پہنچائے کیونکہ میں چاہتا ہوں کہ جب میں تمہارے پاس آؤں تو میرا دل سب کی طرف سے صاف ہو۔ کتنی پیاری بات آقا نے فرمائی۔ ہم سب کو اس پر عمل کرنا چاہئے تاکہ آپس میں تعلقات خراب نہ ہوں۔ محبت باقی رہے اور محبت کا جذبہ متاثر نہ ہو۔

قرآن نے اس سے بچنے کا ایک بہت اچھا نسخہ بتایا ہے کہ چغمل خور کی بات ہی نہ مانی جائے۔ اللہ پاک سے دعا ہے کہ ہم سب کو چغمل خوری کی لعنت سے محفوظ رکھے۔ آمین

چغمل خوری کی عادت باعث ذلت ہے میرے دوستو

خدا ہم کو بچائے اس بری لعنت سے میرے دوستو

نو مولود بچے کو ماں کا پہلا تحفہ

جب اللہ تعالیٰ بچے کی ولادت فرمادے تو ماں کیلئے یہ خوشی کا موقع ہوتا ہے اور بچے کے لئے پہلا تحفہ جو ماں اسے پیش کر سکتی ہے وہ ماں کا اپنا دودھ ہے۔ ماں کو چاہئے کہ بچے کو اپنا دودھ ضرور پلائے، ہاں اگر میڈیکلی ٹھیک نہیں ہے یا بچے کے لئے نقصان دہ ہے تو یہ اور بات ہے لیکن اگر ماں کا دودھ بچے کے لئے ٹھیک ہے تو اس سے بہتر غذا بچے کو اور کوئی نہیں مل سکتی۔ ہر ماں کو چاہئے کہ ضرور دودھ پلائے تاکہ بچے کے اندر ماں کی محبت آجائے۔ اگر ماں دودھ نہیں پلائے گی تو ماں کی محبت بچے کے اندر کیسے آئے گی۔ عام طور پر ماں اپنی خوبصورتی کو سامنے رکھتے ہوئے دودھ پلانے سے گھبراتی ہیں اور شروع سے ہی بچے کو ڈبے کے دودھ کا عادی بنا دیتی ہیں۔ پھر جب ڈبے کا دودھ پی کر بچے بڑے ہوتے ہیں تو ماں کو ماں نہیں سمجھتے، اسی لئے کسی شاعر نے کہا ہے:

طفل سے بو آئے کیا ماں باپ کے اعتبار کی

دودھ ڈبوں کا پیا تعلیم ہے سرکار کی

جب نہ دین کی تعلیم پائی ہے نہ ماں کا دودھ پیا ہے تو پھر اس کے اندر اچھے اخلاق کہاں سے آئیں گے؟

بچے پر ماں کے دودھ کے اثرات: ایک ماں اپنے بیٹے سے ناراض ہوگئی اور کہنے لگی بیٹے، تم نے میری بات نہ مانی تو کبھی بھی میں تمہیں اپنا دودھ معاف نہیں کروں گی۔ اس نے مسکرا کر کہا، امی میں تو ڈبے کا دودھ پی کر بڑا ہوا ہوں۔ آپ نے تو مجھے اپنا دودھ پلایا ہی کہاں۔ مجھے معاف کیا کریں گی؟ یہ ایک حقیقت ہے اور اکثر یہ دیکھا گیا ہے کہ ڈبوں کے دودھ کے اثرات اور ہوتے ہیں اور ماں کے دودھ کے اثرات اور ہوتے ہیں۔ ماں کے پہلے دن کے دودھ میں بچے کو جو قوت و طاقت اور قوت مدافعت حاصل ہوتی ہے وہ سیکڑوں ٹانگوں سے حاصل نہیں ہو سکتی۔

عربیہ عزیز

سابق طالبہ، درجہ ہنسی دوم

بڑوں مشورہ کے بغیر کوئی قدم اٹھانا خطرہ کو دعوت دینا ہے

شافیہ خاتون

مولوی 1

غار کا راز

ہو گیا پھر وہ آہستہ آہستہ قدموں سے اندر کی طرف بڑھنے لگا اب آوازیں صاف سنائی دینے لگیں۔ جیسے کوئی کہہ رہا ہو سر ہم اس بینک کو نہیں لوٹ سکتے ہیں۔ وہ بیچ چوراہے پر ہے اور اس میں سیوری ٹنگی رہتی ہے۔ سرنے کہا نہیں ہم اسے لوٹ لیں گے میرے ذہن میں ایک پلان ہے۔ قادر اب انہیں دیکھ سکتا تھا یہ وہی چور تھے جنہوں نے مندر سے سونے کی مورتی چرائی تھی۔ پولیس کو ان کی تلاش تھی۔ قادر نے سوچا میں ابھی جا کر ان کا بھانڈا پھوڑتا ہوں اور جیسے مڑا اس کا ہاتھ کسی چیز سے ٹکرایا اور زوروں کی آواز ہوئی۔ چور نے اسے دیکھ لیا۔ وہ اسے پکڑنے کیلئے اس کی طرف بڑھے اور انہوں نے اسے گھیر لیا اس نے اپنے جیب میں ہاتھ ڈال کر بندوق نکالنا چاہی تو کیا دیکھتے ہیں کہ بندوق اس کی جیب میں نہیں ہے ہوا یہ تھا کہ جب وہ گرا تھا تو اس کی بندوق وہیں پتھر کے پاس گر گئی تھی چوروں نے اسے پکڑ لیا اور اسے باندھ دیا ایک بولا سر اس نے ہمارا پلان سن لیا ہے اسے مار دینا چاہئے سرنے کہا نہیں اسے ہم ابھی نہیں ماریں گے ابھی اسے باندھ کر رکھو ادھر جب شام تک قادر گھر نہیں پہنچا تو اس کے گھر والوں کو اس کی فکر ہونے لگی دوسرا دن بھی گزر گیا قادر گھر نہیں پہنچا اس کے باپ نے پولیس والوں کے ساتھ پورا جنگل چھان مارا مگر قادر نہیں ملا وہ اسے تلاش کرتے ہوئے اسی غار کے پاس پہنچے بھی ایک سپاہی کی نظر ریوالور پر پڑی اس نے اسے اٹھا کر داروغہ جی کو دی داروغہ نے ریوالور کو پہچان لیا۔ یہ انہیں کار ریوالور تھا اب انہیں پورا داروغہ سمجھنے میں دیر نہیں لگی۔ وہ پوری ہوشیاری سے غار میں سپاہیوں کے ساتھ گھس گئے اور انہوں نے چوروں کو پکڑ لیا اور قادر جو ایک کھمبے سے بندھا تھا اس کو کھلوا لیا۔ قادر رونے لگا اور اپنے باپ سے معافی مانگنے لگا کہ اب وہ کبھی ایسی غلطی نہیں کرے گا۔ اس نے وعدہ کیا کہ وہ دل لگا کر پڑھے۔ اس طرح ان چوروں کا پردہ فاش ہوا۔

ایک لڑکا تھا جس کا نام قادر تھا جو بہت شیطان تھا۔ بڑھنے لکھنے میں اس کا دل نہیں لگتا تھا بس دن بھر وہ لوف لڑکوں کے ساتھ گھومتا رہتا تھا۔ اس سال اس کا انٹر کا امتحان تھا۔ گھر والوں کو اس کی فکر ہوتی تھی کہ وہ اگر اسی طرح گھومتا رہا اور پڑھائی نہیں کی تو وہ فیل ہو جائے گا۔ اس کے باپ جو پولیس میں داروغہ تھے اور وہ اس پر ہمیشہ تنبیہ کیا کرتے تھے لیکن وہ اپنے باپ کی ایک بھی نہیں سنتا تھا۔ ایک دن اس کے باپ کسی وجہ سے ڈیوٹی پر نہیں گئے تھے انہوں نے دوپہر کا کھانا گھر پر رکھا اور آرام کرنے کے لئے لیٹ گئے اور ان کی آنکھ لگ گئی۔ ادھر قادر کو باہر نکلنے کا موقع مل گیا باہر جاتے وقت اس کی نظر باپ کی وردی پر پڑی اس نے ان کا ریوالور نکال لیا اور شکار کرنے کے لئے جنگل کی طرف چل پڑا جو ایک میل دور تھا۔ وہ جنگل بہت خطرناک سمجھا جاتا تھا لوگ دن میں بھی اس جنگل میں گزرنے سے ڈرتے تھے اس میں ایک غار ۲۰۰ میٹر لمبی سرنگ نما بنی تھی لوگوں کا خیال تھا کہ اس غار سے خوفناک آوازیں آتی تھیں اور کوئی بھی ادھر سے جاتا تو بیچ کر نہیں آتا تھا لیکن قادر اپنے باپ کی طرح نڈر تھا اس نے جنگل جا کر شکار کرنے کی ٹھان لی وہ جنگل میں گھومتا ہوا اس غار کے پاس پہنچ گیا اس نے بھی اس غار کے بارے میں سنا تھا تبھی اسے وہاں کچھ جنگلی خرگوش نظر آئے اس نے ایک خرگوش کا نشانہ بنا کر ٹریگر دبا دیا۔ گولی سیدھا خرگوش کو جا کر لگی۔ قادر اس کو پکڑنے کے لئے اس کی طرف بڑھا تبھی خرگوش تھوڑا سا بھاگنے لگا۔ قادر اس کے پیچھے اس کو پکڑنے کی کوشش کر رہا تھا کہ اچانک خرگوش غار کے منہ پر پہنچ گیا۔ قادر اسے پکڑنے کے لئے دوڑا اور اس کا پیر ایک پتھر سے ٹکرایا اور وہ وہیں گر پڑا پھر اس نے اٹھ کر اسے پکڑنے کی کوشش کی۔ وہ غار کے تھوڑا اندر پہنچ گیا۔ غار صاف ستھری تھی اور روشنی اندر جا رہی تھی۔ وہ تھوڑا اندر پہنچا کہ کسی کے بات کرنے کی آواز اس نے سنی اور وہ محتاط

ہمارے ملک پر قدرت کے احسانات

لیا۔ ہندوستان کو انگریز نامی قوم کے حوالے کر دیا۔ انگریزوں کے جانے پر یہاں خوفناک دنگے فسادات ہوئے۔ لاکھوں افراد ہلاک ہو گئے۔ بھارت دو حصوں میں بٹ گیا۔ ایک حصہ ہندوستان دوسرا حصہ پاکستان کہلایا۔ بھارت میں ہندو زیادہ ہیں اور پاکستان میں مسلمان زیادہ ہیں۔ اب ہم اپنے ملک کو بٹنے نہیں دیں گے ہندو مسلم سکھ عیسائی سب لوگ مل جل کر محبت سے رہیں گے تاکہ ہمارا اور ہمارے ملک کا نام دنیا میں روشن ہو۔ یہی بھارت سے سچی محبت اور حب الوطنی ہے۔

نام۔ محمد کلیم

کلاس۔ منشی ۱۱

☆☆☆☆

اے نبی! نرمی و درگزر کا طریقہ اختیار کرو۔

معروف کی تلقین کئے جاؤ اور جاہلوں سے نہ الجھو۔ اگر شیطان تمہیں اکسائے تو اللہ کی پناہ مانگو، وہ سب کچھ سننے والا اور جاننے والا ہے۔

(سورہ الاعراف: ۱۹۹-۲۰۰)

☆☆☆☆

ہمارے ملک کا نام بھارت ہے۔ بھارت بہت بڑا ملک ہے۔ اس کے شمال میں ہمالیہ پہاڑ اور جنوب میں بحر ہند ہے۔ اللہ تعالیٰ بڑے رحم دل ہیں۔ انہوں نے ہمارے ملک پر بڑے احسانات کئے ہیں۔ اس کی زمین بڑی زرخیز بنائی ہے۔ بھارت میں بارش میں کھیتی ہوتی ہے۔ اس کے لئے دریا و تالاب بھی بنائے گئے ہیں جن سے سینچائی کر کے ہم اناج اگاتے ہیں۔ طرح طرح کی جاندار، چرند پرند بھی ہمارے ملک میں پائے جاتے ہیں۔ ان کے دودھ، گوشت، اور کھال سے ہم فائدہ اٹھاتے ہیں۔ اس کے علاوہ ہمارے ملک میں طرح طرح کے پھول، پتی، پیڑ پودے ہیں جن کو ہم کام میں لاتے ہیں۔ ہمارے ملک میں بڑے بڑے میدان، لمبی چوڑی ندیاں، اونچی اونچی پہاڑ و ہرے بھرے جنگل ہیں۔ انہیں کی وجہ سے ہمارا ملک بہت خوبصورت ہو گیا ہے۔ ہمارے ملک کی سرزمین کے نیچے بھی خدا نے بڑے معدنیات بھر دیے ہیں۔ کہیں سے لوہا نکلتا ہے تو کہیں کوئلہ، کہیں مٹی کا تیل اور کہیں سونا چاندی نکلتا ہے۔ بھارت میں پہلے مسلمان راج کرتے تھے بہت برسوں تک انہوں نے ملک کو بنایا سنوارا لیکن جب حکمران قوم کے مفاد سے دور ہو گئے تو خدا نے ان سے حکومت چھین

ایماندار چور

دوست ہے۔ لوگوں نے مل کر چور کو اس کے گھر پہنچا دیا اور جب سنا کہ گھر کے اندر گیا تو گھبرا کر چیخ پڑا کہ اس کے گھر کی تجوری کا تالا ٹوٹا ہوا تھا اور تجوری خالی تھی۔ محلے میں کہرام مچ گیا کہ سنا کہ گھر میں چوری ہو گئی۔ ادھر تینوں چور اپنی کامیابی پر بہت خوش تھے انہوں نے مال کا برابر حصہ لگا کر بانٹ لیا اور اس سب مال کو اس تجوری میں رکھ دیا جس میں پہلے کی چوری کا مال تھا۔ اور جب وہ تینوں سو گئے تو اسی رات ان کے گھر میں بھی چور آ گئے اور تجوری کا تالا توڑ کر سارا مال چرالے گئے۔ ان تینوں کو پتہ بھی نہیں چلا۔ جب صبح ہوئی تو تینوں چوروں نے دیکھا کہ ان کے گھر میں بھی چوری ہو گئی ہے۔ وہ تینوں چوری کی بات کسی کو بتا بھی نہیں سکتے تھے کیونکہ وہ مال چوری کا تھا۔ ان تینوں کو اپنی غلطی کا احساس ہو گیا۔ وہ اپنی غلطی پر اتنا شرمندہ ہوئے کہ ان تینوں نے فیصلہ کیا کہ وہ اب کبھی بھی چوری نہیں کریں گے اور اپنے آپ کو پولیس کے حوالے کر دیں گے اور ہمارے گھر سے جو چوری ہوئی ہے ہم پولیس تھانے میں اس کی رپورٹ درج کرائیں گے اور چور کو پکڑوانے میں پولیس کی مدد کریں گے کیونکہ پیسہ چاہے جتنا بھی کم ہو محنت کا ہو چوری ہونے پر دکھ بہت ہوتا ہے۔ ان تینوں نے اسی دن پولیس تھانے میں جا کر ساری بات پولیس کو بتائی۔ پولیس نے ان چوروں کی مدد سے دوسرے چوروں کو پکڑ لیا اور قانون کے مطابق ان چوروں کو سزا دی گئی اور سنا کہ مال چوروں سے لے کر سنا کہ وہ واپس کر دیا سنا کہ بہت خوش ہوا۔

تو دیکھا دوستوں چوری کرنا کتنی بری بات ہے۔ چوری سے ایمان خراب ہو جاتا ہے۔ چوری انسان کو لالچی بنا دیتی ہے۔ چوری کر کے کوئی انسان بیچ نہیں سکتا۔ وہ ایک نہ ایک دن پکڑا ضرور جاتا ہے اسی لئے تو کہتے ہیں چوری کبھی نہیں کرنی چاہئے ہمیشہ محنت سے کام کرنا چاہئے۔☆☆☆

کسی گاؤں میں تین چور رہا کرتے تھے۔ گاؤں میں اتحاد نہ ہونے کی وجہ سے وہ ہمیشہ لوگوں کو بیوقوف بنا کر چوری کرتے تھے۔ جب کوئی چور کی باتوں میں پھنس جاتا تو گاؤں والے اس کا ساتھ بھی نہ دیتے تھے۔ اس لئے چور کی ہمیشہ جیت ہوتی تھی کیونکہ گاؤں میں ایک نہ ایک دن لڑائی ضرور ہوتی تھی۔

اس طرح تینوں نے مل کر یہ پلان بنایا کہ کسی مال دار کے گھر چوری کی جائے۔ تینوں نے برابر کے کام بانٹ لئے۔ ایک ایکٹنگ کرے گا اور موقع دیکھتے ہی دونوں چور گھر میں گھس کر چوری کر لیں گے اور چوری میں جو بھی دولت ملے گی اس میں تینوں کا برابر حصہ ہوگا۔ تینوں کو یہ بات صحیح لگی۔

ایک شام تینوں چوری کے ارادے سے سنا کہ گھر کے پاس گئے اور ایک دوسرے کے کان میں سارا کام سمجھا دیا۔ ایک چور نے سنا کہ گھر کے دروازے پر آواز دی اور دونوں چور درخت کی آڑ میں چھپ گئے جیسے ہی سنا کہ گھر کے باہر آئے تو پہلا چور اس سے کچھ باتیں کرنے لگا اور باتیں کرتے کرتے بیہوش ہونے کی ایکٹنگ کرنے لگا اور زمین پر گر پڑا۔ سنا کہ اور سنا کہ گھر کے لوگ سمجھے کہ وہ بیہوش ہو گیا ہے۔ سب باہر آ گئے اور محلے والے بھی جمع ہو گئے اور اسے ٹھنڈے مقام پر لٹا کر اس کے ہوش میں آنے کا انتظار کرنے لگیں۔ ادھر دونوں چور موقع دیکھتے ہی سنا کہ گھر میں گھس گئے اور گھر میں کوئی نہ ہونے کی وجہ سے انہوں نے تجوری کا تالا توڑ کر چوری کر لی۔ گھر کے سارے لوگ باہر گئے تھے اس لئے انہیں کوئی پکڑ نہ سکا۔ انہوں نے اپنی پلاننگ کے حساب سے کام کیا۔ سارا پیسہ اور سونا چاندی چپکے سے اپنے گھر میں جا کر چھپا دیا اور واپس آ کر بے ہوش ہوئے چور کے پاس آ کر ایکٹنگ کرتے کرتے ہوئے بولے ارے یہ تو میرا دوست ہے اسے کیا ہو گیا۔ آپ لوگ اسے میرے گھر پہنچا دیجئے۔ یہ میرا

زکوٰۃ کا سماجی پہلو

بھائیو بہنو! ہم سب انسانی معاشرے میں رہتے ہیں۔ سماج کے باہر ہماری زندگی مشکل ہی نہیں اجیرن ہو جائے گی ہمارے معاشرے میں ہر طرح کے لوگ رہتے ہیں۔ سب کے کام آنا سب کی مصیبت میں کھڑے ہونا ہمارا سماجی فرض ہے۔ خوش معاشرے میں ہم بھی خوش رہیں گے۔ ہمارے معاشرے میں اگر کچھ لوگ فاقہ کشی، غربت میں مبتلا ہیں تو ان کی ترقی رک جائے گی۔ ہمارا سماج کچھڑ جائے گا۔ اس پریشانی کے حل کے لئے اسلام نے زکوٰۃ کے نظام کو نافذ کیا ہے۔ مال و دولت تو اللہ کی دین ہے، جس کو جتنا چاہے دے۔ اس سے فخر نہیں کرنا چاہئے۔ مالداروں پر اللہ نے یہ قانون فرض کر دیا ہے کہ وہ اپنی دولت کا ڈھائی فیصد نکال کر سماج کے پریشان حال لوگوں کی مدد کریں تاکہ معاشرے میں خوشحالی باقی رہے۔ اگر کوئی مال دار غریبوں، یتیموں کا یہ حق نہیں دے رہا ہے تو وہ ظالم اور غریبوں کا حق مارنے والا ہے۔

نام - شمع بانو 1

درجہ - نئی 11

فقیری نسخہ

میں نے ایک فقیر سے کہا کہ مجھے گناہ کی بیماری ہے، کوئی علاج بتائیے، تب فقیر نے درج ذیل نسخہ عطا فرمایا:

توبہ کی مصری، توحید کے پتے، سچ کے پھول، دیانتداری کے پھل اور پارسائی کا عرق

طریقہ عمل

ان سب چیزوں کو شریعت کی اوکھلی میں ڈال کر طریقت کے ڈنڈے سے خوب باریک کر لو۔ جب تیار ہو جائے تو حقیقت کی چھنی میں چھان لو پھر معرفت کی ہانڈی میں ڈال کر محبت کے چولہے پر رکھ کر عشق الہی کی آگ جلائیں۔ جب پک کر تیار ہو جائے تو سادگی کی بوتلوں میں بھر لیں اور ایک تولہ بلاناغہ رحم دلی اور انصاف کے پتے سے نوش فرمائیں۔

مندرجہ ذیل باتوں سے پرہیز کریں۔

تکبیر کی مولیٰ، شرک کی پیاز، غصے کی مرچ، حسد کی آگ اور لالچ کی مٹھاس کے نزدیک نہ جائیں، انشاء اللہ بیماری دور ہوگی۔

بیربل کی چالاکی

اگر تم نے ایسا کر دیا تو بہت سا انعام دوں گا اگر آنا کانی کی تو مہاراج سے کہہ کر نوکری چھڑا دوں گا۔

نوکرنے بیربل کی بات مان لی۔ شام کو جب وہ اس موسم کے پتلے کو لارہا تھا تو جان بوجھ کر اسے تھکی دے کر سلانے کی اداکاری کر رہا تھا۔ بادشاہ دور سے اس کا روئی کو دیکھ کر دل ہی دل میں خوش ہو رہے تھے کہ اچانک تالاب میں پوتے کا گرنا دیکھ کر دوڑے دوڑے بغیر کسی کو ساتھ لئے تالاب میں شہزادے پوتے کو بچانے کی خاطر کود پڑے۔ لیکن جب ہاتھ میں صرف موسم کا پتلا آیا تو نوکر کے اوپر خوب برسنے لگے۔ بیربل پاس ہی کھڑے تھے۔ ان کو دیکھ کر بادشاہ سمجھ گئے کہ ضرور کچھ دال میں کالا ہے۔ بیربل نے مسکراتے ہوئے جواب دیا: 'مہاراج! آخر آپ اتنی دور سے پیدل دوڑتے ہوئے کیوں آئے؟ کیا آپ کے پاس کوئی سواری نہیں ہے؟ اور تو نوکر چا کر بھی کب کام آئیں گے، آپ ساتھ میں کسی کو بھی نہیں لائے۔'

بادشاہ اس طنز کو سمجھ رہے تھے۔ بیربل نے کہا۔ مہاراج! اسی طرح بھگوان شری کرشن کو اپنے بھکتوں سے بہت زیادہ پیار تھا۔ اس پیار کے سامنے انہوں نے اپنا سکہ ایشور یہ سب کچھ قربان کر دیا۔

بادشاہ یہ سن کر کو معاف کر بیربل پر انتہائی خوش ہوئے۔

☆☆☆☆☆☆

ایک دن شام دور گھومنے پھرنے میں بادشاہ اور بیربل دھرم گرتھوں کے بارے میں بات چیت کر رہے تھے۔ باتوں ہی باتوں میں اکبر بادشاہ نے پوچھا۔ بیربل تمہارے پاس دھرم گرتھوں میں لکھا ہے کہ بھکت کسل بھگوان سری کرشن ہاتھی کی درد میں ڈوبی آوازن کر پیدل ہی بغیر کسی نوکر چا کر کو ساتھ لئے اس کی حفاظت کے لئے دوڑ پڑے۔ آخر اتنی سواریاں اور نوکر چا کر کب کام آتے ہیں؟ اپنے ساتھ وہ کچھ بھی نہ لے گئے۔

بیربل اسی وقت جواب تو نہ دے سکے مگر بولے 'مہاراج وقت آنے پر آپ کو میں اس کا مناسب جواب دوں گا۔ بادشاہ نے شرط کو خوشی خوشی قبول کر لیا۔ بادشاہ کو ان کا سب سے چھوٹا پوتا بہت پیارا تھا۔ بادشاہ مسلسل اسے گودی میں کھلانا پسند کرتے تھے۔ روز کی طرح ایک دن نوکر مہاراج کے پیارے پوتے کو مہاراج کے پاس لے جا رہا تھا۔ یہ دیکھ بیربل کو شام میں گھومنے پھرنے والے کئے سوال کا معقول جواب دینے کی سوچھی۔ دوسرے دن نوکر کو بلا کر کہا کہ جب تم شام کو پوتے کو لے کر بادشاہ کی طرف جاؤ تو پوتے کو نہ لے جا کر اس موسم کے پتلے کو لے جانا جو دیکھنے میں ہو بہ ہو اسی کے جیسے کپڑے پہنے ہوئے تھے۔ بیربل نے بات آگے بڑھائی کہ جب تم اس کو لے کر آنا تو جھوٹ موٹ تالاب کے پاس پھسلنے کا بہانہ کرنا لیکن خیال رکھنا کہ یہ پتلا پانی میں ہی گرے

نام- عائشہ عزیز

درجہ-5

محنت کا پھل

ایک وقت کی بات ہے کہ ایک جگہ ایک مچھوارا روز مچھلی پکڑنے جاتا تھا۔ ایک بھکاری روز مچھوارے سے بھیک مانگنے آتا۔ مچھوارا اسے روز ایک مچھلی دے دیتا۔ اس طرح مفت کا مال ملنے سے بھکاری اور کاہل ہو گیا۔ ابھی تک بھیک مانگنے کے لئے محنت کرتا تھا اب اس نے سوچا اب ہمیں محنت کرنے کی کیا ضرورت۔ بھیک میں مچھوارے سے مچھلی مل جاتی ہے جس سے میرا پیٹ بھر جاتا ہے چنانچہ ایک دن مچھوارے نے مچھلی دینے سے انکار کر دیا مچھلی کی

جگہ سے ایک جال دے کر کہا جاؤ اب محنت کر کے مچھلی پکڑو خود کھاؤ اور پیسے کماؤ بھکاری نے مچھوارے کی بات مان لی اور ایسا ہی کرنے لگا خدا نے برکت دی اس کی محنت رنگ لائی کچھ ہی دنوں کی محنت کے بعد وہ بھکاری بہت امیر آدمی بن گیا اور بھیک مانگنے کی ذلت سے بھی بچ گیا۔ پیارے ساتھیو۔ محنت کا پھل اچھا ہوتا ہے اللہ بھی اس کی مدد کرتا ہے۔ اس قصے سے ہم کو یہ سبق ملتا ہے کہ ہم سب کو محنت کرنی چاہئے تاکہ ہم بھی کامیاب ہوں۔

علم کی باتیں

- ۱- بھارت کے پہلے صدر جمہوریہ کون تھے؟
ڈاکٹر راجندر پرساد۔
- ۲- بھارت کا سپریم کورٹ کہاں ہے؟
نئی دہلی میں
- ۳- ہندوستانی آئین میں گاندھی جی کے کن اصولوں کو اپٹ کیا گیا ہے؟
سامج کے کمزور یا چھڑے طبقوں کے عروج کی کوشش۔
- ۴- گنگا دریا کہاں سے نکلتی ہے؟
گنگوتری گلشیر سے۔
- ۵- بھارت میں سب سے بڑا تیل ریفائنری فیکٹری کس شہر میں ہے؟
متھرا (یوپی)۔

جادوگر ایمان لے آئے

ضرورت ہے کہ انسان خود کو اس لائق بنا لے کہ اس کا پیدا کرنے والا اسے اپنی حفاظت میں لے لے۔ موسیٰ علیہ السلام کے واقعہ سے ہمیں یہی سبق ملتا ہے کہ ایک طرف فرعون اپنی پوری آب و تاب، قوت و طاقت کے بل پر موسیٰ اور آپ کے ماننے والوں کو مٹانا چاہ رہا ہے، دوسری طرف اللہ نے موسیٰ کو اپنی حفاظت میں لینے کا اعلان کر دیا، پھر دنیا نے دیکھ لیا کہ فرعون کا کیا حشر ہوا اور موسیٰ کی کس طرح حفاظت ہوئی۔

پروین بانو
درجہ نشی II

☆☆☆☆☆

جو کچھ بھی نقصان تمہیں ہو اس پر تم دل شکستہ نہ ہو اور جو کچھ اللہ تمہیں عطا فرمائے اس پر پھول نہ جاؤ۔ اللہ ایسے لوگوں کو پسند نہیں کرتا جو اپنے آپ کو بڑی چیز سمجھتے ہیں اور فخر جتاتے ہیں۔ (سورہ الحدید: ۲۳)

☆☆☆☆☆

جب موسیٰ علیہ السلام کافرعون کے جادوگروں سے مقابلہ ہوا تو جادوگروں نے جادو سے رسیوں کو سانپ بنا دیا، موسیٰ علیہ السلام نے اپنے عصا کو میدان میں ڈالا جو حکم خداوندی سے جادوگروں کے سارے سانپ نکل گیا۔

جادوگروں کو یقین آ گیا کہ بے شک حضرت موسیٰ اللہ کے رسول ہیں اور بے شک یہ اللہ کا عطا کردہ معجزہ ہے۔ جب ہی تو ہمارا تمام سحر باطل ہو گیا۔ یقین کا آنا تھا کہ جادوگر چلا اٹھے: آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ (ترجمہ) ہم موسیٰ اور ہارون کے رب پر ایمان لائے۔ پھر سجدہ میں گر پڑے اور کہا ہم موسیٰ اور ہارون کے رب پر ایمان لائے۔ ہم دونوں جہاں کے پروردگار پر ایمان لائے۔ اللہ کی شان:

بلعم باعورا کو دوزخ ملے

جنتی ساحر بنیں فرعون کے

ترے محفوظ کو کوئی ضرر پہنچا نہیں سکتا

عناصر چھو نہیں سکتے فلک دھمکا نہیں سکتا

مطلب یہ ہے کہ جس کے اچھے کاموں سے خدائے پاک راضی ہو کر اسے اپنی حفاظت میں لے لے تو اس کو دنیا کی کوئی طاقت نقصان نہیں پہنچا سکتی۔ کوئی عنصر اس کو چھو نہیں سکتا، مٹانا تو دور کی بات ہے۔ نہ ہی فلک دھمکا سکتا ہے۔ بس

غیبت

ہوئے بھائی کا گوشت کھانا پسند کریگا؟ دیکھو تم خود اس سے گھن کھاتے ہو۔ (سورہ الحجرات: ۱۲)

غیبت کرنے کے نتائج بہت برے ہوتے ہیں:

۱۔ غیبت کرنے والے کا مقام گر جاتا ہے اور اس کی بات کا اعتماد اور اس کی عزت بھی ختم ہو جاتی ہے۔

۲۔ غیبت سے لوگوں میں نفرت پیدا ہو جاتی ہے۔ عدل و انصاف اور رحم دلی ختم ہو جاتی ہے۔

۳۔ غیبت سے انسان بزدل اور پست ہمت ہو جاتا ہے۔

۴۔ غیبت کرنے والا اللہ کا مجرم ہوتا ہے اور جس شخص کی وہ غیبت کرتا ہے اس کا بھی۔

۵۔ غیبت سے احسان، مساوات اور اخلاق حسنہ تباہ و برباد ہو کر رہ جاتے ہیں۔

۶۔ غیبت کا کفارہ یہ ہے کہ جس شخص کی غیبت کی ہے اس شخص سے معافی مانگ لے۔ اگر وہ شخص مر گیا ہو یا کسی وجہ سے یہ دوسری جگہ جا بسا ہو اور اس سے ملنا ناممکن ہو تو پھر اس کے لئے دعا کرے اے اللہ ہماری اور اس کی بخشش فرما۔

یاد رکھیں کہ غیبت کا مرض انانیت اور خود پسندی کی بنیاد پر پیدا ہوتا ہے اگر انسان تواضع اور خاکساری کا طریقہ اختیار کرے تو ان شاء اللہ غیبت کے مرض سے محفوظ رہے گا۔ یاد رکھیں انانیت اور خود پسندی کا مرض بڑی کوشش اور جدوجہد سے ختم ہوتا ہے۔ انسان میں اکثر اخلاقی کمزوریاں انانیت ہی کی وجہ سے پیدا ہوتی ہیں۔ انانیت سب سے بڑا روحانی مرض ہے۔ اس سے دیگر روحانی بیماریاں پیدا ہوتی ہیں۔ اللہ انانیت سے ہماری حفاظت فرمائے۔ آمین

میمونہ خاتون، استانی فوقانیہ

ہمارے معاشرے میں بہت سی برائیاں جنم لے چکی ہیں اور روز بروز پروان چڑھتی جا رہی ہیں۔ اس سے پہلے کہ عروج تک پہنچ جائیں، ان کا سدباب ضروری ہے۔ ان برائیوں میں ایک برائی غیبت ہے۔ اخلاقی بیماریوں میں غیبت جس قدر بڑی بیماری ہے بد قسمتی سے ہمارے معاشرے میں اس قدر عام ہے۔ بہت ہی کم لوگ ہونگے جو اس بیماری سے محفوظ ہونگے۔ اصطلاح شریعت میں آدمی کا کسی شخص کے پیٹھ پیچھے اس کے متعلق ایسی بات کہنا جو اگر اسے معلوم ہو تو اس کو ناگوار گزرے، غیبت کہلاتا ہے۔ غیبت کے بارے میں نبی کریمؐ نے فرمایا: غیبت یہ ہے کہ تو اپنے بھائی کا ذکر اس طرح کرے جو اسے ناگوار گزرے۔ عرض کیا گیا کہ اگر میرے بھائی میں وہ بات پائی جاتی ہو تو اس صورت میں آپ کا کیا خیال ہے؟ فرمایا: اگر اس میں وہ بات موجود ہو تو تو نے اس کی غیبت کی اور اگر اس میں وہ بات نہیں ہے تو تو نے اس پر بہتان لگایا۔

نبی کریمؐ نے فرمایا: میں شب معراج میں کچھ ایسے لوگوں پر گذرا جو اپنے ناخونوں کے ساتھ اپنے چہرے نوچ رہے تھے۔ میں نے کہا: اے جبرئیل، یہ کون لوگ ہیں؟ انہوں نے کہا یہ وہ لوگ ہیں جو دوسروں کی غیبت کرتے تھے۔ حضورؐ نے مردوں اور فوت شدہ لوگوں کی غیبت کرنا مرے ہوئے گدھے کا گوشت کھانے کے برابر ہے۔ یعنی کہ مردوں کی غیبت سے بھی منع فرمایا ہے۔

قرآن میں غیبت کی بہت زیادہ مذمت آئی ہے۔ اللہ تعالیٰ نے غیبت کو مرے ہوئے بھائی کا گوشت کھانے سے تشبیہ دے کر اس برائی کے انتہائی گھناؤنے ہونے کا تصور واضح کیا ہے۔

چنانچہ ارشاد باری تعالیٰ ہے: اور تم میں سے کوئی کسی کی غیبت نہ کرے، کیا تمہارے اندر کوئی ایسا ہے جو اپنے مرے

کنجوس بڑھیا اور فوجی

جاتا تو کتنا مزہ آتا۔ بڑھیا نے تھوڑا سا نمک لاکر دیا۔ فوجی نے اسے پتیلی میں ڈال دیا۔ کچھ وقت بعد فوجی پھر بولا اس میں اگر پچاس گرام چاول ملا دیا جائے تو اور بھی مزہ آتا۔ بڑھیا کچھ چاول بھی نکال لائی۔ فوجی نے چاول بھی اس پتیلی میں ڈال دیے۔ کچھ وقت بعد فوجی پھر بولا بس اب صرف گھی کی کمی رہ گئی ہے گھی کے ساتھ ڈھیلے بہت مزیدار بنتے ہیں۔ بڑھیا اٹھی گھی تو میرے پاس ہے۔ وہ چچہ بھر گھی بھی لے آئی۔ فوجی نے گھی پتیلی میں ڈال دیا تھوڑے وقت بعد فوجی بولا کھانا تیار ہو گیا۔ اس نے آگ پر سے پتیلی اتار لی پھر بڑھیا کی آنکھ بچا کر پتیلی میں سے ڈھیلے نکال کر باہر پھینک دیا۔ تب فوجی نے کچھ کھانا اپنے لئے پر دوسا اور کچھ بڑھیا کے لئے۔ بڑھیا نے کھایا تو اسے بڑا مزیدار لگا۔ وہ کہنے لگی میں سوچ بھی نہیں سکتی تھی کہ ڈھیلے اتنے مزیدار ہوتے ہیں۔

ایک فوجی تھا۔ جنگ کے بعد وہ اپنے گھر واپس آ رہا تھا چلتے چلتے وہ ایک گاؤں میں پہنچا۔ وہ بہت تھک گیا تھا۔ ایک بڑھیا کے گھر پہنچ کر اس نے بڑھیا سے کہا، میں تھکا ہوا ہوں میں اندر آ کر آرام کرنا چاہتا ہوں۔

بڑھیا کو رحم آ گیا۔ وہ فوجی کو گھر کے اندر لے گئی۔ تھوڑی دیر آرام کے بعد فوجی نے بڑھیا سے کچھ کھانے کو مانگا۔ بڑھیا تھی کنجوس اس نے جھوٹ موٹ کہہ دیا کہ اس کے پاس کھانے کے لئے کچھ نہیں ہے۔ فوجی بڑھیا کی چالاکی سمجھ کو گیا۔ صحن میں آ کر اس نے ڈھیلا اٹھایا اور بڑھیا سے بولا میں اس ڈھیلے کو پکا کر کھاؤں گا۔ بڑھیا کو بڑا تعجب ہوا۔ اس نے فوجی کو برتن دے دیا۔ فوجی نے ڈھیلا پتیلی میں ڈال دیا کچھ پانی ڈال کر ابلنے کو لئے رکھ دیا۔ کچھ وقت بعد فوجی نے بڑھیا سے کہا، اگر اس میں تھوڑا سا نمک بھی پڑ

کیا آپ جانتے ہیں پھلوں کا بادشاہ کیسا ہوتا ہے

ہنس کے بولا اچھا ٹانا

میں کر جاؤں سیر سپاٹا

3- ڈاکٹر انکل کہتے ہیں اکثر

کھاؤ کھیر اکٹری گاجر

تم کو کیوں نہیں اچھا لگتا

پیشتری برگر آئیس کریم

سندر اور جیلا آم

کتنا رنگ رنگیلا آم

سب کے دل کو بھاتا آم

سب کا جی لپچاتا آم

ریچہ

ریچہ بیٹھاریل میں

مزا آ گیا کھیل میں

ریچہ بیٹھاریل میں

وافیہ بانو

درجہ - ٹی 1

سمجھدار کسان نے سمجھایا اتحاد میں طاقت ہے

کسان نے ہنس کر کہا کیوں بچوں تم نے دیکھا جب تک ساتوں تیلی تیلی لکڑیاں ایک دوسرے سے بندھی تھیں تب تک انہیں توڑنا کتنا مشکل تھا۔ جب یہ الگ الگ ہو گئیں تو تم نے ایک ایک کر کے توڑ دیا۔ تم ساتوں بھائی جب تک آپس میں محبت سے رہو گے تب تک کوئی بھی تکلیف نہیں پہنچا سکتا۔ جب لڑائی جھگڑا کر کے الگ ہو جاؤ گے تب تمہیں سب دکھ دیں گے۔ تم میری اس وقت کی بات کو ہمیشہ ذہن میں رکھنا۔

میرے پیارے دوستوں دیکھو اتحاد میں کتنا زور ہوتا ہے۔

شبینہ بانو

کلاس - منشی 2

بہت دنوں کی بات ہے کہ کسی گاؤں میں ایک سمجھدار کسان رہتا تھا۔ اس کی کھیتی بڑی اچھی تھی۔ اس کے سات بیٹے تھے۔ سب آپس میں مل کر رہتے تھے۔ کچھ برے لوگوں نے کسان کے بیٹوں میں پھوٹ ڈال دی۔ وہ آپس میں لڑنے جھگڑنے لگے۔ کسان کو یہ دیکھ کر بہت دکھ ہوا۔ اس نے ایک دن سات تیلی تیلی لکڑیاں ایک ساتھ باندھی پھر ساتوں بیٹوں کو بلایا۔ پہلے بڑے بیٹے سے کہا بیٹا یہ گٹھر کو توڑ۔ اس نے بہت کوشش کی پر وہ گٹھر نہ ٹوٹا۔ کسان نے دوسرے بیٹے سے کہا تم توڑو۔ اس نے بھی توڑنے کی بہت کوشش کی پر گٹھر نہ ٹوٹا۔ اب کسان نے رسی کاٹ دیا اور ساتوں بیٹوں کو ایک ایک لکڑی دے کر کہا اب اپنی اپنی لکڑی توڑو۔ ساتوں نے اپنی اپنی لکڑیاں توڑ ڈالی۔

ہم کو کیسا بننا چاہئے

اللہ ایک ہے، اللہ کو ایک مانیں گے۔ اللہ کے رسول سچے ہیں، رسول کو سچا جانیں گے۔ اللہ ہی سب کا خالق و مالک ہے۔ رسول کے ہم سب امتی ہیں اور ان بتائے ہوئے راستے پر چلیں گے۔ قرآن پڑھیں گے، قرآن کو مانیں گے اور حدیث پڑھیں گے اور حدیث کی باتوں پر چلیں گے اور اپنے اپنے مذہب پر چلیں گے اور اسلام کو پھیلائیں گے۔ اسلام کے لئے تکلیفیں اٹھائیں گے۔ اللہ کے آگے سر جھکائیں گے۔ نماز پڑھیں گے نماز کے پابند بنیں گے۔ لکھیں گے پڑھیں گے اور مذہب کا علم حاصل کریں گے۔ اور دوسروں کو مذہب کی اچھی باتیں بتائیں گے۔ سارے جہان کو اللہ کا پیغام سنائیں گے۔ گنہگار دنیا کو اچھا بنائیں گے، جھوٹ بولنے سے روکیں گے اور سارے لوگوں کو اللہ کا چاہنے والا بنائیں گے۔

والدین نے ہم پر کتنے احسان کئے ہیں، پالا پوسا ہمیں کھلایا پلایا اتنا بڑا کیا ہمارے لئے کتنے دکھ سہے اور ہم بھی ان کے لئے دکھ سہیں گے اور ان کی خدمت کریں گے۔

اونچے لوگوں کی اونچی بات

سب سے اچھی حفاظت اللہ کی

حضرت ابو بکر رضی اللہ عنہ نے صحن میں ایک مسجد بنائی تھی۔ صحن کی مسجد میں نماز پڑھتے تھے کافر صحن کی مسجد میں نماز پڑھنے سے روکتے تھے صحن کی مسجد میں قرآن پڑھتے تھے۔ قرآن بہت اچھا پڑھتے تھے۔ قرآن کا اثر کافر عورتوں پر ہوتا تھا۔ قرآن کا اثر کافر بچوں پر ہوتا تھا۔ کافر صحن کی مسجد میں قرآن پڑھنے سے روکتے تھے کافر کہتے تھے ہماری عورتیں ہمارے بچے تمہیں نماز پڑھتے دیکھیں گے اور مسلمان ہو جائیں گے، ہماری عورتیں تمہیں نماز پڑھتے دیکھیں گی وہ مسلمان ہو جائیں گی ہمارے بچے تمہیں قرآن پڑھتے سنیں گے وہ مسلمان ہو جائیں گے ہماری عورتیں تمہیں قرآن پڑھتے سنیں گی وہ مسلمان ہو جائیں گی۔ تم صحن کی مسجد میں نماز مت پڑھو۔ تم صحن کی مسجد میں قرآن مت پڑھو۔ تم چھپ کر نماز پڑھو تم چھپ کر قرآن پڑھو۔ حضرت ابو بکرؓ نے چھپ کر نماز پڑھنے سے انکار کر دیا۔ حضرت ابو بکرؓ نے چھپ کر قرآن پڑھنے سے انکار کر دیا۔ اس انکار سے کافر پھر خفا ہو گئے۔ کافروں نے خفا ہو کر کہا۔ اب ہم ابو بکرؓ کے ضمانت دار نہیں رہے۔ حضرت ابو بکرؓ نے کہا میرا کوئی ضمانت دار نہ ہو اللہ ہماری حفاظت کرے گا میں اللہ کی حفاظت میں رہوں گا۔ اللہ کی حفاظت سب سے اچھی حفاظت ہے۔

روما پروین

آلورام جیسے مت بنوورنہ

آلورام سے ہو گئی بھول
پڑھنے پہنچ گئے اسکول
پر کچھ بھی نہ کری پڑھائی
بچوں سنگ بس کری لڑائی
پھر ٹیچر نے کری پٹائی
بھاگے سرپٹ چھوڑ پڑھائی

یا سمین بانو

درجہ -7

☆☆☆☆

اللہ کسی خود پسند اور فخر جتانے والے

کو پسند نہیں کرتا۔ (سورہ لقمان: ۱۸)

☆☆☆☆

لوگوں سے اپنی تعریف سننے کی محبت

آدمی کو اندھا اور بہرا کر دیتی ہے پھر اسے نہ اپنے

عیب نظر آتے ہیں نہ دوسروں سے اپنے عیوب

سننا پسند کرتا ہے۔ (حدیث نبوی)

☆☆☆☆☆☆

سب سے بڑا یقین و سچ توحید ہے

توحید کا مطلب ہے اللہ کو ایک جاننا اور ماننا یعنی اس کی باتوں پر یقین کرنا کہ ساری کائنات، زمین و آسمان میں جو کچھ ہے ان سب کا پیدا کرنے والا تو تمہارا صرف اللہ ہی ہے۔ اس کا کوئی شریک نہیں۔ دنیا میں جو کچھ ہو رہا ہے سب اس کے حکم ہیں، چاند سورج کا نکلنا، بارش کا ہونا زمین سے مختلف قسم کے اناج بیل بوٹے پھل پھول اور جو بھی چیزیں ہیں اور جو کچھ ہمیں ملتا ہے سب اس سے ملتا ہے۔ وہ اگر چاہے تو نقصان کی چیزوں کو نفع میں بدل دے اور نفع کی چیزوں کو نقصان میں بدل دے اس پر کسی کا بس نہیں چلتا فرشتے جنات نبی رسول پیغمبر اور ساری مخلوق اس کی محتاج ہیں۔ اسلام کے کلمہ لا الہ الا اللہ میں ذکر کیا گیا ہے یعنی ایسی طاقت اور ہستی ہی اس قابل ہے کہ اس کی عبادت کی جائے۔ اس کے سوا کوئی عبادت کے لائق نہیں۔

کوئی فیصلہ کرتا تو دوسرا کچھ اور کرتا۔ جس طرح ایک کالج میں دو پرنسپل، ایک حکومت میں دو بادشاہ نہیں ہو سکتے، ایک گاؤں میں دو پردھان نہیں ہو سکتے اسی طرح پوری کائنات میں ایک سے زیادہ خدا نہیں ہو سکتے۔ دوسری بات یہ ہے کہ دنیا کے لوگ اپنا کام اور حکومت چلانے میں لازمی طور پر اپنے مددگاروں کے محتاج ہوتے ہیں۔ کیونکہ وہ ہر جگہ جا نہیں سکتے، سارے کام خود کر نہیں سکتے۔ اس لئے دوسرے کی مدد لینا ان کی مجبوری ہے۔ لیکن اللہ تعالیٰ قادر مطلق ہے ہر جگہ موجود ہے سب کچھ دیکھتا ہے اور سب کچھ سنتا ہے اس کو کسی کی مدد کی ضرورت نہیں ہے۔ اس لئے جو لوگ یہ کہتے ہیں ہم بتوں اور ولیوں کو پکارتے ہیں کہ وہ ہماری بات اللہ تک پہنچاتے ہیں سراسر غلطی پر ہیں۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا وہ سب کچھ جاننے والا ہے۔ سب کی سنتا ہے، وہ کسی کا محتاج نہیں ہے۔ یہ سوچنا کہ اللہ ہمارے بتوں معبودوں کی بات سننے اور ماننے پر مجبور ہے گناہ کی بات ہے۔

جو لوگ اس کو چھوڑ کر یا اس کے ساتھ کسی اور کی عبادت کرتے ہیں وہ غلطی پر ہیں اور وہ بہت بڑے گناہ کا کام کر رہے ہیں۔ اللہ کی ذات و صفات میں کسی اور مخلوق کو شریک کرنا بے عقلی کی بات ہے۔ قرآن مجید میں خود اللہ نے فرمایا ہے اگر زمین و آسمان میں کئی خدا ہوتے تو فساد ہو جاتا ایک خدا کہتا کہ بارش ہوگی دوسرا خدا کہتا کہ دھوپ نکلے ایک خدا

نام۔ افسانہ

کلاس۔ نئی ۱۱

شیطان کی چال

ایک تھالڑکا اس کا نام تھا ظفر، ظفر بہت اچھا لڑکا تھا پڑھنے لکھنے کا بے حد شوقین تھا۔ روز پابندی سے مدرسے جاتا وقت سے پہنچتا، دل لگا کے اپنا سبق یاد کرتا۔ گھر کے لوگ اس سے بہت خوش تھے۔ ماسٹر صاحب بھی بہت محبت کرتے تھے۔ مگر یہ باتیں شیطان کو کب بھاتی ہیں۔ وہ تو انسان کو ذلیل و خوار اور گمراہ دیکھنا چاہتا ہے۔ بہکانے کا تو اس نے بیڑا اٹھا رکھا ہے۔ شیطان نے سوچا کہ اگر ظفر لکھ پڑھ جائے گا تو خود بھی نیک بن جائے گا اور جاہلوں کو بھی سیدھی راہ پر لے جائے گا۔ پھر ہماری دال کیسے گلے گی۔ یہ خیال آتے ہی شیطان نے اپنے ایک لڑکے کو بلایا۔ شیطان کے بھی بہت سے بال بچے تھے اور آدم کی اولاد کی طرح ساری دنیا میں پھیلے ہوئے ہیں۔ انسانوں کو بہکاتے پھرتے ہیں۔ ہاں! تو شیطان نے اپنے لڑکے کو بلا کر کہا تم کوئی ایسی ترکیب سوچو کہ ظفر کا لکھنا پڑھنا چھوٹ جائے نہیں تو ہمارے حق میں بہت برا ہوگا نہ اس پر ہمارا کوئی بس چلے گا اور نہ ہم اس کے گھر والوں کو بہکاسکیں گے۔ شیطان نے کہا یہ کون سی بڑی بات ہے میں ابھی جانتا ہوں۔ یہ تو میرے بائیس ہاتھ کا کھیل ہے۔ ایک دن کی بات ہے ظفر صبح سویرے اٹھا، وضو کر کے نماز ادا کی، تلاوت کے بعد ناشتہ کیا، بستہ بغل

میں دبایا، مدرسے کے لئے چل پڑا۔ تھوڑی دور گیا تھا کہ ایک دوست کی شکل میں وہ شیطان نمودار ہوا۔ سلام کے بعد بولا میاں ظفر کہاں چل دیے۔ ظفر نے جواب دیا مدرسے جا رہا ہوں۔ شیطان نے کہا ابھی تو میاں سات بھی نہیں بچے آپ اتنے سویرے چل دئے۔ ظفر نے کہا ذرا وقت سے پہلے پہنچنے میں اچھا رہتا ہے باقی ماندہ کام بھی مکمل کر لیتا ہوں۔ درجے کی صفائی اور سامان کی ترتیب بھی اچھے سے کر لیتا ہوں۔ شیطان نے کہا اجی چلے جانا جلدی کیا ہے آؤ تھوڑی دیر انٹے کھیلیں۔ ظفر نے کہا نہیں بھائی اب وقت نہیں دیر ہو جائے گی۔

شیطان نے کہا یا تم بھی کیسی باتیں کرتے ہو۔ صرف دو منٹ کھیلیں گے، دیر نہیں ہوگی۔ ظفر نے کہا وعدہ کرتے ہو۔ شیطان نے کہا ہاں تمہارے سر کی قسم بس دس منٹ بعد چلے جانا۔ رنگ برنگے انٹے دیکھ کر ظفر کا جی لپچا گیا چلو دس منٹ کھیل ہی لیں اتنے میں کیا دیر ہو جائے گی۔ ظفر نے بستہ رکھ کر کھیل شروع کر دیا آہستہ آہستہ کھیل میں لطف آنے لگا اب تو میاں ظفر بھول ہی گئے کہ مجھے مدرسے جانا ہے بہت دیر کے بعد یاد آیا۔ جلدی سے کھیل بند کیا اور بستہ اٹھا کر چلنے کے لئے تیار ہوئے اب شیطان نے دوسری ترکیب سوچی بولا ظفر اب تو بہت دیر ہوگئی اب اگر مدرسے گئے تو خواہ مخواہ

باغ میں جا کر چوری بھی کی اور یہاں آ کر جھوٹ بھی بولا۔ چنانچہ انہوں نے غصے میں آ کر ظفر کو مارا پیٹا ماسٹر صاحب سے شکایت کی۔ سب کی نظروں سے ظفر گر گیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ان کا دل پڑھنے سے اچاٹ ہو گیا۔ اب وہی مدرسہ جہاں ظفر کی سب عزت کرتے تھے جہاں وہ وقت سے پہلے پہنچتے تھے اب انہیں کاٹ کھانے لگا ماباپ کے کہنے پر اگر مدرسے جاتے بھی تو پڑھنے میں دل ہی نہیں لگتا۔ اس طرح شیطان کا حربہ چل گیا اور ظفر کا پڑھنا لکھنا چھوٹ گیا۔ اب وہ جاہل بنے گھومتے ہیں اور برے برے کام کرتے ہیں۔ شیطان خوش ہے کہ ایک کو تو پڑھنا لکھنا چھڑا کر ہم نے سیدھی راہ سے بھٹکا دیا۔

آپ نے دیکھا کہ کس طرح ظفر شیطان کے بہکاوے میں آ گیا اور برباد ہو گیا۔ اس لئے کہتے ہیں کہ ہمیں شیطان کے بہکاوے میں نہیں آنا چاہئے۔ شیطان ہمیشہ انسان کی بربادی ہی چاہتا ہے آبادی نہیں۔

نام - حنا
کلاس - نئی ۱۱

☆☆☆☆☆

اپنے کام احسن انداز میں کرو کیوں کہ اللہ تعالیٰ خوبصورت کام کرنے والوں کو پسند کرتا ہے۔ (سورۃ البقرہ: ۱۹۵)

پٹوگے دوپہر کا کھانا تو تمہارے ساتھ ہے۔ گھر بھی جانے کی ضرورت نہیں چلو باغ چلو وہی کھیلیں گے شام کو گھر چلے جانا۔ ظفر دھو کے میں آ گیا مدرسے جانے کے بجائے شیطان کے ساتھ ہو لیا۔ دونوں باغ گئے تھوڑی دیر تفریح کی اتنے میں بھوک لگ گئی دونوں نے مل کر کھانا کھایا مگر کھانا تو صرف ایک کے لئے تھا نتیجہ یہ ہوا کہ پیٹ نہ بھرا۔ اب شیطان نے ایک ترکیب سوچی۔ بولا اس باغ میں بیر کے کئی درخت ہیں چلو بیر توڑ کر کھائیں گے پیٹ بھر جائے گا۔ ظفر پہلے جھجکا پھر بولا یہ تو چوری ہے۔ میں نے چوری نہیں کروں گا۔ اچھا تو توڑ دیں گے نہیں نیچے گرے پڑے ہی کھالیں گے اس میں کون سا بڑا گناہ ہے شیطان بولا۔ بھوک تو لگی ہی تھی میں ظفر تیار ہو گئے باغ میں جا کر گرے پڑے بیر کھائے مگر جب درخت پر نگاہ گئی لال پیلے بیر دیکھے تو منہ میں پانی آ گیا شیطان نے کہا اچھا تم مت توڑنا میں ڈھیلے پھنکتا ہوں ابھی بہت سے گریں گے تم بھی کھا لینا۔ تھوڑی دیر یہ حرکت کی اتنے میں دور سے باغبان نے دیکھا دونوں کو لاکار دونوں گرتے پڑتے بھاگے اب تو گھر کے علاوہ کوئی جگہ نظر نہ آئی ناچار وقت سے پہلے گھر پہنچے شیطان نے سمجھا دیا تھا کہ اگر گھر والے جلد آنے کا سبب پوچھیں تو کہہ دینا مدرسے میں آج جلدی چھٹی ہو گئی اور استاد اگر غیر حاضری کا سبب پوچھیں تو بتا دینا کہ کل میری طبیعت خراب ہو گئی تھی۔ چنانچہ ظفر نے یہی کیا شام کو باغبان نے ظفر کے ابا سے بیر توڑنے کی شکایت کی۔ تحقیق کرنے پر معلوم ہوا کہ ظفر مدرسے سے بھی نہیں گیا تھا

سب سے غریب آدمی

مہاراج آپ کی دعا سے میرے خزانے میں ہیرے جوہرات ہیں سامان خرید کر استعمال کر سکتا ہوں۔ مہاتمانے کہا پھر بھی تم غریب ہو اگر تمہارے پاس خزانے میں جوہرات کا انبار لگا ہے تو ہتھیاروں سے لیس فوج کہاں لے کر جا رہے ہو، کس لئے حملہ کرنے جا رہے ہو، جنگ میں کتنوں کی جان جائے گی لوگ اپنا جانچ ہوں گے، بچے یتیم ہوں گے عورتیں بیوہ۔ یہ سب کس لئے؟ تب تم سے غریب میری نظر میں کون ہو سکتا ہے۔ بادشاہ کی نظریں جھک گی۔ اس نے سکے کو مٹھی میں زور سے دبا لیا۔ مہاتما کے پیر چھو کر فوج کو لوٹنے کا حکم دیا۔ بادشاہ فوج کے پیچھے چلتے ہوئے مٹھی میں بند سکے کو بار بار دیکھتا رہا گویا جنگ میں انمول خزانہ جیت کر واپس لوٹ رہا ہو۔

نام۔ سابیہ بانو
کلاس۔ 6

☆☆☆☆☆

جو غصے کو پی جاتے ہیں اور دوسروں کے قصور معاف کر دیتے ہیں ایسے نیک لوگ اللہ کو بہت پسند ہیں۔

(سورہ آل عمران: ۱۳۴)

پرانے وقت کی بات ہے۔ ایک مہاتما تھے۔ ثابت قدم اور عقلمند تھے۔ راستے میں ایک بار انہیں پڑا ہوا ایک سکہ ملا۔ مہاتمانے اسے جھک کر اٹھا لیا۔ لیکن وہ سوچنے لگے، خیرات میں مجھے کھانے تو مل جاتا ہے۔ پھر پھر میں نے یہ پیسہ اٹھا لیا۔ بہت سوچنے کے بعد مہاتمانے یہ فیصلہ کیا کہ اس پیسے کو صدقہ کر دوں گا۔ سب سے غریب آدمی کو۔ وقت گزرتا گیا، وہ غریب آدمی کی تلاش میں گاؤں گاؤں، شہر شہر گھومتے رہے۔ لیکن صدقہ دینے کے قابل کوئی مستحق انہیں نہیں ملا۔ مہاتما جی گھومتے گھومتے اس ریاست کے دارالحکومت میں ایک دن پہنچے۔ شاہراہ پر عقیدتمندوں سے صاحب سلامت کرتے رہے۔ پھر دیکھا شاہراہ پر بادشاہ کے ساتھ ساتھ آراستہ فوج چلی آرہی ہے۔ بادشاہ بھی مہاتما کو جانتا تھا، پہچانتا تھا، اپنے ہاتھی سے اتر کر اس نے مہاتما کو سلام کیا، بادشاہ کو آشیش دے کر مہاتمانے کہا اپنا ہاتھ آگے کرو اور انہوں نے اپنی جھولی میں سے ایک پیسہ نکال کر بادشاہ کے دائیں ہاتھ پر رکھ دیا۔ حیران پریشان بادشاہ نے مہاتما سے پوچھا مہاراج! یہ کیا ہے؟ مہاتمانے جواب دیا دیکھتے نہیں ہوتا بنے کا ایک پیسہ ہے، مجھے راستے میں پڑا ملا، میں نے یہ سوچا، اس پیسے کو سب سے غریب آدمی کو دوں گا۔ وہ تم ہو۔ بادشاہ نے سر جھکا کر دھیمی آواز میں مہاتما سے کہا

اقوال زریں

7- پہلے ہندوستانی خلائی مسافر راکیش شرما (۳-۱۱)

راپریل ۱۹۸۴ء) ہیں۔

8- چین کے سنگ نائنگ چوں شہر میں پانچ سورج دکھائی

دیتے ہیں۔

کیا آپ جانتے ہیں؟

1- بھارت کا پہلا صد فیصد کمپیوٹر تعلیم یافتہ گاؤں چراوٹم

(کیرالہ) ہے۔

2- زراف کی زبان کا رنگ نیلا ہوتا ہے۔ اس کی لمبائی

چالیس سینٹی میٹر ہوتی ہے۔

3- ہاتھی کی سونڈ میں ایک لاکھ پٹھے پائے جاتے ہیں۔

4- معدنی تیل کا کان کنی کرنے والی رنگ مشین دنیا کی

سب سے بڑی مشین ہے۔

5- دنیا کی سب سے تیز اڑنے والی چڑیا ہک ہک ہے جو

ایک سو نوے میل فی گھنٹہ کی رفتار سے اڑ سکتی ہے۔

6- جاپان کی زنگی چڑیا کا دل سب سے بڑا ہوتا ہے۔

7- برازیل کے گھنے جنگلوں میں ہرے رنگ کی کوئل پائی

جاتی ہے جس کے بدن سے خوشبو جھڑتی ہے۔

1- خدا کے بعد صرف والدین کا مقام ہے۔

2- سچ کا ایک لفظ جھوٹ کے ہزاروں الفاظ پر بھاری ہے۔

3- جو وقت کو برباد کرتا ہے، وقت اسی کو برباد کر دیتا ہے۔

4- تبلیغ کرنے سے نہیں بلکہ اس پر عمل کرنے سے انسان

ایمان والا بنتا ہے۔

5- جس کام کے لئے روح گواہی نہ دے وہ مت کرو، وہ

گناہ ہے، غیر نتیجہ بخش ہے۔

6- دوسروں کی بھلائی کرنا اپنی بھلائی کرنا ہے۔

7- دین دکھیوں کی خدمت کرنا ہی مذہب پر سچا عمل ہے۔

8- اچھی فطرت انسان کا سب سے بڑا سرمایہ ہے۔

زمین کی باتیں

1- چاند پر اترنے والے پہلے مسافر اور جہاز کا نام۔ نیل

آرم اسٹراٹگ ایڈون ہے، ۲۱ جولائی ۱۹۶۹ء پولو-۲، امریکہ۔

2- دنیا میں اٹلانٹک ایسی جگہ ہے جہاں سورج ہر ا دکھائی

دیتا ہے۔

3- سورج کی زمین سے دوری ۸۰۰۰۰۰۰۰۰ کلومیٹر ہے۔

4- کیرفا سٹ (ناروے) میں دو مہینے کا دن ہوتا ہے۔

5- زمین سے چاند کا فاصلہ ۲۳۸۶۰۰ میل ہے۔

6- زمین پر شمالی قطب اور جنوبی قطب میں ۶ مہینے کا دن

اور ۶ مہینے کی رات ہوتی ہے۔

جیسی محنت ویسا پھل

مرغا کہتا دن چڑھ آیا،
چاروں طرف اجالا چھایا
اٹھواٹھو کھیتوں میں جاؤ
دھرتی میں سونا اچھاو
جو کرتا ہے جتنا کام،
اتنا ہوتا اس کا نام

شہنازبانو

کلاس-6

سائنسی پہیلیاں

سوال- دنیا میں سب سے پہلے کاغذ کہاں بنا؟

جواب- چین۔

سوال- کون سی مچھلی آسمان میں اڑتی ہے؟

جواب- مرنائی۔

سوال- کس ندی کا پانی گرم ہوتا ہے؟

جواب- دریائے نیل۔

سوال- دنیا میں کون سا ملک ہے، جہاں ایک بھی دریا نہیں ہے؟

جواب- سعودی عرب۔

سوال- کون سی مچھلی ایک بار میں ۷۰ لاکھ انڈے دیتی ہے؟

جواب- کاڈ۔

کمپیوٹر

من کو کرتا متوالا
کمپیوٹر ہے بہت نرالا
یہ تو ایک لازمی حصہ ہے
کمپیوٹر کا یہ دماغ ہے
چلتے اس میں ہے پروگرام
سی پی یو ہے اس کا نام
کام سارے دکھلاتا ہے
اس میں کنجی بہت سمائی
ٹائپ اس میں کرنا بھائی
یہ چوہا ہے صرف نام کا
ماؤس ہوتا بہت کام کا
یہ کمانڈ کا آڈیٹر ہے
اس کے بس میں کمپیوٹر ہے
کویتا لیکھ لکھو جی بھر کے
فوراً چھاپ لو اسے پرنٹر سے
نو گیگ کا کہلاتا ٹیوٹر
بہت کام کا ہے کمپیوٹر

اللہ کی کتابیں

ثوبیہ خاتون

درجہ ہشتم

یوں تو اللہ تعالیٰ نے بہت سی کتابیں بھیجیں، چھوٹی بھی بڑی بھی۔ لیکن ان میں سے چار بڑی کتابیں بہت مشہور ہیں۔

۱۔ **توریت:** حضرت موسیٰ علیہ السلام لائے۔ یہ کتاب کچھ تو لوگوں کی غفلت سے اور کچھ خراب لوگوں کی شرارت سے ضائع ہو گئی۔

۲۔ **زبور:** یہ حضرت داؤد علیہ السلام لائے۔ آہستہ آہستہ نادانوں نے اسے بھی بھلا دیا۔ شیطان کے دھوکے میں آکر اس پر عمل کرنا چھوڑ دیا۔ بالآخر یہ کتاب بھی ضائع ہو گئی۔

۳۔ **انجیل:** حضرت عیسیٰ علیہ السلام پر نازل ہوئی۔ کچھ دنوں تک تو لوگ اس پر چلتے رہے پھر برے لوگوں نے اللہ کی باتوں کے ساتھ ساتھ اپنی باتیں بھی ملا دیں جس سے پوری کتاب گڈنڈ ہو گئی۔ اسکا بہت سا حصہ گم بھی کر دیا، اس طرح یہ کتاب بھی ضائع ہو گئی۔

۴۔ **قرآن:** اللہ میاں کی آخری کتاب ہے۔ یہ ہمارے پیارے نبی حضرت محمدؐ پر اتری۔ اس کی زبان عربی ہے۔ آج کل اصلی حالت میں اللہ کی یہی کتاب موجود ہے۔ اس کی حفاظت کی ذمہ داری اللہ نے اپنے ذمہ لی ہے۔ تمہارے گھر میں بھی قرآن ہے۔ تم تو تلاوت کرتے ہو گے۔ جلدی جلدی اسکا مطلب سمجھنا بھی سکھ لو تا کہ زندگی بسر کرنے کا طریقہ تمہیں معلوم ہو جائے اور پھر دنیا میں بھی عزت ملے اور آخرت میں اللہ میاں خوش ہو کر تمہیں جنت دیں۔ آمین

بچے کو پہلا لفظ اللہ

سکھانے پر اجر

اچھی ماں اگر یہ اپنے بچے کی اچھی تربیت کرتی ہے، اس کو اللہ اللہ کا لفظ سکھاتی ہے تو حدیث پاک کا مفہوم ہے کہ جو بچہ اپنی زندگی میں سب سے پہلے اپنی زبان سے اللہ کا لفظ نکالتا ہے، تو اللہ تعالیٰ ماں باپ کے پچھلے گناہوں کو معاف فرمادیتے ہیں۔ اب یہ کتنا آسان کام ہے جب بچے کو اٹھایا اللہ، اللہ کا لفظ کہا۔ آج ہماری بہو بیٹیاں بچے کے سامنے می کا لفظ کہیں گی اور کوئی زیادہ ماڈرن ہوگی تو کہے گی Twinkle 2 little star۔

اسے مسئلے کا پتا نہیں کہ اگر ہم اس بچے کو بیٹا ہو یا بیٹی اس کے سامنے اللہ اللہ کا لفظ پڑھا کریں اور اس بچے نے سب سے پہلے اپنی زبان سے اللہ لفظ بولا تو اللہ تعالیٰ ہمارے گناہوں کو معاف کر دیں گے۔

اگر اس عورت نے بچے کو قرآن پڑھانے کے لئے بھیجا حتیٰ کہ وہ بچہ قرآن پاک کا ناظرہ مکمل کرے گا اللہ تعالیٰ اس کے ماں باپ کے گناہوں کو معاف فرمادیں گے۔

عربیہ عزیز

سابق طالبہ درجہ ہشتمی دوم

اسلام کا پہلا مہینہ محرم الحرام اور اس کی فضیلتیں

- ۶- حضرت یوسف علیہ السلام کو جیل سے رہائی ہوئی۔
- ۷- حضرت ایوب علیہ السلام کو صحت ملی۔
- ۸- حضرت یعقوب علیہ السلام کی بینائی واپس آئی۔
- ۹- نواسہ رسولؐ سیدنا حسین رضی اللہ عنہ کو انکے ۷۲ ساتھیوں کے ساتھ شہادت اسی دن ملی۔
- ۱۰- قیامت اسی دن آئے گی۔

اسی طرح اور بہت سی اہم باتیں پیش آئیں۔ پیارے آقا نے فرمایا جو شخص اس دن اپنے گھر والوں پر رزق کی کسادگی کرے گا (یعنی اچھے سے اچھا حیثیت کے مطابق کھانا کھلائے گا) اللہ اس کی روزی میں سال بھر برکت فرمائے گا۔

لیکن اس کے ساتھ ایک المیہ یہ ہے کہ آج امت میں اس دن تمام ایسی رسمیں چل پڑی ہیں جس کا تعلق اسلام سے کوئی نہیں ہے۔ اس دن غیر شرعی اور غلط رسمیں گڑھ لی گئی ہیں اور مستنون و کرنے والے کاموں کو بھلا دیا گیا ہے۔

محرم میں کرنے والے کام۔

۱- ۹، ۱۰، ۱۱، ۱۲ محرم کا روزہ رکھنا۔

۲- ذکر و ازکار، دعائیں کرنا۔

۳- عاشورہ کے دن گھر والوں کے لئے اچھے کھانے کا

انتظام کرنا۔

۴- شہدائے کربلا کے حق میں دعا کرنا۔

۵- صحابہ و اہل بیت کی زندگی کے حالات پڑھنا اور صحابہ و

اہل بیت کے طریقے پر چلنے کی نیت کرنا۔

۶- صحابہ و اہل بیت والے اعمال کرنا، ان کی محبت دلوں

میں بسانا۔

اللہ تعالیٰ ہم سب کو سچا حسینی بنائے، غیر شرعی رسومات سے

بچائے، محرم کی برکتوں سے مالا مال فرمائیے آمین۔

محرم اسلام کا پہلا مہینہ ہے۔ اسلامی سال کا آغاز اسی ماہ سے ہوتا ہے۔ حدیث شریف میں اس ماہ کی بڑی فضیلت آئی ہے۔ عربوں میں چار مہینوں کا بڑا احترام تھا ان میں سے ایک محرم بھی تھا۔ اس مہینے میں عرب لوگ لڑائیاں بند کر دیتے تھے۔

احادیث نبویؐ اور اسلامی تاریخ کے حوالے سے یہ بات ثابت ہے کہ محرم کا مہینہ اور خاص کر یوم عاشورہ (دسویں محرم) کا دن بڑی فضیلت والا دن ہے۔ بہت سے اہم واقعات اسی دن پیش آئے۔

چنانچہ پیارے آقا صلی اللہ علیہ وسلم جب مدینہ تشریف لائے تو دیکھا کہ یہودی عاشورہ کے دن روزہ رکھتے ہیں کیونکہ موسیٰ علیہ السلام کو فرعون سے اسی دن نجات ملی تھی۔ فرعون اپنے لشکر کے ساتھ دریائے نیل میں ڈوب گیا موسیٰ علیہ السلام اور بنی اسرائیل سلامتی کے ساتھ اسی دریا سے پار ہو گئے تھے۔

پیارے نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا مسلمان زیادہ حق دار ہے کہ اس دن روزہ رکھے۔ آپ نے مسلمانوں کو حکم دیا کہ ایک دن آگے یا پیچھے ملا کر عاشورہ کا روزہ رکھیں۔

رمضان کے روزے رکھنے سے قبل عاشورہ کا روزہ فرض تھا لیکن رمضان کے روزے آنے کے بعد عاشورہ کا روزہ فرض نہیں رہا۔ لیکن ثواب کے اعتبار سے بہت بڑا اجر ہے: پیارے نبی نے فرمایا جس نے عاشورہ کا روزہ رکھا اس کے ایک سال کے گناہ معاف ہو جاتے ہیں۔ عاشورہ کے دن کے کچھ خاص واقعات۔

۱- حضرت آدم علیہ السلام کی دعا اسی دن قبول ہوئی۔

۲- حضرت نوح علیہ السلام کے وقت طوفان اسی دن تھا۔

اور کشتی جو دی پہاڑ پر ٹھہری۔

۳- حضرت موسیٰ علیہ السلام کو نجات ملی۔

۴- حضرت یونس علیہ السلام مچھلی کے پیٹ سے نکلے۔

۵- حضرت ابراہیم علیہ السلام پر آگ ٹھنڈی ہوئی۔

دنیا کی عظیم شخصیت کی عظیم باتیں

نبی کریم کی پیاری باتیں

من تشاء بانو
درجہ نشی اول

۱۔ راستی: سچائی پر قائم رہو، سچائی میں نجات ہے۔
۲۔ امانت داری: جس شخص میں امانت داری نہیں اس میں ایمان نہیں۔

۳۔ پرہیزگاری: خدا کے نزدیک باعزت وہ ہے جو سب سے زیادہ پرہیزگار ہے۔

۴۔ سادگی: عیش پسندی سے بچو، اللہ کے بندے عیش پسند نہیں ہوتے۔

۵۔ توکل: صرف خدا پر بھروسہ کرو، لیکن اپنی کوشش اور محنت کو نہ چھوڑو۔

۶۔ رحم دلی: تم زمین والوں پر رحم کرو آسمان والا تم پر رحم کرے گا۔

۷۔ اعانت: اپنے بھائیوں کی مدد کرنا ایک ماہ کسی مسجد میں محکف ہونے سے افضل ہے۔

۸۔ صلح: صلح کرنا نماز اور صدقہ سے بہتر ہے۔

۹۔ عفو و حلم: تم میں زیادہ وہ قوی ہے جو غصہ میں اپنے آپ کو قابو میں رکھے، اور قدرت ہوتے ہوئے بدلہ لینے سے درگزر کرے۔

۱۰۔ تلاش: خدا کی تلاش میں بھٹکتے پھرنے کی کوئی ضرورت نہیں، دیکھنے کی نظر سے دیکھو خدا شہرگ سے زیادہ قریب تم کو ملے گا۔

۱۱۔ بزرگی: خدا کے بندوں میں وہی شخص بزرگ ہے جو خدا کو محبت کی نظر سے دیکھتا ہے۔

۱۲۔ تقویت ایمان: جس طرح زبان بال سے پاک ہے، اسی طرح ایمان کو بے ایمانی سے پاک رکھنا چاہئے۔

پیارے نبی کی پیاری باتیں

۱۔ حضرت ابو ہریرہؓ سے روایت ہے کہ حضرت محمدؐ نے فرمایا کہ جو عورت اللہ اور آخرت پر ایمان لائی ہو اس کو جائز نہیں کہ بغیر محرم کے ایک رات دن کی دوری طے کرے۔ (بخاری، مسلم)

۲۔ حضرت ابن عباسؓ کہتے ہیں کہ حضرت محمدؐ نے ارشاد فرمایا کہ مرد کسی عورت کے پاس تنہا نہ ہو، اس کے ساتھ محرم ضرور ہو اور بغیر محرم کے سفر نہ کرے۔ ایک صحابیؓ نے کہا اے اللہ کے رسول! میری عورت حج کو چلی گئی اور میرا نام جنگ میں جانے کے لئے لکھا گیا ہے۔ آپؐ نے فرمایا کہ تم اپنی بیوی کے ساتھ جا کر حج کرو۔ (بخاری، مسلم)

۳۔ حضرت امامہؓ کہتے ہیں کہ حضرت محمدؐ نے ارشاد فرمایا 'قرآن مجید پڑھا کرو یہ قیامت کے دن اپنے پڑھنے والوں کی سفارش کرے گا۔' (مسلم)

۴۔ حضرت نو اس بن سمعانؓ کہتے ہیں کہ حضرت محمدؐ ارشاد فرمایا کہ: قرآن اور وہ لوگ جو دنیا میں اس پر عمل کرتے تھے، قیامت کے دن حاضر کئے جائیں گے، سورہ بقرہ اور آل عمران آگے آگے ہونگے۔ یہ دونوں اپنے پڑھنے والے کے لئے سفارش کریں گی۔ (مسلم)

۵۔ حضرت عثمان بن عفانؓ کہتے ہیں کہ حضرت محمدؐ نے ارشاد فرمایا کہ تم میں سب سے بہتر آدمی وہ ہے جو قرآن پڑھے اور پڑھائے۔ (مسلم)

۶۔ حضرت عائشہؓ کہتی ہیں کہ حضرت محمدؐ نے کہا جو آدمی قرآن کو سمجھ کر پڑھتا ہے وہ بزرگ فرشتوں کے ساتھ ہوگا اور جو انک انک کر مشکل سے پڑھتا ہے اس کے لئے دو گنا ثواب ہے۔ (بخاری، مسلم)

۷۔ حضرت عمر بن خطابؓ کہتے ہیں کہ حضرت محمدؐ نے کہا کہ اللہ اس کتاب کی وجہ سے کچھ لوگوں کے درجے بلند کرتا ہے اور کچھ لوگوں کو بے عزت کرتا ہے۔ (مسلم)

پیارے نبی کی پیاری باتیں

☆ پاک صاف رہو، پاکی اور صفائی آدھا ایمان ہے۔

☆ علم حاصل کرنا فرض ہے۔

☆ مومن کو اپنے پڑوسی کی عزت کرنی چاہئے۔

☆ تم میں سے بہتر وہ ہے جو قرآن سیکھے اور سکھائے۔

☆ سچ بولو چاہے اپنا ہی نقصان ہو۔

☆ جو اپنے لئے پسند کرو وہی دوسروں کے لئے بھی پسند

کرو۔

☆ اچھا وہی ہے جسے اس کے ساتھی اچھا کہیں۔

☆ برے ساتھی سے تمہارا ہونا بہتر ہے۔

☆ جو بڑوں کا ادب، چھوٹوں سے پیار نہ کرے وہ ہم

میں سے نہیں۔

☆ سلام کیا کرو، سلام کرنے سے محبت بڑھتی ہے۔

☆ معاف کر دینا بڑی بہادری ہے۔

☆ اللہ کی خوشی ماں باپ کی خوشی میں ہے۔

☆ اللہ کی ناراضگی ماں باپ کی ناراضگی میں ہے۔

☆ نیکی کا راستہ بتانے والا نیکی کرنے والے کی طرح ہے۔

☆ جس نے خاموشی اختیار کی وہ کامیاب ہا۔

☆ مالدار کی دل کے لالچ سے پاک ہونے کا نام ہے۔

☆ لوگوں میں سب سے بہتر وہ ہے جو لوگوں کو نفع پہنچانے

والا ہو۔

☆ دینے والا لینے والے سے بہتر ہے۔

محمد غفران

درجہ ہفتم

تاج محل

۱- تاج محل دنیا کے سات عجوبوں میں سے ایک ہے۔

۲- تاج محل شاہ جہاں نے اپنی بیگم ممتاز محل کی یاد میں بنوایا تھا۔

۳- تاج محل ۱۶۳۱ء میں بننا شروع ہوا تھا۔

۴- تاج محل کو بنانے میں تقریباً ۲۰ ہزار مزدوروں نے کام کیا تھا۔

۵- تاج محل آگرہ میں جمنا ندی کے کنارے بنا ہوا ہے۔

۶- تاج محل سنگ مرمر کے پتھروں سے بنا ہوا ہے۔

۷- تاج محل کو دیکھنے پوری دنیا سے تقریباً ۲۰ سے ۳۰ لاکھ

لوگ پورے سال میں آتے ہیں۔

مشتری

۱- مشتری نظام شمسی کا سب سے بڑا سیارہ ہے۔

۲- مشتری سورج کا پانچواں سیارہ ہے۔

۳- مشتری اتنا بڑا سیارہ ہے کہ ۱۰۰۰ زمین اس میں سما سکتی ہیں۔

۴- مشتری کے ۲۸ سیارچے ہیں۔

۵- مشتری کا مادہ باقی سب سیاروں کے مادہ کے جوڑے

بھی زیادہ ہے۔

کیا آپ جانتے ہیں:

۱- ایک چوہا اونٹ سے بھی زیادہ دن بغیر پانی کے زندہ رہ سکتا

ہے۔

۲- ایک گائے اپنی پوری زندگی میں تقریباً ۲۰۰۰۰۰۰ گلاس دودھ

دیتی ہے۔

۳- پالتو بلی اپنی زندگی کا ستر فیصد وقت سونے میں نکالتی ہے۔

شمو بانو

درجہ ہفتم

نام- پنکی

درجہ- 5

کنجوسی سے جان گنی

مکھی چوس گیدڑ

ایک شکاری شکار کی تلاش میں آیا۔ اس نے ایک سور کو دیکھا اور نشانہ لگا کر تیر چھوڑا۔ تیر جنگلی سور کی کمر میں لگا اور سیدھا جسم میں گھسا۔ غصے میں آ کر سور شکاری کی طرف دوڑا اور اس نے کھج سے اپنے نوک دار دانت شکاری کے پیٹ میں گھونپ دیے۔ شکار اور شکاری دونوں مر گئے۔ تبھی وہاں مکھی چوس گیدڑ آ گیا۔ وہ خوشی سے اچھل پڑا۔ شکاری اور سور کے گوشت کو کم سے کم دو ماہ چلانا ہے۔ اس نے حساب لگایا۔ 'روز تھوڑا تھوڑا کھاؤں گا' وہ بولا۔ تبھی اس کی نظر پاس ہی پڑے کمان پر پڑی۔ اس نے کمان کو سونگھا۔ کمان کی ڈور کونوں پر چڑے کی پٹی سے لکڑی پر بندھی تھی۔ اس نے سوچا۔ 'آج تو اس کی چڑے کی پٹی کو کھا کر کام چلاؤں گا۔ گوشت خرچ نہیں کروں گا۔ پورا بچالوں گا' ایسا سوچ کر وہ کمان کا کونا منہ میں ڈال کر پٹی کاٹنے لگا۔ جوں ہی پٹی کٹی اور ڈور چھوٹی اور کمان کی لکڑی چٹ سے سیدھی ہو گئی۔ دُش کا کونا چٹاخ سے گیدڑ کے تالو میں لگا اور اسے چیرتا ہوا اس کی ناک توڑ کر باہر نکلا۔ مکھی چوس گیدڑ وہیں مر گیا۔

سبق- زیادہ کنجوسی کا نتیجہ اچھا نہیں ہوتا۔

☆☆☆☆☆

جنگل میں ایک گیدڑ تھا۔ وہ بڑا کجوس تھا۔ کیونکہ وہ ایک جنگلی مخلوق تھا۔ اس لئے ہم روپے پیسے کی بات نہیں کر رہے ہیں۔ وہ کنجوسی اپنے شکار میں کرتا تھا۔ جتنے شکار میں دوسرے گیدڑ ایک دن کام چلاتے، وہ اتنے ہی شکار کو سات دن تک کھینچتا۔ جیسے اس نے ایک خرگوش کا شکار کیا پہلے دن وہ ایک کان کھاتا۔ باقی بچا کر رکھتا دوسرے دن دوسرا کان کھاتا، ٹھیک ویسے ہی جیسے کنجوس آدمی پیسہ گھس گھس کر خرچ کرتا ہے۔ گیدڑ اپنے پیٹ کی کنجوسی کرتا۔ اس چکر میں وہ اکثر بھوکا رہتا اور کمزور بھی ہو جاتا۔ ایک بار اسے ایک مرا ہوا بارہ سنگا ہرن ملا۔ وہ اسے کھینچ کر اپنی کھوہ میں لے گیا۔ اس نے پہلے ہرن کے سینگ کھانے کا فیصلہ کیا۔ تاکہ گوشت بچا رہے۔ کئی دنوں تک وہ صرف سینگ ہی چباتا رہا اسی درمیان ہرن کا گوشت سڑ گیا اور وہ صرف گدھوں کے کھانے لائق رہ گیا۔ اس طرح گیدڑ اکثر اسکا مضحکہ اڑایا جاتا، جب وہ باہر نکلتا تو دوسرے جانور اس کا مریل سا جسم دیکھتے اور کہتے 'وہ دیکھو مکھی چوس جا رہا ہے۔ پر وہ پرواہ نہ کرتا۔ کنجوسوں میں یہ عادت ہوتی ہی ہے۔ کنجوسوں کی اپنے گھر میں بھی کھلی اڑتی ہے۔ پر وہ اسے ان سنا کر دیتے ہیں۔ اسی جنگل میں ایک دن

مسواک کی اہمیت

لئے مسواک کرنے کی رائے دی گئی۔ جس سے اس شخص کو فائدہ پہنچا۔

دانتوں کی بیماری اور مسوڑھوں کے پس سے آنکھ، ناک، کان، دل، دماغ سب متاثر ہوتے ہیں۔ اور ٹنسل کے مریضوں کو بھی اس سے بہت فائدہ پہنچتا ہے۔

مسواک ہمیں کئی درختوں سے ملتی ہے۔ جیسے کیکر، نیم، اور پیلو سے بھی۔ حضرت علیؓ کا قول ہے کہ مسواک سے دماغ تیز ہوتا ہے۔

مسواک کے اندر فاسفورس ہوتا ہے جس زمین میں کیلشیم اور پوٹاشیم زیادہ ہوتا ہے وہاں پیلو کے درخت پائے جاتے ہیں اور چونکہ قبرستان کی مٹی میں کیلشیم اور فاسفورس زیادہ ہوتا ہے یہی وجہ ہے کہ پیلو کے درخت یہاں زیادہ پائے جاتے ہیں۔ اور یہ بات بھی سامنے آئی ہے کہ اگر پیلو کی مسواک کو تازہ اور نرم حالت میں چبایا جائے تو اس سے ایک مادہ نکلتا ہے جو جراثیموں کی پیدائش کو روکتا ہے۔

صبار شید

درجہ گیارہ بی

نبی کریمؐ کا معمول تھا کہ آپ مسواک کثرت سے کرتے اور دوسروں کو اسکے کرنے کی تاکید بھی فرماتے اور آپکا آخری عمل بھی مسواک کرنا ہی تھا۔ آج ریسرچ سے یہ ثابت ہوا ہے کہ انسان جو کچھ کھاتا ہے وہ منہ میں پلازما بناتی ہے۔ جو کلی کرنے سے بھی صاف نہیں ہوتا۔ دن کے وقت جو حرکتیں ہم کرتے ہیں جیسے بولنا، کھانا، پانی پینا وغیرہ یہ سب حرکتیں پلازما کو اپنا کام کرنے کا موقع نہیں دیتیں اور رات کے وقت جب منہ بند رہتا ہے تو وہ دانتوں کو گلانے لگتا ہے۔ اسی لئے ہمارے دانت زیادہ تر رات کو خراب ہوتے ہیں۔

گروناک کے متعلق مشہور ہے کہ وہ مسواک ہاتھ میں رکھتے تھے اور کہا کرتے تھے کہ یا تو یہ لکڑی لے لو یا بیماری لے لو۔ ویسے حکیم اقبالؒ اخبار جہاں میں لکھتے ہیں کہ ان کے پاس ایک مریض آیا جس کے دل کی جھلیوں میں پس بھرا ہوا تھا اسکا آپریشن بھی کیا گیا لیکن دوبارہ وہ مرض لگ گیا۔ تو جب اقبال صاحب نے دیکھا تو پتہ چلا کہ اس شخص کے مسوڑھوں میں پس بھرا ہوا تھا۔ جو دل کو نقصان پہنچا رہا تھا۔ پھر دانتوں کے علاج کے

کیا آپ جانتے ہیں بجلی کیوں گرتی ہے؟

ڈھونگی بلا

کسی وقت ایک درخت کے نیچے ایک تیر رہتا تھا۔ تو وہ ایک دن چلنے کے لئے جنگل میں چلا گیا۔ اسی وقت ایک خرگوش اس درخت کے پاس آیا اور وہیں اپنا گھونسلا بنا کر رہنے لگا۔ جب تیر چک کر واپس لوٹتا ہے تو خرگوش کو دیکھ کر اس نے کہا تم یہاں کیا کر رہے ہو۔ خرگوش نے جواب دیا میں اس درخت کے نیچے گھونسلا بنا کر رہتا ہوں۔ تیر نے کہا میں یہاں رہتا تھا اور یہ میری جگہ ہے۔ ان دونوں میں بات چیت ہوئی اور دونوں لڑنے لگے۔ لڑتے لڑتے دونوں بلے کے پاس پہنچے تو بلا اونچے مقام پر بیٹھ کر مالا چپ رہا تھا۔ ان دونوں نے بلے سے کہا تو بلے نے جواب دیا مجھے سنائی نہیں دیتا۔ پاس میں آ کر کہو۔ جب خرگوش اور تیر اس کے پاس پہنچے تو اس نے فوراً اپنے دونوں اگلے پاؤں ایک تیر کی پیٹھ پر رکھا اور دوسرے خرگوش کی پیٹھ پر۔ تیر کا ایک پر اس نے توڑ دیا جس سے تیر اڑ نہ پا رہا تھا۔ اور خرگوش کو مار کر کھا گیا۔ تیر اپنی جان بچانے کے لیے بھاگا مگر بلے نے اسے بھی دوڑا کر مار کر کھا لیا۔

سلونی راوت

درجہ 11

سائنسدانوں کے مطابق آسمان پر چھائے ہوئے بادلوں میں برقی قوت ہر وقت موجود رہتی ہے۔ ان بادلوں کے اثر سے زمین پر موجود دیگر چیزوں مثلاً عمارت یا درختوں پر مختلف قسم کی برقی قوت پیدا ہو جاتی ہے۔ اب یہ دو مخالف قوتیں ایک دوسرے سے ملنے کے لئے تیار ہو جاتی ہیں۔ مگر ان دو برقی قوتوں کے درمیان کی ہوا ایک دوسرے کو علاحدہ رکھتی ہے۔ اور ملنے نہیں دیتی۔ مگر جس وقت بادلوں کی قوت میں شدت پیدا ہو جاتی ہے تو وہ زمین یا زمین کی دوسری چیزوں کی طرف لپکتی ہے اور زمین کے اندر جذب ہو جاتی ہے۔ جس جگہ پر بجلی گرتی ہے وہ جگہ تباہ و برباد ہو جاتی ہے۔ ایسی صورت کو بجلی گرنا کہتے ہیں۔

بجلی گرنے کے قہر سے محفوظ رہنے کے لئے قرآن کریم کی مندرجہ ذیل آیت پڑھی جاتی ہے۔

يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ

محمد حسان

درجہ ششم

ننھی چیونٹی

ننھی چیونٹی کن کن بن کر

اپنا گھر بھر لیتی ہے

پھول پھول پر ڈول ڈول کر

مدھو مکھی رس لیتی ہے۔

روزانہ سورج جاگ جاگ کر

ہم کو دن دے جاتا ہے

رات رات بھر چل کر چندا

سب کو راہ دکھاتا ہے

جو چلتے ہیں، شرم کرتے ہیں

وہی بڑے بن جاتے ہیں۔

محنت کے بل پر دنیا میں

نام امر کر جاتے ہیں۔

کلپنا موریہ

درجہ دوم

قسم کا غلط استعمال گناہ ہے

اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں اے لوگو! اللہ کے نام کو اپنی

قسمیں کھانے کا نشانہ نہ بناؤ۔

قسم کھانا اصل میں ایک طرح کی گواہی دینا ہے کسی

بات پر خدا کی قسم کھانے کا مطلب یہ ہوا کہ ہم جو یہ بات

کہہ رہے ہیں اس پر اللہ کو گواہ بنا رہے ہیں۔ اللہ کو کسی

معاملہ میں گواہ بنانا کوئی ہنسی کھیل نہیں ہے اس لئے سوچ

سمجھ کر قسم کھانی چاہئے۔ بات بات پر قسم کھانا بری بات

ہے۔ اللہ ایسے آدمی سے ناخوش ہوتے ہیں۔ زیادہ

قسمیں کھانے والا آدمی اعتبار کھودیتا ہے۔ قرآن نے

ایسے آدمی کو ذلیل کہا ہے اور یہ بھی بتا دیا کہ ایسے کی بات

کا اعتبار نہ کرو۔

جھوٹی قسمیں کھا کر آپس میں دھوکہ دینے کا ذریعہ

بنانا اور قسموں کے ذریعہ غلط باتوں کا یقین دلانا جہنم میں

لے جانے والا عمل ہے۔

ہم سب کو اس بری عادت سے بچنا چاہئے۔

اللہ تعالیٰ ہم سب کو نیک اور اچھا انسان بنائے۔

آمین

عظمیٰ بانو

درجہ ۸

استاد کا ادب

استاد کی قدر دانی علم میں ترقی کا باعث ہوتی ہے۔ استاد کا درجہ والدین کی طرح بڑا ہوتا ہے۔ استاد ہمیں پڑھنا لکھنا سکھا کر ہمیں اچھا انسان اور اچھا شہری بناتے ہیں۔ استاد ہمارے روحانی باپ ہوتے ہیں جو ہماری سوچ و فکر کو صالح بنا کر ہم کو سنوارتے ہیں۔

استاد کا ادب کرنا لازم ہے۔ استاد کی بات ماننا، ان کی اطاعت کرنا، جو بات معلوم نہ ہو اس کو استاد سے معلوم کرنا، ہمارے علم و عمل میں ترقی کا ذریعہ ہے۔ استاد کے سامنے تیز بولنا، شور مچانا، انکا دیا ہوا کام نہ کرنا، بے ادبی اور بدتہذیبی ہے۔ اس سے ہمارا اپنا ہی نقصان ہوگا۔ ہماری علمی ترقی رک جائے گی۔

یہ بات تجربے سے ثابت ہے کہ پڑھنے کے زمانہ میں جن بچوں نے استاد کا ادب کیا ان کی بات مانی ہو کامیاب اور خوشحال ہوئے۔ ترقی کرتے گئے اور جن لوگوں نے استاد کی بے ادبی کی انکو ناراض کیا بات نہیں مانی وہ کہیں کے نہیں رہے۔ نہ کچھ بن پائے۔

اس لئے پیارے بچو! ہم کو استاد کی شکل میں جو اللہ کی نعمت ملی ہے اسکی قدر کریں ان سے علم و ادب، تعلیم و تربیت حاصل کر کے دنیا و آخرت میں کامیاب ہوں۔

نازیہ بانو

درجہ ۸

دشمن نیائے

ایک بار دس آدمی ہری دوار کے پاس کے گاؤں سے چنڈی دیوی جانے کے لیے ہری دوار پہنچے۔ گنگا انہوں نے ایک ساتھ تیر کر پار کی۔ جب اُس پار پہنچے تو یہ جاننے کے لیے کہ سب کے سب پار آگئے ان لوگوں نے گنگا شروع کیا۔ ایک نے گنگا پھر دوسرے نے پھر تیسرے نے۔ ہر بار گنگے میں نو ہی نکلتے۔ پھر دسوں نے باری باری گنگا اور گنگتی نو ہی نکلی۔ وجہ یہ تھی کہ جو بھی آدمی گنگتا تھا وہ باقی نو لوگوں کو تو گنگتا پر اپنے آپ کو بھول جاتا۔ تھوڑی دیر بعد ان لوگوں نے یہ مان لیا کہ ایک آدمی گنگا میں ڈوب کر مر گیا۔ سب بہت دکھی ہو گئے اور وہیں بیٹھ کر رونے پینے لگے۔ کچھ دیر بعد ایک سادھو وہاں سے گزرا۔ اتنے سارے لوگوں کو روتا پینتا دیکھ وہ ان لوگوں کے پاس گیا۔ پاس پہنچ کر لوگوں سے رونے اور دکھی ہونے کا سبب پوچھا۔ ان میں سے ایک نے کہا کہ ہم لوگ دس آدمی چنڈی دیوی کے درشن کرنے گاؤں سے چلے تھے اور گنگا پار کرتے وقت ہم میں سے ایک ڈوب گیا۔ یہ کہہ کر وہ سب پھر رونے لگے۔ سادھو نے من ہی من گنگا تو وہ دس تھے۔ اس نے ان سے کہا کہ ایک بار پھر سے گنو۔ ان میں سے ایک نے کھڑے ہو کر نو تک گنگا۔ اس پر سادھو نے کا کہ تم ہی دسویں آدمی ہو۔ یہ جان کر سب خوش ہو گئے اور سادھو کا شکر یہ ادا کر چنڈی دیوی کے درشن کرنے آگے چل دیے۔ حماقت اور جہالت ہی تمام دکھوں کی جڑ ہے۔

عبد الوہاب

درجہ 8

آگ بوٹر آندھی پانی
تمام جمیل مسکائیں گے
بڑھے چلیں گے بڑھے چلیں گے
اپنے پتھ پر بڑھے چلیں گے۔

صبح سورج کہاں سے آتا

صبح کہاں سے آتا سورج
کہاں شام کو جاتا سورج
گھر ہے اس کا جہاں کہاں
یہ اپنی رات بتاتا ہے
امرت برساتا کرنوں سے
چاند کہاں سے آتا ہے
کیسے روزانہ تاروں کے دل
سے امبر بھر جاتا ہے
اتنا سندر اندر دھنش ہے
کیسے بنتا بنتا ہے
کسی طرح مجھ کو ایسا
کیا دھنش نہیں مل سکتا ہے
آجاتے ہیں کہاں کہاں سے
پہاڑ جیسے یہ بادل
برساتا آسمان کہاں سے
رم، جم، رم، جم اتنا پانی
آتی ہے یہ ندی کہاں سے
چلی کہاں کو جاتی ہے
کون پری ڈالی ڈالی پر
نوتن کے پھول سجاتی ہے۔

کلپنا موریہ

درجہ-11

بچوں چلو مدرسے

وقت ہوا اب چلو مدرسے
نکلو گھر سے نکلو گھر سے
لکھنا سیکھو پڑھنا سیکھو
دن دن آگے پڑھنا سیکھو
برے کام کے پاس نہ جاؤ
سیدھا راستہ چلنا سیکھو
سب سے میل محبت کرنا سیکھو
سب کے دل میں بسنا سیکھو
نکلو گھر سے نکلو گھر سے
وقت ہوا اب چلو مدرسے

افروز بانو

درجہ 7

تم کیا بننا چاہو گے

نخے مننے بھولے بچو
تم کیا بننا چاہو گے
دیر بنیں گے دیر بنیں گے
ساگر سے گبیہر بنیں گے
بھارت ماں کی رکشا کے ہت
تن من سے بلی جائیں گے
دن دن دن جب چلے گولیاں
سینے پر ہنس ہنس کھائیں گے
اڑے رہیں گے کھڑے رہیں گے
سینہ تانے ڈٹے رہیں گے
پہاڑ بھی گر پڑے راہ میں
ٹھوکر سے ٹھکرائیں گے

مفید اور کارآمد باتیں

خیرات مال میں اضافہ کرتی ہے۔

احسان دشمن کو بھی زیر کر لیتا ہے

حقیقت یقین کی ماں ہے

انسان کا سب سے بڑا دشمن اس کا اپنا نفس ہے۔

خاموشی فضول گوئی سے بہتر ہے۔

دل کی صفائی سب سے خوبصورتی ہے۔

دنیا ایک بینک ہے۔ تم کو اس میں سے وہی چیز ملے گی جو تم

نے جمع کی ہوگی۔

امن چاہتے ہو تو اپنے کان اور آنکھ استعمال کرو لیکن زبان

بند رکھو۔

بیماری گھوڑے کی رفتار سے آتی ہے اور چیونٹی کی رفتار سے

جاتی ہے۔

سچ بولنے والا دشمن جھوٹ بولنے والے دوست سے

اچھا ہے۔

دوسروں کی غلطیاں بھول جاؤ اور اپنی ایک نہ بھولو۔

زبان اگر چہ تلوار نہیں ہے لیکن تلوار سے زیادہ تیز ہے۔

جو شخص یہ چاہتا ہے کہ اس کی زندگی آرام سے گزرے

اسے چاہئے وہ اپنے دل سے لالچ نکال دے۔

خدا کے بندوں میں وہی شخص پسندیدہ ہے جو دوسروں

کو محبت کی نظر سے دیکھتا ہے۔

اقوال زریں

ہر آدمی کو وہی ملے گا جس کی وہ نیت کرے گا (بخاری)

جو آدمی خود کو عالم ظاہر کرے وہ جاہل ہے۔ (حضرت عمر فاروق)

تجربہ سب سے اچھا استاد ہے۔ (حضرت سفیان ثوری)

مصیبت کی جڑ انسان کی بات چیت ہے۔ (حضرت ابو بکر)

اچھی بات دوسروں کو بتانا ہی خیرات ہے۔ (بخاری)

ایماندار تاجر کا درجہ عابد سے بلند ہے۔ (امام شافعی)

خود غرضی میں انسان پاگل ہو جاتا ہے۔ (پریم چند)

بزرگ بننے سے پہلے علم حاصل کر لو۔ (حضرت عمر)

انسان سب سے بڑا عاشق اپنی ذات کا ہوتا ہے۔ (امام غزالی)

زکوٰۃ نکالنے سے مال کم نہیں ہوتا۔ (حدیث)

عالم کی سزا دل کا مرجانا ہے۔ (حسن بصری)

دل کا مرنا آخرت کے عمل سے دنیا چاہنا (حسن بصری)

حضرت عائشہؓ سے ایک شخص نے پوچھا: میں اپنے کو نیک کب

سمجھوں؟ انہوں نے جواب دیا: جب تجھ کو اپنے برے ہونے

کا گمان ہو۔ آدمی نے دوبارہ پوچھا: میں اپنے کو برا کب سمجھوں؟

جواب دیا: جب تو اپنے کو نیک سمجھنے لگے۔